सरल संस्कृत शिक्षा

(भाग-3)

-लेखक-
मोहनलाल शास्त्री, काव्यतीर्थ
जवाहरगंज, जबलपुर (म.प्र.)

Scanned by CamScanner

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 414
ISBN 978-93-84003-02-9

सरल संस्कृत शिक्षा

(भाग-3)

-लेखक-
मोहनलाल शास्त्री, काव्यतीर्थ
जवाहरगंज, जबलपुर (म.प्र.)

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 80वें जन्मजयंती महोत्सव वर्ष
(अमृत महोत्सव-2013-2014) के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	फाल्गुन कृ. चतुर्दशी, 28 फरवरी 2014	24/-रु.

भगवान वासुपूज्य जन्मजयंती

Scanned by CamScanner

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादक :-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

-: प्रबंध सम्पादक :-

जीवन प्रकाश जैन

(सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन)

विशारद कोर्स—व्याकरण विषय की पाठ्यक्रम पुस्तक

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती दिगम्बर जैन शिक्षा केन्द्र

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

Scanned by CamScanner

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति—अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**—गोयल, **नाम**—कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि—सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैज़ाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

Scanned by CamScanner

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

-कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है-कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism.com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जी तीर्थ पर "आचार्य श्री शांतिसागर धाम" का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

Scanned by CamScanner

गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती दिगम्बर जैन शिक्षा केन्द्र

-जीवन प्रकाश जैन, समन्वयक

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि वर्तमान बीसवी-इक्कीसवीं शताब्दी की सर्व प्राचीन दीक्षित एवं ज्ञान के क्षेत्र में जिन्हें जैनधर्म का जीवन्त इन्साइक्लोपीडिया कहा जा सकता है, ऐसी परमपूज्य, 60 वर्षीय दीक्षित-जीवन की महातपस्विनी साध्वी युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के नाम सतीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय-मुरादाबाद एवं दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के संयुक्त तत्त्वावधान में **"गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती दिगम्बर जैन शिक्षा केन्द्र"** का शुभारंभ वर्ष-2013 से किया गया है।

इस शिक्षा केन्द्र की स्थापना का मुख्य उद्देश्य जैन श्रावक-श्राविकाओं को धर्म के ज्ञान से अभिसिंचित करना एवं उन्हें समाज में लब्ध प्रतिष्ठित करने हेतु विशेष सर्टिफिकेट/डिप्लोमा/डिग्री के माध्यम से सम्मानित करना है। इस शिक्षा केन्द्र के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के कोर्स संचालित किये गये हैं, जिसे नियमावली के अनुसार सभी श्रावक-श्राविकाएँ ज्ञानाराधना के लिए ज्वाइन कर सकते हैं। पूज्य माताजी का यह मार्मिक चिंतन है कि जैनधर्म के बंधुओं को सांसारिक व लौकिक ज्ञान के साथ ही जैनधर्म का ज्ञान अवश्यरूप से होना चाहिए, क्योंकि जैनधर्म के सिद्धान्तों को जानकर ही हमारी आत्मा विशुद्धि को प्राप्त करती है एवं धर्म के ये संस्कार आगामी अनेक भवों तक प्रत्येक आत्मा का मोक्षमार्ग प्रशस्त करते हुए उन्हें संसार भ्रमण से दूर करने में सहयोगी बनते हैं।

"ज्ञानामृतं भोजनं" अर्थात् ज्ञानरूपी अमृत ही आत्मा का भोजन है, यही इस शिक्षा केन्द्र का मूल उद्देश्य है। पाठकगण इन परीक्षा कोर्स में अभिरुचि के साथ भाग लेकर जैनधर्म के "सिद्धान्त, न्याय, व्याकरण, साहित्य व विधिविधान" से संदर्भित ज्ञान को प्राप्त करते हुए प्रवेशिका/मध्यमा/विशारद/शास्त्री/आचार्य के सर्टिफिकेट/डिप्लोमा/डिग्री आदि प्राप्त करके जैनधर्म की महती प्रभावना के साथ अपनी यशकीर्ति को भी दिग्दिगंतव्यापी बनायें, ऐसी प्रेरणा है।

-संपर्क कार्यालय-

C/o दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.-01233-280184, मो.-09411025124

E-mail : onlineccjs@gmail.com, Website : www.jambudweep.org

Scanned by CamScanner

विषयानुक्रमणिका

संज्ञाप्रकरण वा प्रत्याहार ...	१
स्वरसन्धि प्रकरण	३
व्यञ्जनसन्धि प्रकरण	९
विसर्गसन्धि प्रकरण	१४
उपसर्ग विवरण	१८
सोपसर्ग परस्मैपदी धातुएँ ...	१९
सोपसर्ग आत्मनेपदी धातुएँ ...	२०
सोपसर्ग क्रियात्मक शब्द	२०
सोपसर्ग क्तान्त शब्द ...	२१
सोपसर्ग ल्यबन्त शब्द ...	२२
अव्ययवर्ग पञ्चमस्तम्भ	२२
अजन्त पुल्लिङ्ग प्रकरण ...	२४
अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द	२४, ३४
इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द ...	२८
जातिवाचकवर्गतृतीयस्तम्भ	२९
उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द	३१
देववर्ग शब्द	३४
सामान्य शिक्षाविधी (गद्य)	३६
शिक्षा का माहात्म्य (गद्य)	३६
अजन्त स्त्रीलिङ्ग प्रकरण	३७
अकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ...	३७
इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द	३८
ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ...	३८
ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ...	४०
विशेषणात्मक त्रिलिङ्ग शब्द ..	४१
अजन्त नपुंसकलिङ्ग प्रकरण	४३
अका. नपुं. लिङ्ग शब्द	४३, ४४, ४५
उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द	४५
अनुवाद सहायक नियम	४८
हलन्त पुल्लिङ्ग प्रकरण	४९
पाठ माहात्म्य (पद्य)	६८
हलन्त स्त्रीलिङ्ग प्रकरण	६९
हलन्त नपुंसकलिङ्ग प्रकरण	७३
परोपकार प्रशंसा (पद्य) ...	७७
सुशिक्षित प्रशंसा (पद्य) —	७७
कर्त्तव्यो नातिसञ्चयः (गद्य)....	७८
स्वभाव की अनिवार्यता (पद्य)	७९
उपाय की सफलता गद्य)	८०
बुद्धि की बलवत्ता (गद्य)	८१
निष्प्रयोजन कार्य से हानि गद्य)	८२
विद्या प्रशंसा (पद्य)	८३
दुर्जन सहवास निषेध (गद्य)	८४
संसार में अनाशक्ति (पद्य)	८५
स्फुटनीतियाँ (पद्य) —	८६
सन्तोष वा दया प्रशंसा (पद्य)	८७
सज्जन प्रशंसा (पद्य)	८८
मुहावरेदार प्रयोग	८९
नीतिसंग्रह और कहावतें ...	९०
अशुद्धि शोधन —	९१
अनुवादार्थ हिन्दी अवतरण ...	९२

Scanned by CamScanner

❀ श्रीपरमात्मने नमः ❀

सरल संस्कृत शिक्षा

तृतीय — भाग

श्रेयोमार्गोपदेशाय, लोकालोकावलोकिने ।
मोहपङ्कविशोषाय, नमस्ते जिनभानवे ॥

वर्णसमाम्नायः—

अ इ उ ण् । ऋ लृ क् । ए ओ ङ् । ऐ औ च् । ह य व र ट् । ल ण् । ञ म ङ ण न म् । झ भ ञ् । घ ढ ध ष् । ज ब ग ड द श् । ख फ छ ठ थ च ट त व् । क प य् । श ष स र् । हल् । इति प्रत्याहारसूत्राणि

अथ संज्ञा — प्रकरण

वर्ण — दो प्रकार के हैं । स्वर और व्यञ्जन ।

स्वर — अ, आ इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ, ए, ऐ, ओ, औ, स्वर कहे जाते हैं । इनका उच्चारण स्वतंत्रता से होता है अतः इन्हें 'स्वर' कहते हैं ।

व्यञ्जन—क्, ख्, ग्, घ् ङ्—कवर्ग, च्, छ् झ्, ज्, ञ् चवर्ग, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्—टवर्ग, त् थ्, द्, ध्, न् तवर्ग —प्, फ्, ब्, भ्, म् पवर्ग, य्, र्, ल्, व् यवर्ग और श्, ष्, स्, ह् सवर्ग ये ३३ वर्ण व्यञ्जन कहे जाते हैं । इनका उच्चारण स्वरों की सहायता के बिना स्वतंत्रता से नहीं किया जा सकता है । इसलिये इन्हें 'व्यञ्जन' कहते हैं ।

Scanned by CamScanner

व्यञ्जनों के प्रकार —

क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ् ये प्रत्येक वर्ग के पहले दो दो वर्ण तथा श्, ष्, स् ये ऊष्मसंज्ञक वर्ण ऐसे कुल १३ वर्ण 'कठोर या अघोष' कहे जाते हैं।

ग्, घ्, ङ्, ज्, झ्, ञ्, ड्, ढ्, ण्, द्, ध्, न्, ब्, भ्, म्, य्, र्, ल्, व्, ह् ये प्रत्येक वर्ग के अन्तिम तीन–तीन वर्ण, अन्तःस्थवर्ण और ह् ये २० व्यञ्जन वर्ण 'मृदु या घोष' कहे जाते हैं।

अन्तस्थ व्यञ्जन—य्, व्, र्, ल् ये अन्तस्थ व्यञ्जन हैं। ये इ, उ, ऋ, लृ स्वर के स्थान पर हो जाते हैं। इसलिये इन्हें 'अर्ध-स्वर' भी कहते हैं।

ऊष्मव्यञ्जन— श् [तालव्य] ष्, (मूर्धन्य) स् (दन्त्य) ह् (कण्ठ्य) ये 'ऊष्मव्यञ्जन' कहे जाते हैं।

सजातीय स्वर — अ का आ सजातीय स्वर तथा इ, उ आदि विजातीय स्वर माने जाते हैं। इसी प्रकार इ का ई, उ का ऊ, ऋ का ॠ सजातीय स्वर है। शेष स्वर विजातीय हैं।

स्वरों में अ, इ, उ, ऋ ह्रस्व स्वर तथा शेष दीर्घ स्वर कहे जाते हैं।

⌣क और ⌣ख के पूर्व अर्धविसर्ग सदृश चिह्न जिह्वामूलीय तथा ⌣प ⌣फ से पहले अर्धविसर्ग सदृश चिन्ह्न उपध्मानीय कहलाता है। स्वर के ऊपर जो पूर्ण बिन्दी ं होती है उसे अनुस्वार, अर्धबिन्दी ँ अनुनासिक और स्वर के बाद जो : दो बिन्दियां होती हैं उन्हें विसर्ग कहते हैं।

स्थान विवरण —

अ, कवर्ग, ह्, विसर्ग का कंठ। इ, चवर्ग, य्, श् का तालु ऋ टवर्ग र्, ष् का मूर्धा। लृ, तवर्ग ल्, स् का दन्त। उ, पवर्ग, उपध्मानीय का ओष्ठ। ञ् म् ङ् ण् न् का नासिका स्थान भी होता है। ए, ऐ का कंठ वा तालु। ओ औ का कण्ठ वा ओष्ठ। व का दन्त वा ओष्ठ। जिह्वामूलीयका जिह्वामूल और अनुस्वार का नासिका स्थान होता है।

Scanned by CamScanner

प्रत्याहारों के नाम—

एकस्मात् ङ्ञणवटा, द्वाभ्यां षस्त्रिभ्यः एव कणमाः स्युः ।
ज्ञेयौ चयौ चतुर्भ्यो, रः पञ्चभ्यः शलौ षड्भ्यः ॥

एङ्, यञ्, अण्, छव्, अट् ॥ ५ ॥ झष्, भष्, ॥ ७ ॥ अक्, इक्, उक् ॥ १० ॥ अण्, इण्, यण् ॥ १३ ॥ अम्, यम्, ङम् ॥ १६ ॥ अच्, इच्, एच्, ऐच् ॥ २० ॥ यय्, मय्, झय्, खय् ॥ २४ ॥ यर्, झर्, खर्, चर्, शर् ॥ २९ ॥ अश्, हश्, वश्, झश्, जश्, बश्, ॥ ३५ ॥ अल्, हल्, वल्, रल्, झल्. शल् ॥ ४१॥ र ॥ ॥ ४२ ॥

प्रत्येक प्रत्याहार के आदि और अन्तिम दोनों अक्षरों को क्रमशः वर्णसमाम्नाय में देखना। उन दोनों के बीच जितने अक्षर हों उस प्रत्याहार से उन सभी अक्षरों का बोध होता है। जैसे 'जश्' प्रत्याहार से ज् ब् ग् ड् द् का बोध होता है। इसी प्रकार अन्य प्रत्याहार भी जानना।

सन्धि–नियमाः

वर्णों के मेल, विकार या एकीकरण को सन्धि कहते हैं। सन्धियाँ पांच प्रकार की हैं। स्वर स्वर, व्यञ्जन स्वर, व्यञ्जन व्यञ्जन, विसर्ग व्यञ्जन और विसर्ग स्वर।

नोट — इस प्रकरण में लघुकौमुदी के सूत्र पाठकों और छात्रों की सुविधा के ध्यान से दिये जा रहे हैं। परन्तु उनके समन्वय में कहीं कहीं कुछ कमी रह जाती है। सो विदित रहे।

"यण् सन्धि (इको यणचि)"

इई, उऊ, ऋ ॠ, लृ इनके आगे (बाद) यदि विजातीय स्वर आवें तो इनको क्रमशः य्, व्, र्, ल् हो जाता है। जैसे—

जलत्येकेन पादेन — जलति + एकेन, इ + ए = य् — ये,
नद्यवतरति कासारात् — नदी + अवतरति, ई + अ = य् — य,
मध्वत्र विपणी नास्ति — मधु + अत्र, उ + अ = व् — व,
खलप्वङ्गना स्वर्गता — खलपू + अङ्गना, ऊ + अ = व् — व,
रक्षित्रेतन्मित्रं जातम् — रक्षितृ + एतद्, ऋ + ए = र् — रे,
कृतं लृच्चारणं त्वया — लृ + उच्चारणं, लृ + उ = ल् — लु,

तथा च—त्र्यम्बकः, दध्यत्र, यद्यपि, इत्याहुः, इत्युवाच, दाक्षा-श्रीमत्युवाच, प्रत्युपकारः, प्रत्येकम । मध्वादेशः, मध्वरिः, मध्वालयः, गुर्वादेशः । धात्रंशः, पित्रनुमतिः, लाकृतिपदेशः इत्यादि । यहाँ यण् करते समय सन्धिनियम नं० १४, १५ के अपवाद नियम का ध्यान रखना चाहिये ।

"अयादिसन्धि (एचोऽयवायावः)"

२— ए, ओ, ऐ, औ के बाद जब कोई स्वर आता है तब ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय्, औ को आव् होता है। जैसे—

हरे + ए = हरये । विष्णो + ए विष्णवे । नै + अकः नायकः । पौ + अकः = पावकः । तथा — चयनम्, भवनम् । पवनः, लवनम्, शिशये । गायकः, गायनम्, दायकः । तावूचतुः, तावूहतुः, लावकः इत्यादि ।

"वान्तो यि प्रत्यये"

३— ओ औ के बाद जब यकारादि प्रत्यय आता है तब ओ को अव् तथा औ को आव् हो जाता है। जैसे गो + यम् = गव्यम् नौ + यम् = नाव्यम् ।

"गुण सन्धिः (आद्गुणः)"

४— किसी शब्द या पद के अन्तिम अ या आ के बाद इ आवे तो उन दोनों को 'ए' हो जाता है। यदि उ या ऊ आवे तो उन दोनों को 'ओ' हो जाता है। यदि ऋ या ॠ आवे तो उन दोनों को

Scanned by CamScanner

'अर्' हो जाता है। यदि लृ आवे तो उन दोनों को अल् हो जाता है। जैसे—

शिक्षकेणेक्षिता वयम् – शिक्षकेण + ईक्षिताः अ + ई = ए,
पूजयेशः न तुष्यति – पूजया + ईशः, आ + ई = ए,
जन्माप्तौ गणिकेनोक्तम् – गणिकेन + उक्तम्, अ + उ ओ,
गर्वेणोर्ध्वं स पश्यति – गर्वेण + ऊर्ध्वम्, अ + ऊ = ओ
उत्तमर्णेनर्णं दत्तम् – उत्तमर्णेन + ऋणम्, अ + ऋ – अर्,
सेवयार्णं जहाति सः – सेवया + ऋणम्, आ + ऋ अर्,

तथा—च गणेशः, नरेशः, रमेशः, सुरेशः, । गन्धोदकम्, चन्द्रोदयः, हितोपदेशः । ग्रीष्मर्तुः, देवर्षिः । राजर्षिः । इत्यादि । गणेशः — यहाँ पर गण शब्द में अन्तिम अक्षर 'अ' है उसके बाद ईशः की 'ई' आती है इसलिए सन्धिनियम नं० ४ के अनुसार दोनों अ और ई को 'ए' हो गया।

"ए, ओ का लोप (लोपः शाकल्यस्य)"

५— शब्दों के द्विवचनान्त रूपों के अतिरिक्त दूसरे रूपों के अन्त में ए या ओ स्वर आवे तथा उसके बाद 'अ' को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आवे तो ए वा ओ को क्रमशः अय् और अव् होता है। और उस य् व् को आगे के स्वर में मिलाकर पूर्णाक्षर होता है। अथवा य्, व् का लोप हो जाता है। और लोप होने पर पुनः प्राप्त होने वाली सन्धि नहीं होती। जैसे—

हरे + इह = हर इह, हरयिह। विष्णो + इह = विष्ण इह, विष्णविह। सर्वं एव, त एव, जन एव। वन ऋषिः, मुख औषधम्, प्रभ आहुः, कव इह। इत्यादि।

"वृद्धिसन्धि (वृद्धिरेचि)"

६— अ या आ के बाद जब ए या ऐ आता है तब उन दोनों को ऐ हो जाता है। तथा अ या आ के बाद जब ओ या औ आता है; तब उन दोनों को औ हो जाता है जैसे—

Scanned by CamScanner

सुखेनैकागारिकः गतः—सुखेन + एकागारिकः, अ + ए = ऐ,
शक्रस्यैरावणः गजः — शक्रस्य ऐरावणः, अ + ऐ = ऐ,
सैनिकौघः समायातः— सैनिक ओघः, अ + ओ = औ
कष्टेनौषधं पीतम् — कष्टेन + औषधम्, अ + औ = औ

तथा च—अद्यैव, अद्यैकदा, एकैकम्, तवैषः, तवैषः, तवैश्वर्यम्
देवैश्वर्यम्। गङ्गौघः, जलौघः, तवौदार्यम्, महौषधम्। इत्यादि।

"उपसर्गादृति धातौ"

७—अवर्णान्त उपसर्ग के बाद धातु सम्बन्धी ऋकार आने पर अ और ऋ को 'आर्' हो जाता है। जैसे— प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति। यहां अ और ऋ का 'आर्' हुआ।

"एङि पररूपम्"

८—अदर्णान्त उपसर्ग के वाद धातुसम्वन्धी ए ओ आने पर दोनों स्वरों को पररूप ए या ओ एकादेश हो जाता है। जैसे प्र + एजते = प्रेजते। उप + ओषति = उपोषति। यहां प्र का अ और एजते का ए हटकर एक नवीन ए हो गया। इसीप्रकार उपोषति में उप का अ और ओषति का ओ हटकर एक नवीन ओ हो गया।

"शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्"

किसी भी शब्द या पद का अन्तिम स्वर है आदि में जिसके ऐसे समुदाय की टिसंज्ञा होती है। जैसे मनस् में अस् की और शक में क के अ की टिसंज्ञा होगी।

९-शकन्ध्वादिगणपठित शब्दा में पूव टि और पर स्वर को पररूप होता है। जैसे मनस् + ईषा = मनीषा। शक + अन्धुः = शकन्धुः। मनीषा-मनस् का अस और ईषा का 'ई' हटकर एक नवीन ई हो गया।

Scanned by CamScanner

"ओमाङोश्च"

८—अकार के बाद जब ओम् या आ. आङ् आवे तब पूर्व और पर स्वर को पररूप एकादेश हो जाता है। जैसे—शिवाय + ओंनमः = शिवायोंनमः। यहां पर य का अ और ओंनमः का ओं हटकर एक नवीन ओ हो गया। शिव+आ + इहि = शिवेहि। यहां अ और आ को पररूप नवीन आ हो गया। तथा आद्गुणः सूत्र से आ और इ को ए हो गया।

"दीर्घसन्धि (अकः सवर्णे दीर्घः)"

११—अ-आ, इ-ई, उ-ऊ, ऋ-ॠ इन सजातीय स्वरों में से एक के बाद दूसरा सजातीय स्वर आवे तो उन दोनों को एक दीर्घ स्वर हो जाता है जैसे—

कोपेनालमपुण्यानाम	- कोपेन + अलम्,	अ	+	अ	=	आ,
तत्रागतः महावीरः	—तत्र + आगतः,	अ	+	आ	+	आ,
प्रजारिं दृष्ट्वा तस्य	—प्रजा + अरिम्,	आ	+	अ	=	आ,
युवत्वे रक्षतीशस्ताम्	—रक्षति + ईशः,	इ	+	ई	=	ई,
पुत्रीच्छति न तं वरम	—पुत्री + इच्छति,	ई	+	इ	=	ई,
सा राज्ञीक्षते परितः	—राज्ञी + ईक्षते,	ई	+	ई	=	ई,
अश्रूद्भवति नेत्रतः	—अश्रु +उद्भवति,	उ	+	उ	=	ऊ,
वादी तत्त्वं खलूहते	—खलु +ऊहते,	उ	+	ऊ	=	ऊ,
वधूक्तिं नो करोति सः	—वधू +उक्तिम्,	ऊ	+	उ	=	ऊ,

तथा च—शशाङ्कः, धनागमः, विद्याऽध्ययनम्, विद्यालयः। मुनीन्द्रः, कवीन्द्रः, महीन्द्रः, कवीश्वरः, महीश्वरः। विधूदयः, लघूर्मिः, वधूदरम्, भूर्ध्वम। पितृषभः, पितॄणम् भ्रातृद्धि इत्यादि।

"पूर्वरूपसन्धि (एङः पदान्तादति)"

१३—जब किसी पद के अन्त में ए या ओ हो और उसके

बाद ह्रस्व अ आवे तो अ का लोप हो जाता है और उनके स्थान में (ऽ) ऐसा चिह्न लगाया जाता है। तथा उस चिह्न का उच्चारण नहीं किया जाता। जैसे—मुनेऽनघ, वने ऽस्मिन, सखे ऽत्र, सखे ऽपंथ, हरे ऽव। साधोऽव, गुरो ऽव, प्रभो ऽनुगृहाण, विष्णोऽव। इत्यादि।

"प्लुतसन्धि (दूराद्धूते च)"

१४—दूर से पुकारने में वाक्य की टि को विकल्प से प्लुत होता है। जैसे आगच्छ भो देवदत्त ३ अत्र। यहां तकारोत्तरवर्ती अकार को प्लुत होकर प्रकृतिभाव होने से सन्धिकार्य नहीं हुआ।

"ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्"

१४—ईकारान्त, ऊकारान्त, एकारान्त द्विवचन के बाद आये हुये स्वर के साथ उनकी सन्धि नहीं होती। जैसे—मुनी इमौ, मुनी आगच्छतः। रिपू प्रजेयौ स्तः। पटू एतौ। बालः कमले ईक्षते आदि।

"अदसो मात्"

१ —अदस् शब्द के मकार के बाद आये हुये ई ऊ के बाद जब कोई स्वर आता है तब वे ई और ऊ ज्यों के त्यों रहते हैं। प्रगृह्यसंज्ञा होने से सन्धि नहीं होती। जैसे—अमी ईश्वराः, अमू आर्यौ इत्यादि।

"ओत्"

१६—आकारान्त निपात के बाद जब कोई स्वर आता है तब वह निपात ज्यों का त्यों रहता है, प्रगृह्यसंज्ञा होने से सन्धि नहीं होती। जैसे—अहो ईशाः, अहो आश्चर्यम् इत्यादि।

"सामान्यसन्धिनियम"

१७—सम्बोधनवाचक स्वरान्त पदों को आगे आने वाले स्वरों से विकल्प कर सन्धि होती है। १—जब सन्धि होती है तब पहला स्वर ओ और आगे का स्वर अ हो तो अ का लोप

Scanned by CamScanner

कर उसके स्थान में (ऽ) ऐसा चिन्ह दिया जाता है। २—यदि अ से भिन्न स्वर हो तो ओ को अव् करके व को आगे के स्वर में मिला दिया जाता है। अथवा ३–व् का लोप कर दिया जाता है।। जैसे—प्रभो अस्मान् रक्ष, प्रभो ऽस्मान् रक्ष ; विष्णो इच्छामि मोक्षम्, विष्णविच्छामि, विष्ण इच्छामि। इन्दो अद्य रम्यं तव बिम्बम् भानो एषः तव चण्डः प्रतापः। इत्यादि।

"अचोरहाभ्यां द्वे"

१८- स्वर के बाद रहने वाले र् और ह् के बाद जब यर् प्रत्याहार का कोई अक्षर आता है तब उस अक्षर को विकल्प से द्वित्व हो जाता है। जैसे–गिर्य्यारोहणम्, गिर्यारोहणम्। इत्यादि।।

१९—ह्रस्व ऋ के पूर्व में ए ओ औ के अतिरिक्त कोई भी स्वर आवे तो पूर्व के स्वर ऋ की विकल्प कर गुणसन्धि करना चाहिये। जिस पक्ष में सन्धि नहीं की जाती उस पक्ष में पूर्व का स्वर यदि दीर्घ हो तो वह ह्रस्व हो जाता है। जैसे—ब्रह्म ऋषिः ब्रह्मर्षिः। मार्गेण ऋच्छति। सेवय ऋषिम, सेवयर्षिम्। इत्यादि

* अथ व्यञ्जनसन्धि प्रकरणम् *

"स्तोः श्चुना श्चुः"

०—सकार और तवर्ग (त, थ, द, ध, न) का यदि शकार और चवर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) से योग रहे तो स् को श् तथा तवर्ग को चवर्ग होता है। जैसे—नरस् + शेते = नरश्शेते। बालस + चिनोति = बालश्चिनोति। कस् + छिनत्ति = कश्छिनत्ति सत्+चित् = सच्चित्। जगद + जन्तुः = जगज्जन्तुः। शार्ङ्गिन् + जय = शार्ङ्गिञ्जय। महान + झषः = महाञ्झषः। इत्यादि।

"शात्"

२१—शकार के बाद रहने वाले तवर्ग को चवर्ग नहीं होता। जैसे—विश्+नः = विश्नः। प्रश्+नः = प्रश्नः।

"ष्टुना ष्टुः"

२२—षकार और टवर्ग के योग में सकार को षकार और तवर्ग (त, थ, द, ध, न) को क्रमशः टवर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण) होता है। जैसे—कष्षष्ठः। रामष्टीकते। पेष्टा। तट्टीका। उड्डीनः। राजण्ढौकसे। इत्यादि।

"न पदान्ताट्टोरनाम्"

२३—पदान्त टवर्ग के बाद रहने वाले नाम भिन्न सकार और तवर्ग को षकार और टवर्ग नहीं होता। जैसे—षट् सन्तः। षट् ते। इत्यादि।

"तोः षि"

२ —तवर्ग के बाद यदि षकार हो तो तवर्ग को टवर्ग नहीं होता। जैसे-सन् षष्ठः। यहाँ पर नकार को णकार नहीं हुआ।

"झलां जशोऽन्ते"

२५—यदि पद के अन्त में किसी भी वर्ग का अनुनासिक से भिन्न व्यंजन आवे और उसके आगे (बाद) स्वर हो तो पिछले व्यंजन को वर्ग का तीसरा व्यंजन होता है। जैसे—वागीशः। अजाश्रितम्। मधुलिड् भ्रमरः। समिदाहरणम्। ककुबन्तरम् आदि

२६—यदि किसीभी वर्ग के अनुनासिक के अतिरिक्त दूसरे व्यंजन के आगे मृदुव्यंजन आवें तो पिछले व्यंजन को उसी वर्ग का तृतीय व्यंजन हो जाता है। जैसे—ग्रामाद् वहि र्याति वृषः। पर्वताद् भानुरुद्गतः। ककुब्मार्गः। समिद्भङ्गः। इत्यादि।

Scanned by CamScanner

"यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा"

२७—किसी भी वर्ग के अनुनासिक के अतिरिक्त दूसरे व्यञ्जन के आगे यदि अनुनासिक से प्रारम्भ हुआ शब्द आवे तो पिछले व्यञ्जन को उसी के वर्ग का तृतीय व्यंजन अथवा अनुनासिक होता है। जैसे—वाङ् मधुरा; वाग्मधुरा, अन्मात्रम्। षण्णयाः नगराम्नगरम्। ककुम्मण्डलम्। इत्यादि।

"प्रत्यये भाषायां नित्यम्"

२८—किसी भी वर्ग के अनुनासिक से भिन्न दूसरे व्यञ्जन के आगे यदि अनुनासिक से प्रारम्भ हुआ प्रत्यय आवे तो पिछले व्यञ्जन को उसी के वर्ग का अनुनासिक होता है। जैसे—तन्मात्रकार्यकरणप्रवणाय। मृण्मयं भाजनम्। इत्यादि।

"तोर्लि"

२९—तवर्गीय व्यञ्जन के वाद यदि ल से प्रारम्भ हुआ शब्द आ जाय तो तवर्ग को ल् होता है। जैसे—सन्मार्गदर्शनाल्लोके। अस्मिल्लोके। वृहल्लीलया याति सः। पुत्रवल्लालयेन्नित्यम्। इत्यादि

"खरि च"

३०—किसी भी वर्ग के अनुनासिक से भिन्न व्यञ्जन के बाद कठोर व्यञ्जन आवे तो पिछले व्यञ्जन को उसी के वर्ग का पहला अक्षर होता है। जैसे—विपद् + पीडयति = विपत्पीडयति इत्यादि।

"झयो होऽन्यतरस्याम्"

३१—ह से शुरू होने वाले शब्द के पहले यदि अनुनासिक से भिन्न वर्गव्यञ्जन आवे तो ह को विकल्प करके पहिले व्यञ्जन का चौथा अक्षर होता है। जैसे—वाग् + हरिः = वाग्घरिः, वाग्हरिः। अज्झलौ, अज्हलौ। पड्ढलानि। तद्धितम्। इत्यादि।

Scanned by CamScanner

" शश्छोऽटि "

३२–श से प्रारम्भ होने वाले शब्द के पहले यदि किसी भी वर्ग का अनुनासिक से भिन्न व्यंजन आवे तथा श् के वाद स्वर, अन्तःस्थ अथवा अनुनासिक होवे तो श् को विकल्प से छ होताहै, जैसे—भवत्+शरीरम्=भवच्छरीरम। भवच्छासनम। इत्यादि।

" मोऽनुस्वारः "

३३—पदान्त म् के वाद व्यंजन आने पर म् को अनुस्वार हो जाता है। जैसे—पापं हन्ति। व्रतं रक्षति। धर्मं शृणोति। आदि।

" वा पदान्तस्य "

३४—पदान्त म् के वाद कोई भी वर्गव्यंजन आने पर म् को विकल्प कर आगे के व्यंजन के वर्ग का पंचम वर्ण होता है। पक्षान्तर में नियम नं० ३३ से म् को अनुस्वार होता है। जैसे—त्वङ्करोषि, त्वं करोषि। त्वञ्चरसि; त्वं चरसि। त्वन्तरसि; त्वं तरसि। खेलम्पश्यति, खेलं पश्यति। इत्यादि।

" नश्चाऽपदान्तस्य झलि "

३५—अपदान्त म् और न् के वाद अनुनासिक भिन्न वर्ग-व्यंजन आने पर म् और न् का अनुस्वार होता है। जैसे—पयांसि। हंसि। मंस्यते। इत्यादि।

" अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः "

३६–अपदान्त अनुस्वार के वाद वर्गव्यंजन आने पर उस अनुस्वार को आगे के अक्षर का पंचमाक्षर (अनुनासिक वर्ण) आदेश होता है। जैसे—शान्तः। इत्यादि।

" यवलपरे यवला वा "

३७–यदि पदान्त म् के वाद (जिसके वाद य्, व्, ल् व्यंजन हो ऐसा) ह् आवे तो म् को विकल्प से अनुनासिक य्, व्, ल् होता

है। पक्ष में नियम नं० ३३ से म को अनुस्वार होता है। जैसे— किम् + ह्यः = किय्ँ ह्यः, किं ह्यः। इत्यादि

"सामान्यनियम"

३८—म् व्यंजन के बाद स्वर आने पर दोनों मिलकर पूर्णाक्षर हो जाते हैं। देवम् + ईक्षते = देवमीक्षते। इत्यादि।

३९—यदि न् के पहले दीर्घस्वर हो और आगे कोई स्वर आ जाय तो दोनों मिलकर पूर्णाक्षर हो जाते हैं। जैसे—तान् + आह = तानाह। बालकान् + उवाच = बालकानुवाच। इत्यादि।

"ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्"

४०—ङ्, ण् न् के पहले ह्रस्व स्वर हो और उनके बाद कोई भी स्वर आ जाय तो उनको द्वित्व हो जाता है। जैसे— प्रत्यङ् ङात्मा। सुगण्णोशः। अस्मिन्नुद्याने। इत्यादि।

"नश्छव्यप्रशान्"

४१—यदि पदान्त न् के बाद च्-छ्, ट्-ठ्, त्-थ्, व्यंजनों में से कोई भी व्यंजन आवे तो न् को अनुस्वार और विसर्ग होता हैं। और जहाँ च् छ् होता है वहाँ विसर्ग को श् होता है। जहाँ ट्, ठ् होता है वहाँ विसर्ग को ष् होता है तथा जहाँ त्, थ् होता है वहाँ विसर्ग को स् होता है। जैसे—तण्डुलांश्चिनोति। चलंश्छागः। छात्रांस्ताडयति। बुधांष्टीकां दर्शयति। इत्यादि।

"कुप्वोः ≍क≍पौ च"

४२—पदान्त विसर्ग के बाद क्, ख् में से कोई अक्षर आवे तो विसर्ग को जिह्वामूलीय तथा प्, फ् में से कोई अक्षर आवे तो विसर्ग को उपध्मानीय विकल्प से होते हैं। जैसे—क≍करोति, कः करोति। क≍खनति, कः खनति। क≍पठति, कः पठति। क≍फलति, कः फलति। इत्यादि।

Scanned by CamScanner

"छे च"

४३—यदि छ् के पहिले ह्रस्व स्वर, निषेधार्थक मा अव्यय तथा आ उपसर्ग आ जाय तो छ् के पूर्व में च् जोड़ा जाता है। जैसे—देवच्छत्रम्। वृक्षच्छाया। माच्छेदय। आच्छादयति। इत्यादि।

"पदान्ताद्वा"

४४—यदि छ् के पहले दीर्घस्वर आ जावे तो विकल्प से छ् जोड़ा जाता है। जसे—लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मी छाया। इत्यादि।

"वावसाने"

५—किसी भी पद के अन्त में अनुनासिक से भिन्न वर्ग-व्यंजन आवे तो उसको उसी वर्ग का तृतीय अक्षर विकल्प से हो जाता है। जैसे—बालाद्, बालात्। वाग्, वाक्। इत्यादि।

❀ विसर्गसन्धिः ❀

"विसर्जनीयस्य सः"

४६—विसर्ग के पहले कोई भी स्वर हो और बाद में च्-छ्, ट्-ठ्, त्-थ् मे से कोई व्यंजन हो तो विसर्ग को क्रमशः श्, ष्, होता है। जैसे—आचार्यश्छात्रम् उपदिशति। कविष्टीकां रचयति। तपनस्तापं करोति। इत्यादि।

"वा शरि"

४७—विसर्ग के पहले कोई भी स्वर हो और आगे श, ष्, स् ये कठोर व्यंजन आवें तो विसर्ग को विकल्प से क्रमश श्, ष्, स् हो जाते हैं। जैसे—सूरिश्शास्त्राणि रचयति, सूरिः शास्त्राणि रचयति। विष्णोः कलाष्षोडश विद्यन्ते, विष्णोः कलाः षोडश विद्यन्ते, हरिजनास्सूकरान् हन्ति, हरिजनाः सूकरान् हन्ति। इत्यादि।

Scanned by CamScanner

" अतो रोरप्लुतादप्लुते "

४८—विसर्ग के पहले अ हो और आगे अ आवे तो विसर्ग को उ होता है और वह उ पिछले अ के साथ मिलकर ओ हो जाता है तथा ओ के बाद ऽ यह चिन्ह लगाया जाता है। जैसे— गृहस्थोऽतिथीन् सेवते। हरिणोऽरण्यं गच्छति। इत्यादि।

" हशि च "

४९—विसर्ग के पहले अ हो और आगे मृदुव्यंजन आवे तो विसर्ग को उ होता है और पहले अ तथा उ को नियम नं. ५ से ओ होता है। जैसे—छात्रो यतते। देवो वन्द्यः। बालो जननीम् ईक्षते। आदि

" ससजुषोः रुः "

५०—विसर्ग के पहले अ से भिन्न स्वर हो और आगे स्वर अथवा मृदुव्यंजन हो तो विसर्ग को र् होता है तथा आगेके स्वर में मिलने से उसका पूर्णाक्षर होता है। अथवा वह आगेके व्यंजन से जोड़ दिया जाता है। जैसे—साधुरागच्छति। बालैरीक्ष्यते सैलः। मतिरेधते। मुनिर्गतः। इत्यादि।

" भो भगो अघो अपूर्वस्य योऽशि "

५१—भोस् आदिक के विसर्ग के आगे यदि मृदुव्यंजन या स्वर आ जाय तो विसर्ग का लोप हो जाता है। और यदि आगे कठोरव्यजन आवे तो यथाविधि सन्धि होती है। जैसे—भो देवा, अघो याहि, भगो नमस्ते। इत्यादि। अथवा भोः करोति। भोस्तरति। भोः कष्टम्। भृत्यः आगच्छति। इत्यादि।

५२—विसर्ग के पहिले अ हो और आगे अ से भिन्न स्वर हो तो विसर्ग का लोप होता है। तथा विसर्ग का लोप होने से पास में आने वाले दो स्वरों में सन्धि नहीं होती। जैसे - बालः सर ईक्षते। छात्र उत्कर्षाय चेष्टते। नृप एतं जयति। मत्त ऐरावतः गच्छति। इत्यादि।

Scanned by CamScanner

" हलि सर्वेषाम् "

५३—विसर्ग के पहले आ और बाद में मृदुव्यंजन अथवा कोई स्वर आवे तो विसर्ग का लोप होता है और फिर पास आने वाले दो स्वरों में सन्धि नहीं होती। जैसे—छात्रा यान्ति। दिग्गजा नदन्ति। प्राज्ञा आनन्दं लभन्ते। भृत्या वदन्ति। इत्यादि।

" रो रि "

५४- विसर्ग के स्थान में हुये या मूल र् व्यजन के बाद र से प्रारम्भ हुआ शब्द आवे तो पहले र् का लोप होता है। और उस र् के पहले का स्वर ह्रस्व हो तो दीर्घ होता है। जैसे—पुनर् +रमते=पुना रमते। हरिर् + रम्यः = हरी रम्यः। पटुर् + राजा=पटू राजा। इत्यादि।

" एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि "

५५ —एषः और सः के विसर्ग के आगे अ से भिन्न स्वर या कोई मृदु अथवा कठोर व्यंजन आवे तो विसर्ग का लोप होता है। जैसे-एष हसति द्विजः। स आयाति स्वगेहतः। स जयति जिनोवीरः

५६—एषः और सः के विसर्ग के बाद अ आवे तो उसको उ होता है। वह उ और पिछला अ मिलकर ओ हो जाता है। तथा ओ के बाद ऽ चिह्न होता है। जैसे एषोऽस्ति। सोऽस्ति। इत्यादि।

" सामान्य नियम "

५७—निः, दुः, बहिः आदिकों के विसर्ग को ष् और श्रेयः, नमः आदि के विसर्ग को स् होता है, यदि उनके बाद क्, ख्, प्, फ् हों तो। जैसे—निष्फलम्। दुष्फलम्। बहिष्कृतम्। आविष्कारः। श्रेयस्करः। भास्करः। तिरस्कारः। नमस्कारः। इत्यादि।

"सन्धि करो"

साधयन्ति + आशु कार्याणि। अरी + अपि + उचितं कार्यम्। मा प्रयच्छ + ईश्वरे धनम्। सर्वे + इमे कुतः यान्ति। सर्वंद्रव्येषु विद्या + एव। पश्यति + इह + आमिषम् + खगः। हे प्रभो + अनुगृहाण नः। मुनी + आगच्छतः + च + अत्र। अमी + ईश्वराः पान्तु नः। सेवय + ऋधि सुभक्तितः।

जगत् + जीवः प्रतार्यते। तत् + टोका मया कृता। जगत्-ईशस्य कृपा नास्ति। यत् + नवे भाजने लग्नः। चन्द्रिका + उत्—लसति रात्रौ। यशान् + सि न ममौ स्वाङ्गे। किमन्यैः स्वम् + च जोवितम्। भगवन् + इहागच्छ। कथा+छलेन बालानाम्। गङ्गायाः +तोरे स्याद्वादः। तरोः+सेवा हिता ग्रीष्मे। कः अत्र दोषः कृतः+ तेन। बालः + येन न पाठितः। प्रातः + एव। एषः गच्छति। सः मृतः। कपोताः मुक्ताः। तरुभिः + राजते।

"सन्धि विश्लेषण (विच्छेद) करो"

कथयत्येष किञ्चन। को ऽसावायाति ग्रामतः। उत्थायोत्थाय। त आहुः सुहितं वचः। व्याधितस्यौषधं पथ्यम्। नीचगापि नरं सरित्। इतीशवाक्यं सुश्रूषी। सेवयर्णं च नो कदा।

छात्रष्ठकारं पठति। अब्ज भांति कासारे। दिङ्नाथास्तु दश मताः। विद्वांल्लिखति पुस्तकम्। नासाच्छेदः कृतस्तेन। जात्या बहिष्कृतो ऽपि स नूतनधर्माविष्कारं चकार।

तरोश्छाया हिता ग्रीष्मे। मूर्खो ऽपि शोभते तावत्। पुना रमते नरो मूढः। पिबन्नेव सुखायते। अत ऊर्ध्वं कथय मित्रम्। बाला गायन्ति गीतिश्याम्। विद्वांसो ऽज्ञानुपदिशन्ति। क्षुधार्ता गौश्चरति। पुनरुवाच पतिं नारी। धनन्ददाति सेवकः। स करोति महापापम्। न गतिं जायते मृषा। एष गच्छति स्वर्लोकम्।

Scanned by CamScanner

* उपसर्ग विवरण *

प्रपराप — समन्ववनिर्दुरभि — व्यधिसूदतिनिःप्रतिपर्यपयः।
उप आङिति विंशतिरेष सखे, उपसर्गगणः कथितः कविभिः॥

प्र = आगे, परा = पीछे, अप = दूर, सम् = एकत्र, अनु = पीछे अव = नीचे, निस्; निर् = बाहर, दुस्; दुर् = खराब, वि; आ = विरुद्ध, नि = नीचे, अपि; अधि = ऊपर, अति = उस पार, सु = अच्छा, उद् = ऊपर, अभि = तरफ, प्रति = विरुद्ध, परि = आसपास, उप = पास। ये २२ उपसर्ग हैं।

उपसर्गेण धात्वर्थो, बलादन्यः प्रतीयते।
प्रहाराहारसंहार — विहारपरिहारवत्॥

अर्थ—उपसर्ग के योग से धातु के अर्थ में परिवर्तन हो जाता है। जैसे—हृ धातु का अर्थ चुराना है। किन्तु उपसर्गों के योग से उसके अर्थ इस प्रकार बदल जाते हैं। जैसे—प्र–हृ प्रहार = मारना, आ–हृ आहार = भोजन, सम् – हृ संहार = संहार करना, वि – हृ विहार = घूमना, परि – हृ परिहार = छोड़ना। इत्यादि। इसी प्रकार कविवर 'अमरसिंह' ने भी कहा है—

स्यादा-भाषणमालापः, प्रलापोऽनर्थकं वचः।
अनुलापो मुहुर्भाषा, विलापः परिदेवनम्॥ १॥
विप्रलापो विरोधोक्तिः, संलापो भाषणं मिथः।
सुप्रलापः सुवचन — मालापस्तु निह्नवः॥ ॥

उपसर्ग के योग से कभी-कभी धातु के अर्थ में परिवर्तन नहीं भी होता है। जैसे—आह्वयति और आनन्दयति इत्यादि।

Scanned by CamScanner

उपसर्ग के योग से धातु के अर्थ में एक और विलक्षणता आ जाती है कि कहीं-कहीं अकर्मकधातु भी सकर्मक हो जाते हैं। जैसे—अकर्मक भूधातु का अर्थ अनु लगा देने से अनुभव करना सकर्मक हो जाता है। यथा—सन्तः सुखमनुभवन्ति, पापो दुःखमनुभवति। इत्यादि।

उपसर्ग को धातु के पहले जोड़ते समय सन्धि के नियमों के अनुसार उचित सन्धि कर लेना चाहिये। जैसे—प्रति + ईक्षते = प्रतीक्षते। परि+ईक्षते = परीक्षते। उप + ईक्षते = उपेक्षते और निर् + ईक्षते = निरीक्षते इत्यादि।

नि-विश् वि-क्री, सम्-गम्, वि-परा-जि, सम्-अव-प्र-वि-स्था, आ-प्रच्छ् ये धातु उपसर्ग के योग से आत्मनेपद हो जाते हैं। तथा वि-आङ्-परि-उप इन उपसर्गों के योग में रम्धातु से परस्मैपद हो जाता है।

सोपसर्ग परस्मैपदी धातुएँ

अप इ,	अपेति	= दूर होता है;	आगम्,	आगच्छति	= आता है,
आग्रह्,	आगृह्णाति	= आग्रह करता है,	आदिश्,	आदिशति	= आज्ञा देता है;
आनन्द,	आनन्दति	= खुश होता है,	आहृ,	आहरति	= इकट्ठा करता है;
आस्रु,	आस्रवति	= आस्रव होता है,	उत्स्था,	उत्तिष्ठति	= उठता है,
आह्वे,	आह्वयति	= बुलाता है,	निर्नी,	निर्णयति	= निर्णय करता है;
उद् इण,	उदेति	= उदित होता है,	निवृ,	निवारयति	= रोकता है,
निर्वह्,	निर्वहति	= चलाता है,	निषिध्,	निषेधति	= रोकता है,
निःसृ,	निःसरति	= निकलता है,	पर्यट्	पर्यटति	= घूमता है,
पराभू,	पराभवति	= अपमान करता,	प्रतिफल्	प्रतिफलति	= झलकता है,
प्रणम्,	प्रणमति	= प्रणाम करता,	प्रत्यागम्	प्रत्यागच्छति	= लौटता है,
विश्वस्,	विश्वसिति	= विश्वास कर.,	प्राप्,	प्रापयति	= प्राप्त करता है,
प्रशंस्,	प्रशंसति	= सराहता है,	वितृ,	वितरति	= देता है,
विस्मृ,	विस्मरति	= भूलता है,	संग्रह्,	संग्रह्णाति	= संग्रह करता है,

Scanned by CamScanner

सोपसर्ग आत्मनेपदी धातुएँ

अध्यस्, अध्यासते = सुशो० करता है, अनुमन्, अनुमन्यते = सलाह देता है, अपमन्, अपमन्यते = अनादर कर० अभिमन्, अभिमन्यते = गर्व करता है, आपृच्छ्, आपृच्छते = आज्ञा लेता है, आशास्, आशास्ते = आशा करता है, उपेक्ष्, उपेक्षते = उपेक्षा कर. है, प्रतिज्ञा, प्रतिजानीते = प्रतिज्ञा करता है, प्रस्था, प्रतिष्ठते = रवाना होता है, प्रतीक्ष्, प्रतीक्षते = प्रतीक्षा करता है, प्रतीय्, प्रतीयते = मालूम होता है, प्रयत्, प्रयतते = प्रयत्न करता है, विवद्, विवदते = झगड़ता है, वियुज्, वियुज्यते = अलग होता है,

नोट—इसी प्रकार अन्य धातुओं में भी उपसर्गयोजना करना चाहिये।

सोपसर्ग क्रियात्मक नपुँसकलिङ्ग शब्द

(ल्युडन्त)

अध्ययनम् = पढ़ना, अध्यापनम् = पढ़ाना, अनुकरणम् = नकल करना, अनुधावनम् = पीछे दौड़ना, अनुसन्धानम्; अन्वेषणम् = तलाशना, अवरोहणम् = उतरना, अवलम्बनम् = सहारा-लेना, अवलोकनम् = देखना, आगमनम् = आना, आचरणम् = चलना या चालचलन, आदानम् = लेना, आयोधनम = लड़ना या सग्राम, आरोहणम् = चढ़ना, आवरणम् = ढकना, आवर्तनम् = बिलोना।

उत्थानम् = उठना, उत्पतनम् = उड़ना या ऊपर जाना, उत्पादनम् = पैदा करना, उद्घाटनम् = खोलना; उद्वर्तनम् = उठना बठना, उन्मूलनम् = उखाड़ना, उन्मज्जनम् = उखरना, उपवेशनम् = बैठना, उपाख्यानम् = पुराना हाल कहना, निगरणम् = निगलना, निपतनम् = गिरना, निमज्जनम् = डूबना, निर्वापनम् = बोना, निष्क्रमणम् = निकलना, निस्कासनम् = निकालना, निस्तरणम् = सफल होना।

Scanned by CamScanner

परित्राणम् = बचाना, पर्यटनम् = घूमना, पलायनम् = भागना, पिधानम् = ढकना, प्रकल्पनम् = मानना, प्रक्षालनम् = धोना, प्रतारणम् = ठगना, प्रतिदानम् = बदलना, प्रतिमानम् = तोलना, प्रत्यवसानम् = समाप्त करना, प्रवेशनम् = घुसना, प्रसारणम् = फैलाना, प्रस्थानम् = जाना, प्रेक्षणम् = देखना, प्रेषणम् = भेजना, प्रोञ्छनम् = पोंछना।

विकत्थनम् = तारीफ करना, विकसनम् = खिलना, विक्रयणम् = बेचना, विक्षेपणम् = बिखेरना, वितरणम् = बांटना, वियोजनम् = वियोग करना, विवरणम् = स्पष्ट करना, विश्राणनम् = दान देना, बिसर्जनम् = समाप्त करना, व्यादानम् = फाड़ना, संग्रहणम् = संग्रह करना, संयोजनम् = मिलाना।

नोट—इनके रूप नपुंसक लिङ्ग में ज्ञानशब्द के समान चलते हैं। ये सभी शब्द नपुंसक लिङ्ग हैं।

सोपसर्गाः क्तान्ताः त्रिलिङ्गाः शब्दाः

अधीतम् = पढ़ा, अनुकृतम् = अनुकरण किया, अनुमोदितम् = सराहा, अपहृतम् = चुराया, अभिहितम् = कहा, अवगतम् = जाना, आगतम् = आया, आनीतम् = लाया, आरब्धम् = शुरू किया, उद्धृतम् = निकाला, उपकृतम् = उपकार किया, उपेतम् = पाया, निराकृतम् = खण्डन किया, निर्मितम् = बनाया, प्रतिपन्नम् = जाना, प्रविष्टम् = घुसा, प्राप्तम् = पाया, प्रार्थितम् = माँगा, प्रेषितम् = भेजा, प्रोक्तम् = कहा, विकीर्णम् = फैलाया, विक्रीतम् = बेचा, विश्रुतम् – प्रसिद्ध हुआ, विस्मृतम् = भुलाया, विहितम् = किया।

नोट—ये शब्द प्रायः तीनों लिङ्गों में बाल, ज्ञान और विद्या शब्द के समान चलते हैं।

Scanned by CamScanner

सोपसर्ग ल्यबन्त अव्ययशब्द

अभिधाय = कहकर, अवतीर्य = उतरकर, अवधार्य = निश्चित कर, अवरुह्य = चढ़कर, अवलिह्य = चाटकर, आकृष्य = खींचकर. आघ्राय = सूंघकर, आश्रुत्य = प्रतिज्ञा कर, आसाद्य = पाकर, उत्क्षिप्य = फेंककर, उत्तीर्य = उतरकर, उद्दिश्य = लक्ष्य कर, उद्-घृत्य = निकालकर, उद्यम्य = परिश्रम कर, उपगम्य = पास जाकर, उपभुज्य = खाकर, निपत्य = गिरकर, निपात्य = गिराकर, नियम्य = वश कर, निरीक्ष्य = देखकर, निर्माय = बना कर, निहत्य = मारकर, परित्यज्य = छोड़कर, प्रकृत्य = करके, प्रक्षाल्य = धोकर, प्रक्षिप्य = फेंककर, प्रलिप्य = लेपकर, प्रसह्य = हठकर, प्रसार्य = फैलाकर, बिभिद्य = भेदकर, विमृश्य = विचार कर, सञ्चिन्त्य = विचार कर, सन्तुष्य = खुश कर, सन्दृश्य = देखकर, समागत्य = आकर, समुपेत्य = प्राप्त होकर।

नोट—ल्यबन्त शब्द अव्यय होते हैं। इनके रूप नहीं चलते। इसी प्रकार तव्य, यत्, क्त और तुमुन् आदि प्रत्ययान्त शब्दों के साथ भी उपसर्गों का सम्बन्ध करना चाहिये। जैसे—उपकर्त्तव्यम्, उपकार्यम्, उपकृतम्, उपकर्त्तुम्, उपकार:, उपकृति:, उपकरणम इत्यादि।

अव्ययवर्ग पञ्चमस्तम्भ

अद्यत्वे = अब, इत्थङ्कारम् = इस तरह. कथङ्कारम् = किस तरह, द्राक् ; सद्यः = शीघ्र, चिरात् ; चिरेण = देर से, शश्वत् = सदा, भूरि भूरि = बारम्बार, अन्येद्युः ; अपरेद्युः ; परेद्युः = दूसरे दिन, तदानीम् = तब, दिवा = दिन में, नक्तम् = रात्रि में, ईषत् = थोड़ा, मा; नहि = नहीं, इव = समान, पुरः = पूर्वकाल में, पुरतः = सामने, अन्तः = भीतर, यदि = अगर,

ऋते = बिना, कृते = वास्ते, हेतोः = वास्ते, जोषम् = चुपचाप, उच्चैः = ऊपर, प्राक् = पूर्व, अवाक् = पश्चिम, उदक् = उत्तर, प्रत्यक् = दक्षिण। ये शब्द अव्यय हैं। इनके रूप नहीं चलते।

संस्कृत में अनुवाद करो—

राजा पर्यटन से आकर राजसिंहासन को सुशोभित करते हैं। सूर्योदय होने पर अन्धकार दूर हो जाता है। हठकर क्यों प्रतिज्ञा करते हो। दो किसान खेत में खेत को मिलाने के लिये झगड़ते हैं। राम वन से आकर अयोध्या में नहीं आते हैं। सेवा का फल मीठा निकलता है। साधु भोजन कर आश्रम को रवाना होते हैं। तूं निकालने की प्रतीक्षा करता है। हम सदा विचार कर सलाह देते थे। वे भाषण प्रारम्भ कर अपमान करते हैं। शिष्य ने दूसरे दिन पाठ भुलाया। तेरे मामा ने रात्रि में क्या भेजा।

हिन्दी में अनुवाद करो—

चोरौ वाष्पयानादुत्तीर्य सद्यः पलायनं प्रतीक्षेते। प्राज्ञौ अनुसन्धानं प्रतिज्ञाय अभिमन्येते। गुरवो विमृश्य शिष्यान् दिशन्ति। नक्तं छात्रौ अधीत्य गृहं प्रत्यागच्छतः। शिशवः विश्रम्य क्रीडाक्षेत्रे विवदन्ते। अयमेव गुरुकुलं निर्वहति। कलहस्य मूलं विमृश्य निर्णयथ। सन्तः प्रतिदानेन सुखमनुभवन्ति। पापाद् विरमन्ति साधवः। ऋषिः पर्वतमधिवसति। भवता अन्येद्युः किन्नाधीतम्। तदनीम् गुरुणा तन्निराकृतम्।

अजन्त पुंल्लिंग प्रकरण

अट्टहासः = अधिक हँसना, अनायासः = बिना परिश्रम, अनुनयः = विनय, अपचयः = हानि या कमी, अभिशापः = कोशना, अवतंसः = भूषण, आक्रोशः = गाली देना या चिल्लाना, आक्षेपः = ताना देना, आलेपः = गर्व या विस्तार, आतङ्कः = रौब, या रोग, आदर्शः = नमूना या दर्पण, आप्लवः = स्नान, आमः = कच्चा, आम्नायः = वेद, आयामः = लम्बाई, आयासः = परिश्रम, आरोहः = ऊँचाई, आशयः = अभिप्राय, आस्रवः = कर्मों का आना।

उत्पादः = उत्पत्ति, उत्सङ्गः = गोद, उदन्तः = हाल, उदर्कः = परिणाम या नतीजा, उद्गमः = निकासी, उपक्रमः = आरम्भ, उपचयः = वृद्धि, उपचारः = खुशामद, उपद्रवः = झगड़ा, उपयोगः = इस्तेमाल, उपरागः = ग्रहण, उपसंहारः = समाप्ति, उपस्थः = मूत्रेन्द्रिय, कटकः = सेना, कल्पितोदन्तः = दन्तकथा, कुन्तलः = बिखरे बाल, कुपथः = बुरा मार्ग, कोशः = कली, म्यान या खजाना, घोषः = ग्वाल की झोपड़ी, जीमूतः = मेघ।

तिग्मः = सूर्य, तीव्रविरोधः = घोर विरोध करना, नाकः = स्वर्ग, निग्रहः = सजा या मरण, निदाघः = ग्रीष्म, निमेषः = टिमकार, नियोगः = आज्ञा, निरवग्रहः = मुक्ति या रिहाई, निर्वाहः = गुजारा, निर्वेदः = वैराग्य या उदासीनता, निवहः = समूह; निश्चयः = निश्चय, निवासः = रहना, नीहारः = कुहरा, नैमेयः – लेनदेन, न्यासः = धरोहर।

नोट—ये सभी शब्द पुंल्लिग हैं। इनके रूप बालशब्द के समान चलते हैं।

Scanned by CamScanner

सर्वनाम शब्द

सर्वं; विश्व = सब, उभ; उभय = दो, डतर = दो में से एक, डतम = अनेक में से एक, अन्य; अन्यतर: = दूसरा, इतर = भिन्न, त्वत् ; त्व = दूसरा, नेम = आधा, सम; सिम = सब, पूर्व = पहला, पर = अगला, अवर = अन्त का, दक्षिण = दाहना, उत्तर = बायां, अपर = द्वितीय, अधर = नीच, स्व = अपना, अन्तर = बीच, त्यद्; तद् = वह, यद् = जो, एतद्; इदम् = यह, अदस् = वह, एक = एक, द्वि = दो, युष्मद् = तुम, अस्मद् = हम, भवत् = आप, किम = कौन। ये ३५ सर्वनाम (सर्वादिगणपठित) शब्द हैं।

नोट—इन शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में चलते हैं। इनमें से कुछ शब्दों के रूप इस पुस्तक के प्रथमभाग में पेज ३० से ३४ तक लिखे जा चुके हैं। कुछ शब्दों के रूपों का स्पष्टीकरण इस भाग में यथास्थान किया गया है।

विश्व, अन्य, अन्यतर, डतर, डतम, (इतर, कतर, कतम, यतर, यतम, ततर, ततम, एकतर, एकतम) सम, सिम। शब्द के रूप सर्वशब्द के समान होते हैं। एकशब्द के रूप केवल एक वचन में सर्वशब्द के समान होते हैं। परन्तु 'अनेक' शब्द के रूप तीनों वचनों में सर्वशब्द के समान होते हैं। अन्य शब्द से कतम शब्द तक पांच शब्दों के नपुंसक लिङ्ग के एक वचन में कुछ विशेषता है, जो यथास्थान दिखलाई जावेगी।

उभशब्द के रूप केवल द्विवचन में बालशब्द के समान तथा उभय शब्द के रूप केवल एकवचन और बहुवचन में सर्वशब्द के समान चलते हैं।

प्रथमः = पहला, चरमः = पिछला, द्वितयः = दूसरा, त्रितयः = तीसरा, अल्पः = थोड़ा, अर्धः = आधा, कतिपयः = कुछ, नेमः = आधा।

Scanned by CamScanner

इन शब्दों की प्रथमा के बहुवचन में दो दो रूप होते हैं। जैसे—प्रथमे, प्रथमाः इत्यादि। इन शब्दों के शेषरूप बालशब्द के समान चलते हैं। केवल नेमशब्द के रूप सर्वशब्द के समान चलते हैं।

द्वितीय = दूसरा, तृतीय = तीसरा। शब्द के रूप बाल शब्द के समान चलते हैं। केवल चतुर्थी, पँचमी और सप्तमी के एक वचन में दो दो रूप होते हैं। जैसे—द्वितीयस्मै, द्वितीयाय। इत्यादि।

सर्वादिगण पठित पूर्वशब्द से अन्तर शब्द तक नौ शब्दों की प्रथमा, पञ्चमी और सप्तमी विभक्ति के एकवचन में दो दो रूप होते हैं। जैसे—पूर्वे, पूर्वाः। पूर्वस्मात्, पूर्वात्। पूर्वस्मिन्, पूर्वे। इत्यादि। इन शब्दों के शेषरूप सर्वशब्द के समान चलते हैं।

निर्जर = बुढ़ापारहित या देव

प्र०—निर्जरः, निर्जरसौ निर्जरौ, निर्जरसः निर्जराः। द्वि०—निर्जरसम् निर्जरम्, निर्जरसौ निर्जरौ, निर्जरसः निर्जरान्। तृ०—निर्जरसा निर्जरेण, निर्जराभ्याम् निर्जरैः। च०—निर्जरसे निर्जराय, निर्जराभ्याम्, निर्जरेभ्यः।

पं०—निर्जरसः निर्जरात्, निर्जराभ्याम् निर्जरेभ्यः। ष०—निर्जरसः निर्जरस्य, निर्जरसोः निर्जरयोः, निर्जरसाम् निर्जराणाम्। स०—निर्जरसि निर्जरे, निर्जरसोः निर्जरयोः, निर्जरेषु। सं०—हे हे निर्जर, हे निर्जरसौ हे निर्जरौ, हे निर्जरसः हे निर्जराः।

आकारान्त विश्वपाशब्द

प्र०—विश्वपाः विश्वपौ, विश्वपाः। द्वि०—विश्वपाम् विश्वपौ, विश्वपः। तृ०—विश्वपा, विश्वपाभ्याम्, विश्वपाभिः। च०—विश्वपे, विश्वपाभ्याम्, विश्वपाभ्यः। पं०—विश्वपः, विश्वपाभ्याम्, विश्वपाभ्यः। ष०—विश्वपः विश्वपोः, विश्वपाम्। स०—विश्वपि, विश्वपोः, विश्वपासु। सं०—हे विश्वपाः हे विश्वपौ, हे विश्वपाः।

Scanned by CamScanner

विश्वं पातीति विश्वपाः = संसार के पालनकर्त्ता विष्णु भगवान् ।

अग्निध्मा = अग्नि फूकने वाला, क्षीरपा = दूध पीने वाला, गोपा = ग्वाला, धनपा = धन का पालक, धेनुपा = ग्वाला, निधिपा = कोषाध्यक्ष, पाणिध्मा = हाथ बजाने वाला, मुखध्मा = मुख बजाने वाला, वनपा = वनपाल, शंखध्मा = शंख बजाने वाला, सोमपा = सोमयाजी । इन अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप भी विश्वपा शब्द के समान चलते हैं ।

हाहा = देव या शोकध्वनि

प्र०—हाहाः, हाहौ, हाहाः । द्वि०—हाहाम्, हाहौ, हाहान् । तृ०—हाहा, हाहाभ्याम्, हाहाभिः । च०—हाहै, हाहाभ्याम्,हाहाभ्यः प०—हाहाः, हाहाभ्याम्, हाहाभ्यः । ष०—हाहाः, हाहौः, हाहाम् । स०—हाहे, हाहौः, हाहासु । स०—हे हाहाः, हे हाहौ, हे हाहाः ।

संस्कृत में अनुवाद करो—

बड़ों की विनय का नतीजा सुखद होता है । ईश्वर में उनका विश्वास नहीं है । सब सबको नहीं जानते । अनेक मनुष्य विनय से गर्व करते हैं । एक विद्यालय में दो ही बालक पढ़ते थे । पूर्व काल में पापों की कमी थी । दूसरे मनुष्यके लिये यह देता है । दूसरे ने कुछ पैसे चुराये । शोकध्वनि से सबका चित्त दुखित होता है । नदी का निकास प्रायः पर्वत से होता है ।

हिन्दी में अनुवाद करो—

पूर्वेषामादर्शः सर्वेषामवतसः कथितः । विश्वपि ते विश्वासो नास्ति । अत्राक्षेपस्योपयोगस्यावश्यकता नास्ति । भवतामुपद्रवस्योपसंहारः कदा भविष्यति । निधिपः समीपे कति रूप्यकाणि आसन् । तस्या उत्सङ्गेऽवतंसः शोभते । आमः कलशो वारिणा सद्यो नश्यति । तवाभिशापेन मदीयो बालो मृतः । निर्जरं नर्तनं कृतम् । एकस्मिन् कोशे द्वावसी न विशतः ।

Scanned by CamScanner

इकारान्त पुलिङ्ग शब्द

अपाम्पतिः = समुद्र, अहिः = सर्प, आधिः = मानसिक पीड़ा, आयतिः = उत्तरकाल, उपाधिः = पदवी, छदिः = छत, तिथिः (पु० स्त्री०) = तारीख या मिति, तिमिः = मछली, दृढ़-मुष्टिः = कंजूस, दुर्मतिः = मूर्ख, धूर्जटिः = महादेव, पयोधिः = समुद्र, प्रणिधिः = दूत, प्रतिनिधिः = एवजीदार, मुष्टिः = मुट्ठी, यादसाम्पतिः = समुद्र, शनिः = शनिग्रह, सूरिः = आचार्य या पण्डित।

नोट—इन शब्दों के रूप 'कवि' शब्द के समान चलते हैं। किन्तु तिथि, दृढ़मुष्टि और दुर्मति शब्द के रूप 'मति' शब्द के समान भी चलते हैं।

ईकारान्त पुल्लिङ्ग पपीशब्द

प्र०—पपीः, पप्यौ, पप्यः। द्वि०—पपीम्, पप्यौ, पपीन्। तृ०—पप्या, पपीभ्याम्, पपीभिः। च०—पप्ये, पपीभ्याम्, पपीभ्यः। पं०—पप्यः पपीभ्याम्, पपीभ्यः। ष०—पप्यः, पप्योः, पप्याम्। स०—पपी, पप्योः, पपीषु। सं० हे पपीः, हे पप्यौ, हे पप्यः। पपी = सूर्य।

वातप्रमी (मृग) शब्द के रूप भी पपीशब्द के समान चलते हैं।

ईकारान्त पुल्लिङ्ग बहुश्रेयसीशब्द

प्र०—बहुश्रेयसी,	बहुश्रेयस्यौ	बहुश्रेयस्यः।
द्वि०—बहुश्रेयसीम्	बहुश्रेयस्यौ	बहुश्रेयसीन्।
तृ०—बहुश्रेयस्या	बहुश्रेयसीभ्याम्	बहुश्रेयसीभिः।
च०—बहुश्रेयस्यै,	बहुश्रेयसीभ्याम्,	बहुश्रेयसीभ्यः।
पं०—बहुश्रेयस्याः,	बहुश्रेयसीभ्याम्,	बहुश्रेयसीभ्यः।
ष०—बहुश्रेयस्याः	बहुश्रेयस्योः,	बहुश्रेयसीनाम्।
स०—बहुश्रेयस्याम्,	बहुश्रेयस्योः,	बहुश्रेयसीषु।
सं०—हे बहुश्रेयसि,	हे बहुश्रेयस्यौ	हे बहुश्रेयस्यः।

Scanned by CamScanner

बहुश्रेयसी = कल्याण चाहने वाली बहुत स्त्रियों का स्वामी। इसी प्रकार अतिलक्ष्मी (लक्ष्मी से भी श्रेष्ठ पुरुष) शब्द के रूप होते हैं। परन्तु प्रथमा के एकवचन में अतिलक्ष्मीः रूप होता है।

ईकारान्त प्रधीशब्द के रूप

प्र०—प्रधीः, प्रध्यौ, प्रध्यः। द्वि०—प्रध्यम्, प्रध्यौ, प्रध्यः। तृ०—प्रध्या, प्रधीभ्याम्, प्रधीभिः। च०—प्रध्ये, प्रधीभ्याम्, प्रधीभ्यः। पं०—प्रध्यः, प्रधीभ्याम्, प्रधीभ्यः। ष०—प्रध्यः, प्रध्योः, प्रध्याम्। स०—प्रध्यि, प्रध्योः, प्रधीषु। सं०—हे प्रधीः, हे प्रध्यौ, हे प्रध्यः। प्रधी = उत्तम ध्यानी।

इसी प्रकार ग्रामणी (गाँव का मालिक) सेनानी (सेना का नायक) शब्द के रूप होते हैं। परन्तु सप्तमी के एक वचन में ग्रामण्याम्, सेनान्याम् रूप होते हैं। सुखी (सुख चाहने वाला) सुती (पुत्र चाहने वाला) शब्दों के रूप भी प्रधी शब्द के समान होते हैं। केवल पंचमी और षष्ठी के एक वचन में सुख्युः और सुत्युः रूप होता है।

ईकारान्त नीशब्द के रूप

प्र०—नीः, नियौ, नियः। द्वि०—नियम्, नियौ, नियः। तृ०—निया, नीभ्याम्, नीभिः। च०—निये, नीभ्याम्, नीभ्यः। पं०—नियः, नीभ्याम्, नीभ्यः। ष०—नियः, नियोः, नियाम्। स०—नियि, नियोः, नीषु। सं०—हे नीः, हे नियौ, हे नियः।

नी (ले जाने वाला) यवक्रीः = जो खरीदने वाला, शुद्धधीः = पवित्र बुद्धि वाला, सुश्रीः = श्रेष्ठ शोभायुक्त।

इन शब्दों के रूप भी नीशब्द के समान चलते हैं।

जातिवर्ग तृतीयस्तम्भ

अश्वारोहः = घुड़सवार, आरोहः = सवार, आसिकः = खड्गधारी, उपासकः = श्रावक या भक्त, क्रयिकः, क्रायिकः = ग्राहक,

Scanned by CamScanner

खरीददार या व्यापारी, तुरुष्कः = तुर्किस्तानी, देवाजीवः = पण्डा, धानुष्कः = धनुर्धारी, नैयायिकः = न्यायवेत्ता, पलगण्डः = कारीगर, मौहूर्तिकः = ज्योतिषी, याष्टीकः = लाठीबाज, रथवाहः, रथिकः = रथवान, वागुरिकः = शिकारी, विदूषकः = मसखरा, वैयाकरणः=व्याकरणवेत्ता।

शकटवाहः = गाड़ीवान, शाकुनिकः = चिड़ीमार, शाक्तीकः = भाले वाला, श्वपचः = मेहतर, सस्त्रीकः = सपत्नीक, सूत्रधारः = प्रारम्भकर्ता, हस्तिपकः = महावत। इन शब्दों के रूप बालशब्द के समान चलते हैं।

संस्कृत में अनुवाद करो—

स्कूल की छुट्टी किस तारीख से है। आज यहाँ लाठीबाज क्यों घूमते हैं। सबेरे सूर्य उदित होता है। यह उपाधि आपके लिये किसने दी। इस मकान के छत पर कौन बुलाते हैं। वैयाकरण ने पढ़ाना शुरू किया। नई बहू पति के साथ बाजार में निकलती है। पुत्र चाहने वाले ने यज्ञ किया। समुद्र अपनी सीमा को नहीं लांघता है। आप अपना एवजीदार देते हैं। सेनानायक की सेना में कितने सैनिक हैं। विक्रेता बेचते हैं। सूर्य अनेक हैं।

हिन्दी में अनुवाद करो—

सखा सख्या सह पर्यटति। दुर्मतयो मिथो वृथा विवदन्ते। गिरौ गत्वा भवता किं दृष्टम्। रवेर्मरीचयः उष्णा प्रभवन्ति। शेवधौ साम्प्रतं कति रूप्यकाणि विद्यन्ते। नैयायिका न्यायमध्यापयन्ति। गोपतयस्तत्र स्थातुं तं निषेधन्ति। भूपतिना प्रणिधिराज्ञप्तः। सायमत्र वागुरिका आगच्छन्ति। रथवाहकः सस्त्रीकं त्वामाह्वयति। मौहूर्तिका आयतौ हितं नानुमन्यन्ते। विदूषका अन्योन्यं प्रशंसन्ति। कतीनां मानवानां भोजनं भविष्यति द्वयोरथवा त्रयाणाम्।

Scanned by CamScanner

उकारान्त पुल्लिङ्गशब्द

असुः = प्राण, ऋजुः = सीधा, कमण्डलुः = लोटा या कमण्डलु, कुन्दरुः = कुन्दरू शाक, केतुः = ध्वजा, गुरुः = बृहस्पति, चाटुः = प्रियवचन, चाटुचाटुः = खुशामदी, तर्कुः = तकुआ, धातुः = धातु, पंगुः = लँगड़ा, पटुः = चतुर, पिचुः = कपास, वटुः = बालक, भीरुः = डरपोंक, मन्युः = क्रोध, सूनुः = लड़का, स्वादुः = मीठा।

इनके रूप साधुशब्द के समान होते हैं। किन्तु चाटुचाटु, पंगु, पटु, भीरु और स्वादु शब्द के रूप स्त्री और नपुंसक लिङ्ग में तनु और वस्तु शब्द के समान भी होते हैं।

अलङ्करिष्णुः = सजाने वाला, आशंसुः = कहने वाला, उत्पतिष्णुः = उछलने वाला, चरिष्णुः = करने वाला, निराकरिष्णुः = दूर करने वाला, परमाणुः = पुद्गल का छोटा टुकड़ा, भविष्णुः, भूष्णुः = होने वाला, राहुः = राहुग्रह, वर्तिष्णुः = होने वाला, वर्धिष्णुः = बढ़ने वाला, सहिष्णुः = सहने वाला, स्थास्नुः = अतिस्थिर।

नोट—इन शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में क्रमशः साधु, तनु और वस्तु शब्द के समान होते हैं।

क्रोष्टु (शियार) शब्द के रूप

प्र०—क्रोष्टा, क्रोष्टारौ, क्रोष्टारः। द्वि०—क्रोष्टारम्, क्रोष्टारौ, क्रोष्टून्। तृ०—क्रोष्ट्रा, क्रोष्टुना, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभ्यः। च०—क्रोष्ट्रे क्रोष्टवे, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभ्यः। पं०—क्रोष्टुः क्रोष्टोः, क्रोष्टुभ्याम्, क्रोष्टुभ्यः। ष०—क्रोष्टुः क्रोष्टोः, क्रोष्ट्रोः, क्रोष्ट्वोः, क्रोष्टूनाम्। स०—क्रोष्टरि क्रोष्टौ, क्रोष्ट्रोः क्रोष्ट्वोः, क्रोष्टुषु। सं०—हे क्रोष्टो, हे क्रोष्टारौ, हे क्रोष्टारः।

Scanned by CamScanner

ऊकारान्त हूहूशब्द

प्र—हूहूः, हूह्वौ, हूह्वः। द्वि०—हूहूम् हूह्वौ, हूहून्। तृ०—हूह्वा, हूहूभ्याम्, हूहूभिः। च०—हूह्वे, हूहूभ्याम्, हूहूभ्यः। पं०—हूह्वः, हूहूभ्याम्, हूहूभ्यः। ष०—हूह्वः, हूह्वोः, हूह्वाम्। स०—हूह्वि, हूह्वोः, हूहूषु। सं०—हे हूहूः, हे हूह्वौ, हे हूह्वः।

हूहू = गन्धर्व या देवताओं का गवैया।

ऊकारान्त अतिचमूशब्द

प्र०—अतिचमूः, अतिचम्वौ, अतिचम्वः। द्वि०—अतिचमूम्, अतिचम्वौ, अतिचमून्। तृ०—अतिचम्वा, अतिचमूभ्याम्, अतिचमूभिः। च०—अतिचम्वै, अतिचमूभ्याम्, अतिचमूभ्यः। पं०—अतिचम्वाः, अतिचमूभ्याम्, अतिचमूभ्यः। ष०—अतिचम्वाः, अतिचम्वोः, अतिचमूनाम्। स०—अतिचम्वाम्, अतिचम्वोः, अतिचमूषु। शं०—हे अतिचमु, हे अतिचम्वौ, हे अतिचम्वः। अतिचमू = अधिकसेनावान्।

खलपू (खलिहान साफ करने वाला)

प्र०—खलपूः, खलप्वौ, खलप्वः। द्वि०—खलप्वम् खलप्वौ, खलप्वः। तृ०—खलप्वा, खलपूभ्याम्, खलपूभिः। च०—खलप्वे, खलपूभ्याम्, खलपूभ्यः। पं०—खलप्वः खलपूभ्याम्, खलपूभ्यः। ष०—खलप्वः, खलप्वोः, खलप्वाम्। स०—खलप्वि, खलप्वोः, खलपूषु। सं०—हे खलपूः, हे खलप्वौ, हे खलप्वः।

करभू = हाथ से उत्पन्न होने वाला, दृन्भू = वज्र, पुनर्भू = फिर होने वाला, वर्षाभू = वर्षा में पैदा होने वाला मेंढ़क, सुलू = अच्छी तरह काटने वाला।

इन शब्दों के रूप भी खलपूशब्द के समान होते हैं।

Scanned by CamScanner

स्वयम्भू (ब्रह्मा) शब्द के रूप

प्र०—स्वयम्भूः, स्वयम्भुवौ, स्वयम्भुवः। द्वि०—स्वयम्भुवम्, स्वयम्भुवौ, स्वयम्भुवः। तृ०—स्वयम्भुवा, स्वयम्भूभ्याम्, स्वयम्भूभिः च०—स्वयम्भुवे, स्वयम्भूभ्याम्, स्वयम्भूभ्यः। पं०—स्वयम्भुवः, स्वयम्भूभ्याम, स्वयम्भूभ्यः। ष०—स्वयम्भुवः, स्वयम्भुवोः, स्वयम्भुवाम्। स०—स्वयम्भुवि, स्वयम्भुवोः, स्वयम्भूषु। सं०—हे स्वयम्भूः, हे स्वयम्भुवौ, हे स्वयम्भुवः। स्वयम्भू = ब्रह्मा।

आत्मभू = ब्रह्मा, प्रतिभू = जामिनदार, स्वभू = ब्रह्मा। शब्द के रूप स्वयम्भूशब्द के समान चलते हैं।

ऋकारान्त भ्रातृ (भाई) शब्द के रूप

प्र०—भ्राता, भ्रातरौ, भ्रातरः। द्वि०—भ्रातरम्; भ्रातरौ, भ्रातॄन्। तृ—भ्रात्रा, भ्रातृभ्याम्, भ्रातृभिः। च०—भ्रात्रे, भ्रातृभ्याम्, भ्रातृभ्यः। पं०—भ्रातुः, भ्रातृभ्याम, भ्रातृभ्यः। ष०—भ्रातुः, भ्रात्रोः, भ्रातॄणाम्। स०—भ्रातरि, भ्रात्रोः, भ्रातृषु। सं०—हे भ्रातः, हे भ्रातरौ, हे भ्रातरः।

जामातृ = दामाद, नृ = मनुष्य, पितृ = पिता।

इन शब्दों के रूप भ्रातृशब्द के समान होते हैं। परन्तु नृशब्द की षष्ठी के बहुवचन में भेद हैं, दो रूप होते हैं। जैसे—नॄणाम्, नृणाम्।

औकारान्त ग्लौ (चन्द्र) शब्द के रूप

प्र० – ग्लौः, ग्लावौ, ग्लावः। द्वि०—ग्लावम्, ग्लावौ, ग्लावः। तृ—ग्लावा, ग्लौभ्याम्, ग्लौभिः। च०—ग्लावे, ग्लौभ्याम्, ग्लौभ्यः। पं०—ग्लावः, ग्लौभ्याम्, ग्लौभ्यः। ष०—ग्लावः, ग्लावोः, ग्लावाम्। स०—ग्लावि, ग्लावोः, ग्लौषु। सं०—हे ग्लौः, हे ग्लावौ, हे ग्लावः। ग्लौ = चन्द्रमा।

Scanned by CamScanner

❋ देव वर्ग ❋

आचार्यः = दीक्षागुरु या पण्डित, उपाध्यायः = साधुओं का शिक्षक, कुबेरः = कुबेर, गजाननः = गणेश, दिवाकरः = सूर्य, त्र्यम्बकः = महादेव, निशाकरः = चन्द्र, पद्मा = लक्ष्मी, पुरुषोत्तमः = विष्णु, बुधः = बुध ग्रह या विद्वान्, भार्गवः = शुक्र, भौमः, मङ्गलः = मङ्गल, मा = लक्ष्मी, मार्तण्डः = सूर्य, यमः = यम ग्रह या काल, लेखः = देव, विनायकः = गणेश, शुक्रः = शुक्र, षडाननः = कार्तिकेय, सहस्राक्षः = इन्द्र, सिद्धः = मुक्त या अकर्मा, सोमः = चन्द्र ।

अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

अकिञ्चनः = दरिद्र या गरीब, अत्रत्यः = यहाँ का, अधीरः = भीरु, अल्पवयस्कः = कम उम्र वाला, अष्टमः = आठवां, आर्यमिश्रः = अत्युत्तम, इत्वरः = नीच, एकागारिकः = चोर, एकादशः = ग्यारहवां, कर्णेजपः = चुगलखोर, कातरः = डरपोक, कुत्रत्यः = कहां का, कोविदः = विद्वान, कौक्कुटिकः = चुगलखोर, गताक्षरः, निरक्षरः = मूर्ख, चाटः = विश्वासघाती या उचक्का, चिरक्रियः = आलसी, जय्यः = जीतने योग्य ।

तत्रत्यः = वहां का, तुण्डिलः = लम्बोदर, तैमरिकः = रतौंधिया, दग्धः = जला हुआ, दशमः = दशवां, दुर्विनीतः = अविनयी, देवानाम्प्रियः = मूर्ख, दोषज्ञः = विद्वान्, धन्यधन्यः = भाग्यवानों में श्रेष्ठ, नवमः = नौवां, पिण्डीरः = खाने में बहादुर, प्रगुणः = सीधा, प्रतारितः = ठगा हुआ, प्रत्यग्रः = नवीन, प्रवणः = झुका हुआ, प्रवरः = उत्तम, प्रवीणः = चतुर, प्रौढ़ः = निपुण, बालिशः = बेवकूफ या अल्पज्ञ, भक्षकः = खाने वाला, भव्यः = भद्र या सज्जन, भ्रामकः = घुमाने वाला, भूचरः = मनुष्य, भ्रूणः = गर्भस्थ बालक, मान्यमान्यः = माननीयों में

Scanned by CamScanner

श्रेष्ठः, मायिकः = कपटी, मितम्पचः = कंजूस, मिश्रः = श्रेष्ठ, मुग्धः = मूर्ख, मूर्च्छालः = बेहोश, प्रतीक्षालयः = मुसाफिरखाना।

इन दो स्तम्भों के शब्दों के रूप बालशब्द के समान होते हैं। ये स्त्रीप्रत्यय लगा देने से स्त्रीलिङ्ग में तथा नपुंसकों के विशेषण करने से नपुंसक में भी चल सकते हैं।

संस्कृत में अनुवाद करो

बच्चों (सूनु) के वचन प्रिय (चाटु) लगते हैं (प्रतिभान्ति)। ऋषि उपाध्याय से पढ़ते थे। शियार की चाल सबसे तेज होती है। राम का भाई पर भारी स्नेह था। पण्डितों ने दामाद की गिनती दुश्मनों में की है। पिता की सेवा पुत्र का धर्म है। प्रशस्त कार्यों में विनायक की पूजा होती है। इन्द्र सहस्राक्ष क्यों कहा जाता है। वह भाई के कोप से भीत था। क्या तुम सब ब्रह्मा हो। मूर्ख शिशु चन्द्र को (ग्लावम्) देखते थे। नीच, साधुओं की निन्दा करते थे। ब्रह्मा को नमस्कार हो। वे बच्चों को (सूनुभ्यः) मिठाई देंगे। होनहार के (भविष्णुम्) के प्रति मेरा विश्वास नहीं।

हिन्दी में अनुवाद करो—

अलङ्करिष्णुः भूषणानि अलङ्करोति। दिवाकरः प्रातः उदेति, निशाकरस्तु सायम्। गजाननः षडाननश्च त्र्यम्बकस्य पुत्रौ विद्येते। पुरुषोत्तमस्य पत्नी पद्मा प्रसिद्धा। यमः सर्वान् आदत्ते, कानपि नो परित्यजति सहिष्णुः सर्वत्र सफलतां समवाप्नोति। वर्षाभ्वाम् ध्वनिः भाविनीं वर्षां सूचयति। स्वम्भुवः चत्वारि मुखानि आसन्। नुः कायः अपराधानां कोशः प्रोक्तः। वायुनास्माकं विश्वे तरवो भग्ना। किं भवन्तः प्रतिभुवः विद्यन्ते। नृपो भिक्षुभ्यो रायं वितरति। ग्रामीणाः ग्रामण्यम् अर्चयन्ति। श्वसुरः जामातरमुपदिशन्ति। पित्रा सह भ्राता काशीं याति। वक्ता श्रोतारमुपदिशति। उपकर्तुः उपकारं नो विस्मर।

Scanned by CamScanner

सामान्य शिक्षा-वली

अगालितं नीरं न पेयम्। अदत्तं परवस्तु नादेयम्। आखेटकं नाचरणीयम्। आतुरे करुणा कर्तव्या। कर्तव्यमद्यैव कर्तव्यम्। कलहः केनापि नो करणीयः। कस्यचित् चित्तं न पीडय। कोपात् दूरमपसर। गुरुभ्यः प्रातः नमस्कारं विधेहि। गुरूणां निन्दा नाचरणीया। गुरूणामाज्ञां सदा पालय। ज्वरादौ लङ्घनं पथ्यम्।

द्यूतक्रीडा न कर्तव्या। निशायां भोजनं नो विधेयम्। पठने प्रमादो न विधेयः। प्रमादः सदा परिहर्तव्यः। प्रातः उत्थाय मूलमन्त्रं स्मर। ब्रह्मचर्यमाचर। मार्गे गच्छन्नो अद्धि। विद्या सदा चेतव्या। शठे शाठ्यं समाचरेत्। शिष्टाचारो न विस्मरणीयः। सदा सत्यं समाचर। सदा हितं, मितं, प्रियञ्च वक्तव्यम। सर्वैः मेलं विधेहि।

शिक्षा-माहात्म्य

विद्यारत्नं महाधनम्। धनमन्यद्दानेन क्षयं याति। इदं त्वक्षयं भूत्वोत्तरोत्तरं वर्धते एव। इदं हि बन्धुभिर्न विभज्यते। चौरैरपि नापह्रियते। राजा केवलं स्वस्य प्रजाभिरेवाद्रियते। बुधस्तु सर्वेषामेवादरभाजनं भवति। यस्यैतद्धनमस्ति स मर्त्यो ऽपि देव इव राजते।

स हि शुभमशुभं, कर्त्तव्यमकर्त्तव्यञ्च निर्णीय स्वस्य परेषाञ्च दुःखमपनयति। कुलीनो ऽप्यकुलीनो वा, धनी निर्धनो वा यथाविधि विद्यामर्जयेत्। यदि वनवासिनो ऽन्त्यजाश्च विद्यावन्तो ऽभविष्यन् तदा तेषामेव दुरवस्था नाभविष्यत। यः कोऽपि विद्यां शिक्षते स स्ववृत्तेरुत्कर्षमुत्पादयेत्।

Scanned by CamScanner

❀ अथ अजन्त स्त्रीलिङ्ग ❀

अकारान्त शब्द

अटाट्या = घूमना, अनूढा = बिना व्याहो, अराजकता = अन्धाधुन्धी, आख्या = नाम, इषोका = सींका, ईहा = तर्क, ऊढा = व्याहो, कनिष्ठा = छोटी, कन्यका = कन्या, कमलाग्रजा = धूलि, कमलालया = लक्ष्मी, करण्डिका = पिटारो, कर्णजलूका = कानखजूरा, क्षणदा = रात्रि, खल्या = खलिहान, गन्धमुखा = छछूंदर, गालिका = गाली, गृहगोधा = गिलहरी, घोषणा = मुनादी।

चिञ्चा = इमली, चूल्हिका = चूल्हा, चूडा = शिखा, जन-संख्या = आबादी, जृम्भा = जंभाई, तृष्णा = लोभ, दुर्गा = काली, देशना = उपदेश, दोला = हिंडोला, धिषणा = बुद्धि, निर्जरा = निर्जरा, नुन्ना = प्रेरित, न्यूनता = कमी, फटा = फणा, विम्वा = कुदरू, मञ्चिका = मचान या कुरसी, मात्रा = स्वरों के चिन्ह, मालिका = माला, मित्रता = दोस्ती।

रमा = लक्ष्मी, राका = पूर्णिमा, रूक्षता = रूखापन, रेवा = नर्मदा, रोरुदा = वहुत रोना, लाक्षा = लाख, लालसा = चाह, व्यूढा = विवाही, शत्रुता = दुश्मनी, शम्बा = शाण, शिविका = पालकी, शुण्डा = सूंड़, समा (वहु व०) वर्ष, सहायता = मदद, सुधा = अमृत; गट्टी या चूना, सुषमा = शोभा, सूत्या = जवान, स्निग्धता = चिकनाई, स्पर्धा = डाह। इन स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप लताशब्द के समान होते हैं।

जरा (बुढ़ापा) शब्द के रूप

प्र०—जरा, जरसौ जरे, जरसः जराः। द्वि०—जरसम् जराम् जरसौ जरे, जरसः जराः। तृ—जरसा जरया, जराभ्याम्, जराभिः

च०—जरसे जरायै, जराभ्याम्, जराभ्यः। पं०—जरसः जरायाः, जराभ्याम्, जराभ्यः। ष०—जरसः जरायाः, जरसोः, जरयोः, जरसाम् जराणाम्। स०—जरसि जरायां, जरसोः जरयोः, जरासु। सं०—हेजरे, हेजरसौ जरे, हेजरसः जराः।

स्त्रीलिङ्ग गोपाशब्द के रूप विश्वपाशब्द के समान होते हैं। अम्बा (माता) शब्द के रूप लताशब्द के समान होते हैं। केवल सम्बोधन के एकवचन में 'हे अम्ब' रूप होता है।

सर्वनाम स्त्रीलिङ्ग शब्द

विश्वा, अन्या, अन्यतरा, इतरा, कतरा, कतमा, समा, सिमा, नेमा, पूर्वा, परा, अन्तरा, स्वा शब्द के रूप सर्वाशब्द के समान होते हैं। स्त्रीलिङ्ग एका, द्वि और त्रि शब्द के रूप 'प्रथम भाग' में दिये जा चुके हैं।

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

उष्टिः = निवास, कीर्तिः = नामवरी, कृतिः = रचना या कार्य, क्षतिः = हानि, क्षान्तिः = क्षमा, छविः = शोभा, जनिः = स्त्री, दृष्टिः = नजर, धृतिः = धैर्य, नतिः = प्रणाम, पद्धतिः = रास्ता, पापर्धिः = शिकार, प्रतिपत्तिः = सिद्धि या सत्कार, प्राप्तिः = लाभ, भृतिः = नौकरी, भ्रान्तिः = भ्रम, यतिः = विश्राम, वर्तिः = वत्ती, विच्छित्तिः = विनाश, विपत्तिः = आपत्ति, विरतिः = त्याग, विष्टिः = वेतन, विसृष्टिः = छुट्टी, विस्तृतिः = चौड़ाई, वृत्तिः = आजीविका, सिद्धिः = सफलता, संसृतिः = संसार, संहतिः = समूह, हारिः = गली। इन स्त्रीलिङ्गशब्दों के रूप मतिशब्द के समान होते हैं।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

अन्तर्वत्नी = गर्भवती, अलौकिकी = अपूर्व, आग्नेयी = आग्नेय, आर्हती = अरिहन्त सम्बन्धी, आलापयन्त्री = टेलीफोन,

Scanned by CamScanner

आसन्दी = आरामकुरसी या आसनी, ऐशानी = ईशान, कर्त्री = करने वाली, काञ्ची = करधौना, कादम्बिनी = मेघमाला, कालिन्दी = यमुना, क्रोष्टी = शृगाली, गर्दभी = गधी, गोष्ठी = सभा, जगती = भूमि, तावकी = तेरी; दम्पती = पतिपत्नी, दैनन्दिनी = डायरी, निःश्रेणी = नसैनी या सीढ़ी, नैर्ऋती = नैर्ऋत्य।

पुरन्ध्री = पति वा पुत्र वाली, पेशी = हिस्सा, प्रणाली = पनाला, भवती = आप, भानवी = सूर्य सम्बन्धी, मन्त्रिणी = मंत्रिन, महती = बड़ी, मैत्री = मित्रता, मेध्री = महदी राजन्वती = उत्तम राजा वाली, वल्लरी = अनाज की बाल, वायवी = वायव्य, विदुषी = पढ़ी लिखी, शैली = रीति या ढंग, सप्तपदी = सप्तवचनदान, सामग्री = वस्तु, सौरभेयी = गाय, हर्त्री = चुराने वाली।

इन ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप महीशब्द के समान होते हैं।

श्री (शोभा) शब्द के रूप

प्र०—श्रीः, श्रियौ, श्रियः। द्वि०—श्रियम्, श्रियौ, श्रियः। तृ०—श्रिया, श्रीभ्याम्, श्रीभिः। च०—श्रिये श्रियै, श्रीभ्याम्, श्रीभ्यः। पं०—श्रियः श्रियाः, श्रीभ्याम्, श्रीभ्यः। ष०—श्रियः श्रियाः, श्रियोः, श्रियाम् श्रीणाम्। स०—श्रियि, श्रियाम्, श्रियोः, श्रीषु। सं०—श्रीः, श्रियौ, श्रियः।

स्त्री (औरत) शब्द के रूप

प्र०—स्त्री, स्त्रियौ, स्त्रियः। द्वि०—स्त्रियम् स्त्रीम्, स्त्रियौ स्त्रियः स्त्रीः। तृ०—स्त्रिया, स्त्रीभ्याम्, स्त्रीभिः। च०—स्त्रियै, स्त्रीभ्याम्, स्त्रीभ्यः। पं०—स्त्रियाः स्त्रीभ्याम्, स्त्रीभ्यः। ष०—स्त्रियाः, स्त्रियोः, स्त्रीणाम्। स०—स्त्रियाम्, स्त्रियोः, स्त्रीषु। सं०—हे स्त्रि, हे स्त्रियौ, हे स्त्रियः।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

अलाबु = तुम्बी, बाहु (पु० स्त्री०) = भुजा, पादुः पादुका =

Scanned by CamScanner

जूता या खड़ाऊं, भीरु = स्त्री, सिन्धु = नदी, सीधु = मदिरा, हनु = ठुड्डी। इन स्त्रीलिङ्गशब्दों के रूप तनुशब्द के समान होते हैं।

ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

करभोरू = हाथी के समान जांघों वाली, कर्कन्धू = बेर, कारू = बढ़इन, खर्जू = खाज, पंगू = लँगड़ी, प्रसू = माता, वामोरू = बांई जांघ, श्वश्रू = सास। इन शब्दों के रूप वधूशब्द के समान होते हैं।

भू (जमीन) शब्द के रूप

प्र०—भूः, भुवौ, भुवः। द्वि—भुवम्, भुवौ, भुवः। तृ०—भुवा, भूभ्याम्, भूभिः। च०—भुवे, भूभ्याम्, भूभ्यः। पं०—भुवः, भूभ्याम्, भूभ्यः। ष०—भुवः, भुवोः, भुवाम्। स०—भुवि, भुवोः, भूषु। सं०—हे भूः, हे भुवौ, हे भुवः।

पुनर्भू = व्यभिचारिणी, भ्रू = भौंह, मल्लभू = अखाड़ा, स्वभू, स्वयम्भू = माया या प्रकृति। शब्द के रूप भी भूशब्द के समान होते हैं।

ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग मातृशब्द

प्र०—माता, मातरौ, मातरः। द्वि०—मातरम्, मातरौ, मातॄः। तृ०—मात्रा, मातृभ्याम्, मातृभिः। च०—मात्रे, मातृभ्याम्, मातृभ्यः। पं०—मातुः, मातृभ्याम्, मातृभ्यः। ष०—मातुः, मात्रोः मातॄणाम्। स०—मातरि, मात्रोः, मातृषु। सं०—हे मातः, हे मातरौ, हे मातरः।

दुहितृ = लड़की, ननान्दृ = ननद, यातृ = गमनकर्त्री। शब्दों के रूप भी मातृशब्द के समान होते हैं।

स्वसृ (बहिन) शब्द के रूप

प्र०—स्वसा, स्वसारौ, स्वसारः। द्वि०—स्वसारम्, स्वसारौ, स्वसॄः। शेष रूप मातृशब्द के समान होते हैं।

Scanned by CamScanner

ओकारान्त द्यो (आकाश) शब्द

प्र०—द्यौः, द्यावौ, द्यावः। द्वि०—द्याम् , द्यावौ, द्याः। तृ०—द्यवा, द्योभ्याम्, द्योभिः। च०—द्यवे, द्योभ्याम्, द्योभ्यः। प०—द्योः, द्योभ्याम्, द्योभ्यः। ष०—द्योः द्यवोः, द्यवाम्। स०—द्यवि, द्यवोः, द्योषु। सं०—हे द्यौः, हे द्यावौ, हे द्यावः।

इसी प्रकार गो = गाय; किरण या। भूमिशब्द के रूप होते हैं।

औकारान्त नौ (नाव) शब्द

प्र०—नौः, नावौ, नावः। द्वि०—नावम्, नावौ, नावः। तृ०—नावा, नौभ्याम्, नौभिः। च०—नावे, नौभ्याम्, नौभ्यः। पं०—नावः, नौभ्याम्, नौभ्यः। ष०—नावः, नावोः, नावाम्। स०—नावि, नावोः, नौषु। सं०—हे नौः, हे नावौ, हे नावः।

विशेषणात्मक त्रिलिङ्ग शब्दवर्ग

यत्रत्यः = जहाँ का, राजघः = राजघाती, लज्जमानः = शर्मिन्दा, लम्पकः = लम्पट, लोकोत्तरः = सर्वोत्तम, वर्यः = उत्तम, वाचाटः = बकवादी, विकटः = विशालः विकर्मस्थः = बदचलन, विकलः = घबराया हुआ, विग्रः = नकटा, विलक्षः, विस्मयापन्नः = विस्मित या हैरान, वैहासिकः = दिल्लगीबाज, विंशतितमः = बीसवाँ।

शततमः = सौवाँ, शावकः = बच्चा, श्मश्रुलः = डढ़ियलः, श्रान्तः = थका हुआ, सत्त्वः = प्राणी, सनातनः = प्राचीन, सपत्नः = शत्रु, सहृदयः = दयालु, संशयापन्नः = संशय में पड़ा, स्थविरः = बुड्ढा।

इनके रूप यथायोग्य तीनों लिङ्ग में बाल, लता और ज्ञानशब्द के समान होते हैं। स्त्रीलिङ्ग में स्त्रीबोधकप्रत्यय जोड़ना चाहिये।

संस्कृत में अनुवाद करो—

पण्डित गाय को देवता कहते हैं। सास बहुओं से पूछती थी। नोकरानी सींके की रस्सी लाती है। डायरी के लिखने की यह रीति नहीं है। ननद ने बहू को गालियाँ दीं। लड़कियाँ माताओं को मालाओं से पूजती हैं। रस्सो से शिला पर रेख हो जाती है। ग्वाल की दश गायों की मुनादी थी। जवान गाय ने गली में अपना बच्चा छोड़ा। पतिपत्नी सन्तति के लिये देवी को पूजते हैं। बड़ी बहिन बहिन को बुलाती है। पाठिका लड़कियों से कहती है। माताएँ बहुओं को उपदेश देती हैं। दो स्त्रियाँ दो को छूती हैं। गर्भवती के शरीर में सौन्दर्य नहीं है।

हिन्दी में अनुवाद करो—

अम्ब ! त्वामन्तर्वत्नी वधू वंन्दते। चम्वौ विश्रामं वाञ्छतः। विदुष्यौ दुहितरौ साधून्पृच्छतः। विकले कन्ये औषधीः सिञ्चतः। अतत्या पादपो राजते। मदीयाः कृतयो जगत्यामलौकिक्यो विद्यन्ते। कामिन्याः गत्या हंसो जितः। वर्षायां तिथौ महोत्सवो भविष्यति। साम्प्रतं महती अराजकता विद्यते। सा विजयाख्यया विश्रुता। श्रीमत्याः विवाहः कदाभूत्। विकर्मस्था भवत्यः कुत्र यान्ति। सरस्वत्यै नमः। वध्वः श्वश्रूं प्रणमन्ति। अत्रत्या बालिका विदुष्यो विद्यन्ते। प्रतीच्या नद्यो ऽब्धिं प्रति गच्छन्ति। 'सुधायाः' तनोः सौन्दर्यं प्रसिद्धम्।

* अजन्त नपुँसकलिंग प्रकरण *

अकारान्त नपुँसकलिङ्ग शब्द

अघम् = पाप, अचित्तम् = जीवरहित, अच्छम् = साफ, अजीर्णम् = बदहजमी, अज्ञानम् = बेवकूफी, अण्डम् = अण्डा, अधिजनम् = वंशज, अनघम् = स्वच्छ, अनुपदम् = पीछे, अनेकान्तम् = स्याद्वाद, अन्तरम् = अन्तर, अन्तरालम् = बीच या भीतरी, अन्तर्द्वारम् = खिड़की, अभिज्ञानम् = नमूना या चिन्ह, अभिव्यक्तम् = प्रगट, अभ्यर्णम् = पास, अभ्रम् = मेघ, अरण्यम् = जंगल, अर्गलम् = जंजीर, अलकम् = ललाट, अलीकम् = व्यर्थ या झूठ, अवगुण्ठनम् = परदा या घूंघट, अस्तोकम् = बहुत, आकस्मिकम् = अनायास हुआ, आतपत्रम् = छाता, आम्रेडितम् = द्विरुक्त आलानम् = गजबन्धिनी, इन्द्रायुधम् = इन्द्रधनुष, ईषद्धसनम् = मन्दहास्य।

कमनीयम् = मनोहर, कलम् = मधुर, कलत्रम् = स्त्री, कलापकम् = चार पद्यों का समूह, कल्मषम् = पाप, काकुदम् = कांदोल, काचलवणम् = सोड़ा, कुतुकम् = कौतुक, कुलकम् = चार से अधिक पद्यों का समूह, कैतवम् = दुष्टता, क्षौरम् = हजामत, खनिजम् = खानि से उत्पन्न, गतियन्त्रम् = एंजिन या साइकिल, गरलम् = विष, गर्तम् = गड्ढा, गिरिजम् = पर्वत से उत्पन्न, गोमयम् = गोबर, चामीकरम् = सुवर्ण, चिक्कणम् = चिकना, चुलुकम् = चूल्लू।

तरलम् = चञ्चल, ताम्बूलाधानम् = मचला, तुण्डम् = मुख, तुमुलम् = भारी, तूलम् = रुई, दलम् = पत्ता, दूषणम् = ऐब; या एतराज, द्रुतम् = शीघ्र, द्वीपम् = टापू, धरातलम् = भूमि, धारामृतम् = फुव्वारा, ध्वान्तम् = अन्धकार, नामधेयम् = नाम, निघ्नम् = अधीन निदर्शनम् = नमूना, निधनम् = मृत्यु, निधानम् = खजाना, निभृतम् = चुपचाप, निष्प्रभम् = निस्तेज, निहितम् = रखी हुई।

Scanned by CamScanner

इन शब्दों के रूप ज्ञानशब्द के समान होते हैं।

सर्वादिगणपठित नपुँसकलिङ्ग शब्द

प्र०—सर्वम्, सर्वे, सर्वाणि। द्वि०—सर्वम्, सर्वे, सर्वाणि।

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान होते हैं। इसी प्रकार अन्य सर्वनाम शब्दों के रूप होते हैं।

अकारान्त नपुँसकलिङ्ग कतर शब्द

कतरत्-द्, कतरे, कतराणि। द्वि०—कतरत्-द्, कतरे, कतराणि।

कतर शब्द के शेष रूप इसी शब्द के पुल्लिङ्ग के समान होते हैं। कतम, अन्य, अन्यतर, इतर शब्द के रूप भी कतर शब्द के समान होते हैं

अकारान्त नपुँसकलिङ्ग श्रीपाशब्द

प्र०—श्रीपम्, श्रीपे, श्रीपाणि। द्वि०—श्रीपम्, श्रीपे, श्रीपाणि शेषरूप ज्ञानशब्द के समान होते हैं।

अकारान्त नपुँसकलिङ्ग शब्द

पङ्कजम् = कमल, पञ्चत्वम् = मरण, परस्परम् = आपस में, पर्यवसानम् = अन्त, पललम् = पियार, पलम् = मांस, पल्वलम् = तलैया, पाणिपीडनम् = विवाह या हाथलेवा, पीयूषम् = अमृत, पुरावृत्तम् = पूर्ववृत्त, पुष्कलम् = पर्याप्त, प्रतिक्षणम् = हरवक्त, प्रतिमानम् = तसवीर या परछाँई, प्रतीरम् = किनारा, प्रभातम् = सवेरा, प्रसाधनम् = सजावट, प्राचीरम् = हाता, बाड़ा या परकोटा, प्राभृतम् = भेंट या शिरवत, प्रेक्षामन्दिरम् = थियेटर।

फलकम् = पटिया, फेनम् = झाग, फेनिलम् = झागदार, बहिरङ्गम् = बाहिरी, बाहुयुद्धम् = कुश्ती, बीजम् = कारण,

बीभत्सम् = घृणित, बुसम् = भुस, भङ्गित्वम् = जालसाजी, भणित्वम् = भुनी बाल, भव्यम् = शुभ; कुशल, सत्य या शानदार, भागधेयम् = भाग्य, भालम् = ललाट, भावितम् = छौंका हुआ, भासुरम् = चमकदार, भीषणम् = भयङ्कर, भोज्यम् = खाने योग्य।

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप वारिशब्द के समान होते हैं। अक्षि = आँख, अस्थि = हड्डी, सक्थि = जांघ। शब्दों के रूप दधिशब्द के समान होते हैं।

दधि शब्द के रूप

प्र०—दधि, दधिनी, दधीनि। द्वि०—दधि, दधिनी, दधीनि। तृ० = दध्ना, दधिभ्याम्, दधिभिः। च०—दध्ने, दधिभ्याम्, दधिभ्यः। पं०—दध्नः, दधिभ्याम्, दधिभ्यः। ष०—दध्नः, दध्नोः, दध्नाम्। स०—दध्नि, दधनि, दध्नोः, दधिषु। सं०—हे दधे, हे दधि, हे दधिनी, हे दधीनि।

उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

अगुरु = शीशम, अम्बु = जल, अश्रु = आँसू, जतु = जवा, जानु = घुटना, दारु = लकड़ी, मधु = शहद, मृदु = कोमल, शंकु = काँटा, सानु = शिखर, हनु = हथयार। शब्द के रूप वस्तुशब्द के समान होते हैं।

नपुंसक लिङ्ग शब्दों के अन्त का दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे—ग्रामणी या सुधी शब्द दीर्घ ईकारान्त है वह नपुंसकलिङ्ग में ह्रस्व 'ग्रामणि' वा 'सुधि' हो जायगा। इसी तरह दीर्घ ऊकारान्त को ह्रस्व उकारान्त, दीर्घ ॠकारान्त को ह्रस्व ऋकारान्त, ऐकारान्त तथा एकारान्त को इकारान्त, ओकारान्त तथा औकारान्त को उकारान्त समझना.

Scanned by CamScanner

चाहिये। जैसे – सुलू को सुलु, प्रद्यो को प्रद्यु, प्ररै को प्ररि, सुनौ को सुनु। इत्यादि। और इनके रूप क्रमशः वारि, वस्तु, कर्तृ, वारि और वस्तु शब्द के समान होते हैं।

ईकारान्त नपुँसकलिङ्ग सुधीशब्द

प्र०—सुधि, सुधिनी, सुधीनि। द्वि०—सुधि, सुधिनी, सुधीनि। तृ०—सुधिया, सुधिना, सुधिभ्याम्, सुधिभिः। च०—सुधिये, सुधिने, सुधिभ्याम्, सुधिभ्यः। पं०—सुधियः सुधिनः, सुधिभ्याम्, सुधिभ्यः। ष०—सुधियः, सुधिनः, सुधियोः सुधिनोः सुधियाम्, सुधीनाम्। स०—सुधियि, सुधिनि, सुधियोः सुधिनोः, सुधिषु,। सं०—हे सुधे, हे सुधि, हे सुधिनी, हे सुधीनि।

सुलु और धातृ के तृ०, च०, पं०, स०, सं० के एकवचन में तथा षष्ठी के तीनों वचनों में और सप्तमी के १, २ वचन में सुधी शब्द के समान दो दो रूप होते हैं।

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

मधुरम् = मीठा, मनोरमम् = सुन्दर, मन्थानम् = मथानी, मन्दाक्षम् = लज्जा मन्दोष्णम् = थोड़ा गरम मसिधानम् = दावात, महोन्नतम् = बहुत ऊँचा, मांसलम् = मोटा, मिश्रीकरणम् = मिलाना, मेदुरम् = चिकना, मैरेयम् = मदिरा, मोघम् = व्यर्थ।

युक्तम् = उचित वा योग्य, युग्मम् = दो श्लोकों का समूह, राजस्वम् = मालगुजारी या कर, लाङ्गलम् = हल, वप्रम् = खेत या बंधान, वल्कलम् = छिलका, वशीकरणम् = वश करना, वाग्दानम् = सगाई, विशेषकम् = तीन पद्यों का समूह, वासरम् = दिन, वृजिनम् = पाप, वैजननम् = नौवां महिना, वैयात्यम् = बेशरमी, वैलक्ष्यम् = सङ्कोच, व्यजनम् = पंखा, व्याजीकरणम् = ठगना।

Scanned by CamScanner

शतकम् = शताब्दी, शाणम् = कसौटी या शान, शिक्यम् = मोम, शिलाकणम् = कंकड़ो, शिलाखण्डम् = बटिया. शिबिरम् छावनो, शीषम् = शिर, शूल्यम् = कबाब, शेणम् = सिन्दूर, शोणितम् = खून, शौचम् = शुद्धि या मलत्याग, सचित्तम् = जीवरहित, सन्निभम् = समान, सरलम् = सीधा, सलिलम् = जल, सविधम् = पास, सुसम्भ्रमम् = आदर से, साहसम् = हौसला, सुघटम् = सरल या सस्ता, स्तोकम् = कम, स्फुटम् = स्पष्ट, स्वल्पम् = थोड़ा, हृद्यम् = मीठा या अच्छा।

संस्कृत में अनुवाद करो—

आपकी लड़की का विवाह कब होगा। वह साइकिल से गंगा को जाता था। मूर्ख पुत्र हर वक्त दुःख देते हैं। नमूने से सम्पूर्ण वस्तु का ज्ञान होता है। उसकी सगाई हो चुकी। ललाट में लिखित को कौन मिटा सकता है। तलैया के पानी में मेंढ़क बोलते हैं। गर्मी में पंखे की हवा सुखद होती है। कवि कालिदास ने पूर्ववृत्त का वर्णन किया। वह गवाह को रिश्वत देता था। तिलक की मृत्यु कब हुई थो। इस इन्द्रधनुष से वर्षा को सूचना मिलती है। मचले से दो पान लाम्रो। मुझे फव्वारे के पास ले चलो। उसके नेत्रों से आंसू बहते थे।

हिन्दी में अनुवाद करो—

मधुरे मधुनि भ्रमराः पतन्ति। बालका बहूनि अश्रूणि मुञ्चन्ति। अस्माद् दध्नो घृतं स्तोकं निःसरति। अक्षिणी सक्थिनी पश्यतः। वारिणा बिना जीवनं विनश्यति। जीवा मुहुर्मुहुः शरीराणि लभन्ते। नृपः काननानि ददर्श। रुग्णाः फलेभ्यो जीवन्ति। जतुभिरश्वा नदन्ति। रमेशस्याक्षिणि पीडा विद्यते। भवते द्वयोः कतरद्युक्तं रोचते। तुभ्यं सर्वेषु कतमत्कमनीयं प्रतिभाति। भवन्तो दध्ना सह खादन्तु। नार्याः प्रसवो वैजनने जायते। भवदीयं भागधेयं भव्यं प्रतीयते।

Scanned by CamScanner

* अनुवाद सहायक नियम *

१—कुछ शब्द 'नित्यलिङ्ग' होते हैं। लिङ्गान्तर के शब्दों के विशेषण होने पर भी उनके लिङ्गों में परिवर्तन नहीं होता। जैसे—वेदाः प्रमाणम्। धनं हेतुः। इत्यादि।

२—कुछ शब्द 'नित्यवचन' होते हैं। वचनान्तर के शब्दों के विशेषण होने पर भी उनके वचनों में परिवर्तन नहीं होता। जैसे—शतं मानवाः। विंशति र्मनुजाः। इत्यादि।

३—सम् उपसर्ग के आगे हित और तत शब्द आने पर मकार का विकल्प से लोप हो जाता है। जैसे—संहितम्, सहितम्। संततम्, सततम्।

४—तुम् प्रत्यय से आगे काम और मनस् शब्द आने पर तुम् के म् का लोप हो जाता है। जैसे—कर्तुकामः, गन्तुकामः, जेतुकामः, कर्तुमनाः, मन्तुमनाः, जेतुमनाः। इत्यादि।

५—किसी भी शब्द के अन्त में 'वत्' लगा देने से उस शब्द का उसके समान अर्थ हो जाता है। जैसे—गोवत् = गाय के समान। प्रदीपवत् = दीपक के समान। चक्रवत्, आलावुवत्, वीजवत्, शिखावत्। इत्यादि।

त्यदादिगण पठित शब्दों का साथ प्रयोग होने पर "पर" पहले शब्द का लोप हो जाता है जैसे—स च यश्च = तौ करिष्यतः। अर्थात् वह और जो करेंगे। स च त्वं च युवाम् करिष्यथः। अर्थात् वह और तुम करोगे। त्वं च अहं च = आवाम् गमिष्यावः। अर्थात् तुम और हम जावेंगे।

पूर्वशेष भी होता है। जैसे—स च यश्च = तौ गमिष्यतः इत्यादि।

Scanned by CamScanner

❋ अथ हलन्त पुंल्लिंग प्रकरण ❋

लिह् (चाटने वाला) शब्द के रूप

प्र०—लिट्-लिड्, लिहौ, लिहः । द्वि०—लिहम्, लिहौ, लिहः । तृ०—लिहा, लिड्भ्याम्, लिड्भिः । च०—लिहे, लिड्भ्याम्, लिड्भ्यः । पं०—लिहः, लिड्भ्याम्, लिड्भ्यः । ष०—लिहः, लिहोः, लिहाम् । स०—लिहि, लिहोः, लिट्त्सु-लिट्सु । सं०—हे लिट्, हे लिड्, हे लिहौ, हे लिहः । इसी प्रकार अभ्रंलिह् = मेघ, मधुलिह् = भौंरा शब्द के रूप चलते हैं ।

दुह् (दुहने वाला) शब्द के रूप

प्र०—धुक्-धुग्, दुहौ, दुहः । द्वि०—दुहम्, दुहौ, दुहः । तृ०—दुहा, धुग्भ्याम्, धुग्भिः । च०—दुहे, धुग्भ्याम्, धुग्भ्यः । पं०—दुहः, धुग्भ्याम्, धुग्भ्यः । ष०—दुहः, दुहोः, दुहाम् । स०—दुहि, दुहोः, धुक्षु । सं०—हे धुक्-ग्, हे दुहौ, हे दुहः । इसी प्रकार कामदुह् = इच्छापूर्ती करने वाला शब्द के रूप होते हैं ।

द्रुह् (द्रोही) शब्द के रूप

प्र०—ध्रुक्-ध्रुग्-ध्रुट्-ध्रुड्, द्रुहौ, द्रुहः । द्वि०—द्रुहम्, द्रुहौ, द्रुहः । तृ०—द्रुहा, ध्रुग्भ्याम्, ध्रुड्भ्याम्, ध्रुग्भिः, ध्रुड्भिः । च०—द्रुहे, ध्रुग् (ड्) भ्याम्, ध्रुग् (ड्) भ्यः । पं०—द्रुहः, ध्रुग् (ड्) भ्याम्, ध्रुग् (ड्) भ्यः । ष०—द्रुहः, द्रुहोः, द्रुहाम् । स०—द्रुहि, द्रुहोः, ध्रुक्षु-ध्रुट्त्सु-ध्रुट्सु । सं०—हे ध्रुक्-ग्-हे-ध्रुट्-ड्, हे द्रुहौ, हे द्रुहः ।

इसी प्रकार मुह् = बेसुध, स्निह् = प्रेमी, स्नुह् = उगने वाला शब्द के रूप होते हैं ।

अनडुह् (बैल) शब्द के रूप

प्र०—अनड्वान्, अनड्वाहौ, अनड्वाहः। द्वि०—अनड्वाहम्, अनड्वाहौ, अनडुहः। तृ०—अनडुहा, अनडुद्भ्याम्, अनडुद्भिः। च०—अनडुहे, अनडुद्भ्याम्, अनडुद्भ्यः। पं०—अनडुहः, अनडुद्भ्याम्, अनडुद्भ्यः। ष०—अनडुहः, अनडुहोः, अनडुहाम्। स०—अनडुहि, अनडुहोः, अनडुत्सु। स०—हे अनड्वन्, हे अनड्वाहौ, हे अनड्वाहः।

विश्ववाह् (संसार का धारक) शब्द

प्र०—विश्ववाट् ड्, विश्ववाहौ, विश्ववाहः। द्वि०—विश्ववाहम्, विश्ववाहौ, विश्वौहः। तृ० विश्वौहा विश्ववाड्भ्याम्, विश्ववाड्भिः। च०—विश्वौहे, विश्ववाड्भ्याम्, विश्ववाड्भ्यः। पं०—विश्वौहः, विश्ववाड्भ्याम्, विश्ववाड्भ्यः। ष०—विश्वौहः, विश्वौहोः विश्वौहाम्। स०—विश्वौहि, विश्वौहोः, विश्ववाट्त्सु, विश्ववाट्सु। सम्बोधने-प्रथमावत्।

इसी प्रकार पृष्टवाह् + जुंआ में जुता बैल शब्द के रूप होते हैं।

तुरासाह् शब्द के रूप

प्र०—तुराषाट्-ड्, तुरासाहौ, तुरासाहः। द्वि०—तुरासाहम्, तुरासाहौ, तुरासाहः। तृ०—तुरासाहा, तुराषाड्भ्याम्, तुराषाड्भिः। च०—तुरासाहे, तुराषाड्भ्याम्, तुराषाड्भ्यः। पं०—तुरासाहः, तुराषाड्भ्याम्, तुराषाड्भ्यः। ष०—तुरासाहः, तुरासाहोः, तुरासाहाम्। स०—तुरासाहि, तुरासाहोः, तुराषाट्त्सु, तुराषाट्सु। सं० प्रथमावत्।

सुदिव् शब्द के रूप

प्र०—सुद्योः, सुदिवौ, सुदिवः। द्वि०—सुदिवम्, सुदिवौ, सुदिवः। तृ०—सुदिवा, सुद्युभ्याम्, सुद्युभिः। च०—सुदिवे, सुद्युभ्याम्,

Scanned by CamScanner

सुद्युभ्यः। पं०—सुदिवः, सुद्युभ्याम्, सुद्युभ्यः। ष०—सुदिवः, सुदिवोः, सुदिवाम्। स०—सुदिवि, सुदिवोः, सुद्युषु। सं०—प्रथमावत्।

प्रशाम् (अतिशान्त) शब्द के रूप

प्र०—प्रशान्, प्रशामौ, प्रशामः। द्वि०—प्रशामम्, प्रशामौ, प्रशामः। तृ०—प्रशामा, प्रशान्भ्याम्, प्रशान्भिः। च०—प्रशामे, प्रशान्भ्याम्, प्रशान्भ्यः। पं०—प्रशाम, प्रशान्भ्याम् प्रशान्भ्यः। ष०—प्रशामः, प्रशामोः, प्रशामाम्। स०—प्रशामि, प्रशामोः, प्रशान्सु। सं०—हे प्रशान्, हे प्रशामौ, हे प्रशामः।

इसी प्रकार प्रताम् शब्द के रूप होते हैं।

राजन् = राजा, शब्द के रूप

प्र०—राजा, राजानौ, राजानः। द्वि०—राजानम्, राजानौ, राज्ञः। तृ०—राज्ञा, राजभ्याम्, राजभिः। च०—राज्ञे, राजभ्याम्, राजभ्यः। पं०—राज्ञः, राजभ्याम्, राजभ्यः। ष०—राज्ञः, राज्ञोः, राज्ञाम्। स०—राज्ञिः राजनि, राज्ञोः, राजसु। सं०—हे राजन्, हे राजानौ, हे राजानः।

यज्वन् = यज्ञकर्त्ता, शब्द के रूप

प्र०—यज्वा, यज्वानौ, यज्वानः। द्वि०—यज्वानम्, यज्वानौ, यज्वनः। तृ०—यज्वना, यज्वभ्याम्, यज्वभिः। च०—यज्वने, यज्वभ्याम्, यज्वभ्यः। पं०—यज्वनः, यज्वभ्याम्, यज्वभ्यः। ष०—यज्वनः, यज्वनोः, यज्वनाम्। स० यज्वनि, यज्वनोः, यज्वसु। सं०—हे यज्वन्, हे यज्वानौ, हे यज्वानः।

वृत्रहन् = इन्द्र, शब्द के रूप

प्र—वृत्रहा, वृत्रहणौ, वृत्रहणः। द्वि०—वृत्रहणम्, वृत्रहणौ, वृत्रघ्नः। तृ०—वृत्रघ्ना, वृत्रहभ्याम्, वृत्रहभिः। च०—वृत्रघ्ने,

Scanned by CamScanner

वृत्रहभ्याम्, वृत्रहभ्यः। पं०–वृत्रघ्नः, वृत्रहभ्याम्, वृत्रहभ्य। । ष०—वृत्रघ्नः, वृत्रघ्नोः, वृत्रघ्नाम्। स०—वृत्रहणि-वृत्रघ्नि, वृत्रघ्नोः, वृत्रहसु। सं०—हे वृत्रहन्, हे वृत्रहणौ, हे वृत्रहणः।

मघवन्=इन्द्र, शब्द के रूप

प्र०—मघवान्, मघवन्तौ, मघवन्तः। द्वि०—मघवन्तम्, मघवन्तौ, मघवतः। तृ०—मघवता, मघवद्भ्याम्, मघवद्भिः। च०—मघवते, मघवद्भ्याम्, मघवद्भ्यः। पं०—मघवतः, मघवद्भ्याम्, मघवद्भ्यः। ष०—मघवतः, मघवतोः, मघवताम्। स०—मघवति, मघवतोः, मघवत्सु। सं०—हे मघवन्ः, हे मघवन्तौ, हे मघवन्तः।

प्रकारान्तर से मघवन् शब्द के रूप

प्र०—मघवा, मघवानौ, मघवानः। द्वि०—मघवानम्, मघवानौ, मघोनः। तृ०—मघोना, मघवभ्याम्, मघवभिः। च०—मघोने, मघवभ्याम्, मघवभ्यः। पं०—मघोनः, मघवभ्याम्, मघवभ्यः। ष०—मघोनः, मघोनोः, मघोनाम्। स०—मघोनि, मघोनोः, मघवसु। सं०—हे मघवन्, हे मघवानौ, हे मघवानः।

युवन्=जवान, शब्द के रूप

प्र०—युवा, युवानौ, युवानः। द्वि०—युवानम्, युवानौ, यूनः। तृ०—यूना, युवभ्याम्, युवभिः। च०—यूने, युवभ्याम्, युवभ्यः। पं०—यूनः, युवभ्याम्, युवभ्यः। ष०—यूनः, यूनोः, यूनाम्। सं०—यूनि, यूनोः, युवसु। सं०—हे युवन्, हे युवानौ, हे युवानः।

अर्वन्=घोड़ा, शब्द के रूप

प्र०—अर्वा, अर्वन्तौ, अर्वन्तः। द्वि०—अर्वन्तम्, अर्वन्तौ,

अर्वतः। तृ०— अर्वता, अर्वद्भ्याम्, अर्वद्भिः। च०— अर्वते, अर्वद्भ्याम्, अर्वद्भ्यः। पं०—अर्वतः, अर्वद्भ्याम्, अर्वद्भ्यः। ष०— अर्वतः, अर्वतोः, अर्वताम्। स०—अर्वति, अर्वतोः, अर्वत्सु। सं०— हे अर्वन्, हे अर्वन्तौ, हे अर्वन्तः।

अष्टन् = आठ, शब्द के रूप

प्र०—अष्टौ-अष्ट। द्वि०—अष्टौ-अष्ट। तृ०—अष्टभिः-अष्टाभिः। च०—अष्टभ्यः-अष्टाभ्यः। पं०—अष्टभ्यः-अष्टाभ्यः। ष०—अष्टानाम्। स०—अष्टसु, अष्टासु।

पञ्चन् = पांच, शब्द के रूप

प्र०—पञ्च। द्वि०—पञ्च। तृ०—पञ्चभिः। च०—पञ्चभ्यः। पं०—पञ्चभ्यः। ष०—पञ्चानाम्। सं०—पञ्चसु।

हलन्तपुल्लिङ्ग नान्तशब्द

अध्वन् = मार्ग, अर्यमन् = सूर्य, अश्मन् = पत्थर, आत्मन् = आत्मा, धन्वन् = धनुर्धारी, पूषन् = सूर्य, प्रेमन् = स्नेह, ब्रह्मन् = ब्रह्मा, भूमन् = बहुतायत, मूर्धन् = मस्तक, श्लेष्मन् = कफ या खकार, श्वन् = कुत्ता।

इनमें से प्रेमन्, भूमन् और मूर्धन् शब्द के रूप राजन् शब्द के समान। अध्वन्, अश्मन्, आत्मन्, धन्वन्, ब्रह्मन् और श्लेष्मन् शब्द के रूप यज्वन् शब्द के समान। अर्यमन् और पूषन् शब्द के रूप ब्रह्महन् शब्द के समान तथा श्वन् शब्द के रूप युवन् शब्द के समान होते हैं।

इन्नन्त धनिन् शब्द के रूप

प्र०—धनी, धनिनौ, धनिनः। द्वि०—धनिनम्, धनिनौ, धनिनः। तृ०—धनिना, धनिभ्याम्, धनिभिः। च०—धनिने, धनिभ्याम्, धनिभ्यः। पं०—धनिनः, धनिभ्याम्, धनिभ्यः। ष०—

Scanned by CamScanner

धनिनः, धनिनोः, धनिनाम्। स०—धनिनि, धनिनोः, धनिषु। सं०—हे धनिन्, हे धनिनौ, हे धनिनः।

पथिन् = मार्ग, शब्द के रूप

प्र०—पन्थाः, पन्थानौ, पन्थानः। द्वि०—पन्थानम्, पन्थानौ, पथः। तृ०—पथा, पथिभ्याम्, पथिभिः। च०—पथे, पथिभ्याम्, पथिभ्यः। पं०—पथः, पथिभ्याम्, पथिभ्यः। ष०—पथः, पथोः, पथाम्। स०—पथि, पथोः, पथिषु। सं०—हे पन्थः, हे पन्थानौ, हे पन्थानः।

हलन्त पुल्लिङ्ग इन्नन्त शब्द

अक्षदेविन् = जुआरी, अगारिन् = गृहस्थ, अनुजीविन् = नौकर, अन्तेवासिन् = छात्र, अनुयायिन् = अनुयायी, अर्थिन् = इच्छुक, आततायिन् = उपद्रवी, उपकारिन् = उपकारी, एकाकिन् = अकेला, कञ्चुकिन् = कंचुकी, कृतिन् = कृतकृत्य, केकिन् = मयूर, केशरिन् = सिंह, कोपिन् = क्रोधी, खड्गिन् = तलवारधारी, गुणिन् = गुणवान, गृहिन्; गेहिन् = गृहस्थ, घातिन् = हिंसक।

चक्रिन्; चक्रवर्तिन् = चक्रवर्ती, ज्ञानिन् = ज्ञानी, तपस्विन् = साधु, दण्डिन् = साधु, दन्तिन् = हाथी, दुःखिन् = दुखी, देहिन् = प्राणी, धनिन् = धनी, निवासिन् = निवासी, पक्षिन्; पतत्रिन् = पक्षी, परमेष्ठिन् = परमेष्ठी, पिनाकिन् = महादेव, पोत्रिन् = सुअर, प्रतिवासिन् = पड़ोसी, प्राणिन् = प्राणी, फणिन् = सर्प, फलिन् = वृक्ष, बर्हिन् = मयूर, ब्रह्मचारिन् = ब्रह्मचारी, भविन् = संसारी, भागिन् = हिस्सेदार, भोगिन् = सर्प, मनीषिन् = विद्वान्, मन्त्रिन् = मन्त्री।

यतिन् = साधु, यशस्विन् = कीर्तिमान, रथिन् = रथी, रोगिन् = रोगी, वर्णिन् = ब्रह्मचारी, वाग्मिन् = विद्वान्, वादिन् = बोलने वाला,

Scanned by CamScanner

विषयिन्=विषयी, वैरिन्=शत्रु, व्रतिन्=साधु, शरीरिन्=प्राणी, शशिन्=चन्द्रमा, शाखिन्=वृक्ष, शार्ङ्गिन्=विष्णु, शिखरिन्=पर्वत, श्रेष्ठिन्=सेठ।

समवर्तिन्=काल, सहपाठिन्=सहपाठी, सहभाविन्=साथ होने वाला, सधर्मिन्=समानधर्मा, सुकृतिन=पुण्यवान, सुखिन्=सुखी, स्थायिन्=स्थायी, स्वामिन्=स्वामी, स्वैरिन्=आजाद, हस्तिन्=हाथी, शतिन्=सौ रुपया वाला, सहस्रिन्=हजारपति।

इन शब्दों के रूप धनिन् शब्द के समान होते हैं। इनके अन्त में ङीष्प्रत्यय (ई) जोड़ देने से ये सभी शब्द स्त्रीलिङ्ग हो जाते हैं और तब इनके रूप महीशब्द के समान होते हैं। नपुंसकों के विशेषण होने पर नकार का लोप कर इनमें से कुछ शब्दों के रूप वारि शब्द के समान नपुंसकलिङ्ग में भी होते हैं।

संस्कृत में अनुवाद करो—

फूलों पर भौंरे घूमते थे। द्रोही पर किसी का विश्वास नहीं होता। निर्मल आकाश में नक्षत्र चमकते हैं। अतिशान्त का प्रभाव सब पर पड़ता है। तुम्हारा यह आठ दिन का काम है। शाला में चार ही छात्र हैं। रास्ता में पाँचों के मकान मिलेंगे। यज्ञकर्त्ता ने यज्ञ किया। मनुष्य ब्रह्मा को पूजते हैं। उस दुष्ट को (दुरात्मानं) शीघ्र दिखाओ।

जैसे अपने प्राण अपने प्यारे होते हैं। इस राजा के राज्य में शान्ति नहीं है। मैं किस रास्ता से (पथा) जाऊँ। जवानों की कलह में बूढ़ा मर गया। हाथी सूंड़ से पीते हैं। ब्रह्मचारी का शरीर सुन्दर था। प्राणी मर कर फिर पैदा हो जाते हैं। पापी नरक को जाते हैं। चक्रवर्ती के छह खण्ड का राज्य होता है। इस वृक्ष पर अनेक पक्षी बसते थे। उद्योगी सदा सम्पत्ति पाते हैं। यह परोपकारियों का स्वभाव है। आप सब सदा सुखी हों।

Scanned by CamScanner

हिन्दी में अनुवाद करो—

द्रुहि भवति मम विश्वासो नास्ति । भवतोऽनड्वाही वर न स्तः । विश्वौहा सृष्टिः स्रष्टा किम् ? यूनां कार्यं युवानः एव कुर्वन्ति । एकोऽध्वानं नो गच्छेत् । आत्मनः प्रतिकूलानि नो समाचरेत् । शत्रुः मूर्धानं कृन्तति । कानने चत्वारः पन्थानो विद्यन्ते । चन्द्रश्चाण्डालवेश्मनश्चन्द्रिकां नो संहरते । राज्ञा विना वस्तुं न युक्तम् । ब्रह्मणा मानवेभ्यो ऽधिका मति र्दत्ता ।

युवानो बलिनो भवन्ति । मन्त्रिणो राजानमर्चन्ति । अध्यापको ऽन्तेवासिने कुप्यति । देहिनां जीवितं नश्वरं विद्यते । मेधाविनो विषयिणो निन्दतः । प्रतिवासिभिः सह मेलनं रक्षणीयम् । इमे पाणिणोऽस्मान्निन्दन्ति । करिणः कर्णौ शूर्पौ इव भवतः । स्वामिनं निवेदितुमत्रागतोऽस्मि । शोभते शशिनः कला । सायं पतत्रिणो जलाशयं श्रयन्ति । प्राणिनादृष्टस्य फलं लब्धम् । ब्रह्मचारिणो नामधेयेन क्रूराः शाम्यन्ति । इच्छति शती सहस्रं, सहस्री लक्ष्मीहते ।

ऋत्विज् शब्द के रूप

प्र०—ऋत्विक्-ग्, ऋत्विजौ, ऋत्विजः । द्वि०—ऋत्विजम्, ऋत्विजौ, ऋत्विजः । तृ०—ऋत्विजा, ऋत्विग्भ्याम्, ऋत्विग्भिः । च०—ऋत्विजे, ऋत्विग्भ्याम्, ऋत्विग्भ्यः । पं०—ऋत्विजः, ऋत्विग्भ्याम्, ऋत्विग्भ्यः । ष०—ऋत्विजः, ऋत्विजोः, ऋत्विजाम् । स०—ऋत्विजि, ऋत्विजोः, ऋत्विक्षु । सं०—प्रथमावत् ।

ऋत्विज् = हवनकर्ता । क्रतुभुज् = देव, वणिज् = वैश्य । बलिभुज् = काक, भरण्यभुज् = मजदूर, भिषज् = वैद्य, भुज् = खाने वाला, महीभुज् = राजा, मितभुज् = परिमितभोजी, हुतभुज् = अग्नि । इन शब्दों के रूप ऋत्विज् शब्द के समान होते हैं ।

Scanned by CamScanner

युञ्ज् शब्द के रूप

प्र०—युङ्, युञ्जौ, युञ्जः। द्वि०—युञ्जम्, युञ्जौ, युजः। तृ०—युजा, युग्भ्याम्, युग्भिः। च०—युजे, युग्भ्याम्, युग्भ्यः। पं०—युजः युग्भ्याम्, युग्भ्यः। ष०—युजः, युजोः, युजाम्। स०—युजि, युजोः, युक्षु। सं०—प्रथमावत्।

खञ्ज् शब्द के रूप

प्र०—खन्. खञ्जौ, खञ्जः। द्वि०—खञ्जम्, खञ्जौ, खञ्जः। तृ०—खञ्जा, खन्भ्याम्, खन्भिः। च०—खञ्जे, खन्भ्याम् खन्भ्यः। पं०—खञ्जः, खन्भ्याम्, खन्भ्यः। ष०—खञ्जः, खञ्जोः, खञ्जाम्। स०-खञ्जि, खञ्जोः, खन्सु। सं०—प्रथमावत्।

सुयुज् शब्द के रूप

प्र०— सुयक्-ग्, सुयुजा, सुयुजः। द्वि०—सुयुजम्, सुयुजौ, सुयुजः। तृ०—सुयुजा, सुयुग्भ्याम्, सुयुग्भिः। च०—सुयुजे, सुयुग्भ्याम्, सुयुग्भ्यः। पं०—सुयुजः, सुयुग्भ्याम्, सुयुग्भ्यः। ष०—सुयुजः सुयुजोः, सुयुजाम्। स०—सुयुजि, सुयुजोः, सुयुक्षु। सं०—प्रथमावत्।

विश्वराज् शब्द के रूप

प्र०—विश्वाराट्–ड्, विश्वराजौ, विश्वराजः। द्वि०—विश्व-राजम्, विश्वराजौ, विश्वराजः। तृ०—विश्वाराजा, विश्वराड्भ्याम्, विश्वाराड्भिः च०—विश्वाराजे, विश्वराड्भ्याम्, विश्वाराड्भ्यः। पं०—विश्वराजः, विश्वाराड्भ्याम्, विश्वाराड्भ्यः। ष०—विश्व-राजः, विश्वराजोः, विश्वराजाम्। स०—विश्वराजि, विश्वराजोः, बिश्वाराट्सु – विश्वाराट्सु।

इसी प्रकार सम्राज् शब्द = चक्रवर्ती, परिव्राज = सन्यासी शब्द के रूप होते हैं।

Scanned by CamScanner

भृस्ज् शब्द के रूप

प्र०—भृट्-ड्, भृज्जौ, भृज्जः। द्वि०—भृज्जम्, भृज्जौ, भृज्जः। तृ०—भृज्जा, भृड्भ्याम्, भृड्भिः। च०—भृज्जे, भृड्भ्याम्, भृड्भ्यः। पं०—भृज्ज, भृड्भ्याम्, भृड्भ्यः। ष०—भृज्जः, भृज्जोः, भृज्जाम्। स०—भृज्जि, भृज्जोः, भृट्त्सु-भृट्सु। सं०—प्रथमावत्।

देवेज् = पूजक, परिव्राज = सन्यासी, परेतराज् = यम, भ्रस्ज् = भूंजने वाला, मृज् = पवित्र, यज् = पूजक, यमराज् = काल, रघुराज् = राम, राज् = राजा, विभ्राज् = सुन्दर, विश्वराज्; विश्वसृज् = ब्रह्मा, व्रस्ज् = छेदक, सम्राज् = चक्रवर्ती, सुयुज् = मेल कराने वाला, सृज् = बनाने वाला, स्वाराज् = इन्द्र। इन शब्दों के रूप विश्वराज् शब्द के समान होते हैं। परन्तु दीर्घ इन शब्दों में नहीं होता।

त्यत् (वह) शब्द के रूप—

प्र०—स्यः, त्यौ, त्ये। द्वि०—त्यम्, त्यौ, त्यान्। तृ०—त्येन, त्याभ्याम् त्यैः। च०—त्यस्मै, त्याभ्याम्, त्येभ्यः। पं०—त्यस्मात्, त्याभ्याम्, तेभ्यः। ष०—त्यस्य, त्ययोः, तेषाम्। त्यस्मिन्, त्ययोः, त्येषु।

एतद् (यह) शब्द के रूप

प्र०—एषः, एतौ, एते। द्वि०—एनम्-एतम्, एनौ-एतौ, एनान्-एतान्। तृ०—एनेन-एतेन, एताभ्याम्, एतैः। च०—एतस्मै, एताभ्याम्, एतेभ्यः। पं०—एतस्मात्, एताभ्याम्, एतेभ्यः। ष०—एतस्य, एतयोः-एनयोः, एतेषाम्। स०—एतस्मिन्, एतयोः एनयोः, एतेषु।

सुपाद् शब्द के रूप—

प्र०—सुपात्-द्, सुपादौ, सुपादः। द्वि०—सुपादम्, सुपादौ, सुपदः। तृ०—सुपदा, सुपाद्भ्याम्, सुपाद्भिः। च०—सुपदे, सुपाद्-

Scanned by CamScanner

भ्याम्, सुपाद्भ्यः। पं०—सुपदः, सुपाद्भ्याम्, सुपाद्भ्यः। ष०—सुपदः सुपदोः, सुपदाम्। स०—सुपदि, सुपदोः, सुपात्सु। स० - प्रथमावत्।

गूढ़पाद = सर्प, चतुष्पाद् = चौपाया, द्विपाद् = मनुष्य, बहुपाद् = वटवृक्ष, सुपाद् = अच्छे पैर वाला। इन शब्दों के रूप भी सुपाद् शब्द के समान होते हैं।

दुर्हृद् = शत्रु, नीतिविद् = नीतिवेत्ता, सभासद् = सदस्य, सुहृद् = मित्र, हृद् = चित्त या मन। इन शब्दों के रूप भी प्रायः सुपाद् शब्द के समान होते हैं। परन्तु इनमें सुपाद् शब्द के समान कोई आदेश नहीं होता।

अपारवार् = समुद्र शब्द के रूप—अपारवाः, अपारवारौ, अपारवारः। इत्यादि होते हैं।

अग्निमथ् शब्द के रूप—

प्र०—अग्निमद्-त्, अग्निमथौ, अग्निमथः। द्वि०—अग्निमथम्, अग्निमथौ, अग्निमथः। तृ०—अग्निमथा, अग्निमद्भ्याम्, अग्निमद्भिः। च०—अग्निमथे, अग्निमद्भ्याम्, अग्निमद्भ्यः। पं०—अग्निमथः अग्निमद्भ्याम्, अग्निमद्भ्यः। ष०—अग्निमथः अग्निमथोः, अग्निमथाम्, स०—अग्निमथि, अग्निमथोः, अग्निमत्सु।

प्रत्यञ्च् (पश्चिम) शब्द के रूप—

प्र०—प्रत्यङ्, प्रत्यञ्चौ प्रत्यञ्चः। द्वि०—प्रत्यञ्चम्, प्रत्यञ्चौ, प्रतीचः। तृ०—प्रतीचा, प्रत्यग्भ्याम् प्रत्यग्भिः। च०—प्रतीचे, प्रत्यग्भ्याम्, प्रत्यग्भ्यः। पं०—प्रतीचः, प्रत्यग्भ्याम्, प्रत्यग्भ्यः। ष०—प्रतीचः, प्रतीचोः, प्रतीचाम्। स०—प्रतीचि, प्रतीचोः, प्रत्यक्षु।

उदञ्च् (उत्तर देश वा दिशा) शब्द के रूप—

प्र०—उदङ्, उदञ्चौ, उदञ्चः। द्वि०—उदञ्चम्, उदञ्चौ, उदीचः। तृ०—उदीचा, उदग्भ्याम्, उदग्भिः। च० — उदीचे,

Scanned by CamScanner

उदग्भ्याम्, उदग्भ्यः । पं०—उदीचः, उदग्भ्याम्, उदग्भ्यः । ष०—उदीचः, उदीचोः, उदीचाम् । स०—उदीचि, उदीचोः, उदक्षु । सं०—प्रथमावत् ।

सम्यञ्च् (भला मनुष्य) शब्द के रूप

प्र०—सम्यङ्, सम्यञ्चौ, सम्यञ्चः । द्वि०—सम्यञ्चम्, सम्यञ्चौ, समीचः । तृ०—समीचा, सम्यग्भ्याम् सम्यग्भिः । च०—समीचे, सम्यग्भ्याम्, सम्यग्भ्यः । पं०—समीचः, सम्यग्भ्याम् सम्यग्भ्यः । ष०—समीचः, समीचोः, समीचाम् । स०—समीचि, समीचोः, सम्यक्षु । सं०—प्रथमावत् ।

तिर्यञ्च् (पशु) शब्द के रूप

प्र०—तिर्यङ्, तिर्यञ्चौ, तिर्यञ्च । द्वि०—तिर्यञ्चम्, तिर्यञ्चौ, तिरश्चः । तृ०—तिरश्चा, तिर्यग्भ्याम्, तिर्यग्भिः । च०—तिरश्चे, तिर्यग्भ्याम, तिर्यग्भ्यः । पं०—तिरश्चः, तिर्यग्भ्याम् , तिर्यग्भ्यः । ष०—तिर्यश्चः, तिरश्चोः, तिरश्चाम । स०—तिरश्चि, तिरश्चोः, तिर्यक्षु । सं०—प्रथमावत् ।

प्राञ्च् (उत्तम पूजक) शब्द के रूप

प्र०—प्राङ्, प्राञ्चौ, प्राञ्चः । द्वि०—प्राञ्चम्, प्राञ्चौ, प्राचः । तृ०—प्राचा, प्राग्भ्याम्, प्राग्भिः । च०—प्राचे, प्राग्भ्याम्, प्राग्भ्यः । पं०—प्राचः, प्राग्भ्याम्, प्राग्भ्यः । ष०—प्राचः, प्राचोः, प्राचाम् । स०—प्राचि, प्राचोः, प्राक्षु । सं०—प्रथमावत् ।

क्रुञ्च् (क्रौञ्च पक्षी) शब्द के रूप

प्र०—क्रुङ्, क्रुञ्चौ, क्रुञ्चः । द्वि०—क्रुञ्चम्, क्रुञ्चौ, क्रुञ्चः । तृ०—क्रुञ्चा, क्रुङ्भ्याम्, क्रुङ्भिः । च०—क्रुञ्चे, क्रुङ्भ्याम् ।

क्रुङ्भ्यः । पं०—क्रुञ्चः, क्रुङ्भ्याम्, क्रुङ्भ्यः । ष०—क्रुञ्चः, क्रुञ्चोः, क्रुञ्चाम् । स०—क्रुञ्चि, क्रुञ्चोः, क्रुङ्पु, क्रुङ्क्षु । सं०—प्रथमावत् :

पयोमुच् (मेघ) शब्द के रूप

प्र०—पयोमुक्-ग्, पयोमुचौ, पयोमुचः । द्वि०—पयोमुचम्, पयोमुचौ, पयोमुचः । तृ०—पयोमुचा, पयोमुग्भ्याम्, पयोमुग्भिः । च०—पयोमुचे, पयोमुग्भ्याम्, पयोमुग्भ्यः । पं०—पयोमुचः, पयोमुग्भ्याम्, पयोमुग्भ्यः । ष०—पयोमुचः, पयोमुचोः, पयोमुचाम् । स०—पयोमुचि, पयोमुचोः, पयोमुक्षु । सं०—प्रथमावत् ।

वारिमुच्; जलमुच् मेघ, शब्द के रूप इसी प्रकार होते हैं ।

महत् शब्द के रूप

प्र०—महान्, महान्तौ, महान्तः । द्वि०—महान्तम्, महान्तौ, महतः । तृ०—महता, महद्भ्याम्, महद्भिः । च०—महते, महद्भ्याम्, महद्भ्यः । पं०—महतः, महद्भ्याम् महद्भ्यः । ष०—महतः, महतोः, महताम् । स०—महति, महतोः, महत्सु । सं०—हे महन्, हे महान्तौ, हे महान्तः ।

ददत् शब्द के रूप

प्र०—ददत्-द्, ददतौ, ददतः । द्वि०—ददतम्, ददतौ, ददतः । तृ०—ददता, ददद्भ्याम्, ददद्भिः । च०—ददते, ददद्भ्याम्, ददद्भ्यः । पं०—ददतः, ददद्भ्याम्, ददद्भ्यः । ष०—ददतः, ददतोः, ददताम् । स०—ददति, ददतोः, ददत्सु । सं०—प्रथमावत् ।

उदन्वत् = समुद्र, एतावत् = इतना, क्रियावत् = कार्यकारी; गुणवत् = गुणी, गोमत् = ग्वाला, तडित्वत् = मेघ, तावत् = तितना, धीमत् = विद्वान्, पुण्यवत् = पुण्यवान्, बलवत् = बलवान्, बुद्धिमत्

Scanned by CamScanner

= बुद्धिमान्, भगवत् = भगवान्, भवत् = आप, भास्वत् = सूर्य या चमकदार, महत् = बड़ा, मूर्तिमत् = शरीरधारी, यावत् = जितना, सरस्वत् = समुद्र। इन शब्दों के रूप महत् शब्द के समान होते हैं।

अम्बुभृत = मेघ, कपालभृत् = महादेव, कर्मकृत् = नौकर, चित्रकृत = चतेरा, चित् = आत्मा, जागृत् = जागता हुआ, तनूनपात् = अग्नि, ददत् = देने वाला, द्विषत् = शत्रु, पापकृत् = पापी, पुण्यकृत् = पुण्यकर्त्ता, भूभृत् = पर्वत, मन्त्रकृत् = मन्त्रकर्त्ता, मरुत् = हवा, विपश्चित् = विद्वान्, सुकृत् = पुण्यकर्त्ता। इन शब्दों के रूप ददत् शब्द के समान होते हैं।

पचत् शब्द के रूप

प्र०—पचन, पचन्तौ, पचन्त। द्वि०—पचन्तम, पचन्तौ, पचतः। शेषरूप महत् शब्द के समान होते हैं।

अनुसरत् = अनुगामी, अभिलपत् = अभिलाषी, अर्हत् = अरिहन्त या समर्थ, असत् = दुष्ट, खादत् = खाने वाला, गच्छत् = जाने वाला, जानत = जानता हुआ, दर्शयत = दिखलाने वाला, पचत् = पकाने वाला, पतत् = गिरने वाला, पठत् = पढ़ता हुआ, भजत् = सेवन कर्त्ता, भवत् = होने वाला, सत् = सज्जन।

इन शब्दों के रूप पचत् शब्द के समान होते हैं।

संस्कृत में अनुवाद करो—

सम्राट् परिव्राट् को पूजते हैं। हवनकर्त्ता ने हवन किया। मजदूर ने बोझ ढोया। ब्रह्मा के पुत्र का नाम नारद था। चक्रवर्ती की (सम्र जः) सेना आती थी। मेघ पर्वत को छूते थे। पश्चिम में (प्रतीचि) कौन जावेगा। तिर्यञ्चों का भी विश्वास देखा गया है। इस सुपद् के साथ यह (एषः) कौन आता है। मूर्खों की गणना पशुओं में होती है।

सब जगह मेघ (पयोमुचः) घिर आये। वैश्य की पुत्री का वैद्य के पुत्र के साथ विवाह होगा। भारी प्रयत्न से वह खीला खींचा। बड़ों की आज्ञा सदा माननीय होती है। धनवानों को लोभी पूजते हैं। बुद्धिमान् जन छात्रों को उपदेश देते हैं। सभासद सभा को गये। पुण्यकर्त्ता स्वर्ग को जावेंगे। मूख खाते खाते (खादन्तः) हँसते हैं। रमेश पढ़ते पढ़ते (पठन्) पूछता है।

हिन्दी में अनुवाद करो—

युञ्जः खञ्जो विद्यन्ते। विश्वराजि ते विश्वासो न विद्यते। सृजा विश्वं विनिर्मितं किम्? राजानो विश्वसृजि विश्वासं कुर्वन्ति। सम्राजो बुद्धिमन्त मन्त्रिणं पृच्छन्ति। चातकः पयोमुच कांक्षति। तिरश्चां गतिः कुटिला जायते। नटायन्ते हि भूभुजः। भिषजा भेषज न दत्तम्। साधवो मितभजो भवन्ति। सुपदे नमोऽस्तु। दुर्हृदः सुहृदं निन्दन्ति।

भवता सह मैत्री उत्तरोत्तर वर्धते। श्रीमतः किं नामधेयं विद्यते। महतां विपत्तौ विषादो नो भवेत्। गुणवन्तो धनिनोऽप्राक्षु। एतावता किं जातम्। पापकृतः पुण्यकृतं निन्दन्ति। भूभृतः सानुनि वानराः अपर्यटन्। जना विपश्चितं पृच्छन्ति। कूपे पततां दीपकेन को लाभः। गच्छता तेन शूकरा दृष्टः। पठन्तौ ग्रन्थान् पश्यतः। जानन् अशुद्धिं वदसि। उदीचि उत्तरप्रदेशो विद्यते।

तादृश् शब्द के रूप—

प्र०—तादृक्-ग्, तादृशौ, तादृशः। द्वि०—तादृशम्, तादृशौ, तादृशः। तृ०—तादृशा, तादृग्भ्याम्, तादृग्भिः। च०— तादृशे, तादृग्भ्याम्, तादृग्भ्यः। पं०—तादृशः, तादृग्भ्याम्, तादृग्भ्यः। ष०—तादृशः, तादृशोः, तादृशाम्। स०—तादृशि, तादृशोः, तादृक्षु। सं०—प्रथमावत्।

Scanned by CamScanner

घृतस्पृश् = घी को छूने वाला, तादृश् = वैसा, त्वादृश् = तुम्हसा, दधृश् = डाँट दिखाने वाला, भवादृश् = आपसा, मर्मस्पृश् = मर्म भेदी, मादृश् = मुझसा, यादृश् = जैसा। शब्दों के रूप तादृश् शब्द के समान होते हैं।

विश् (वैश्य) शब्द के रूप—

प्र०—विट्-ड्, विशौ, विशः। द्वि०—विशम्, विशौ विशः। तृ०—विशा, विड्भ्याम्, विड्भिः। च०—विशे, विड्भ्याम्, विड्भ्यः। पं०—विशः, विड्भ्याम्, विड्भ्यः। ष०—विशः, विशोः, विशाम्। स०—विशि, विशोः, विट्सु—विट्सु। सं०—प्रथमावत्।

नश् (नश्वर) शब्द के रूप—

प्र०—नक्-ग्-नट-ड्, नशौ, नशः। द्वि०—नशम्, नशौ, नशः। तृ०—नशा, नग्भ्याम्-नड्भ्याम्, नग्भिः-नड्भिः। च०—नशे, नग्भ्याम्-नड्भ्याम्, नग्भ्यः-नड्भ्यः। पं०—नशः, नग्भ्याम्-नड्भ्याम्, नग्भ्यः-नड्भ्यः। ष०—नशः, नशोः नशाम्। स०—नशि, नशोः, नक्षु-नट्त्सु-नट्सु। सं०—प्रथमावत्।

षष् (छह) शब्द के रूप—

प्र०—षट्-षड्। द्वि०—षट्-षड्। तृ०—षड्भिः। च०—षड्भ्यः। पं०—षड्भ्यः। ष०—षण्णाम्। स०—षट्त्सु-षट्सु।

द्विष् = शत्रु, रत्नमुष् = रत्नों का चोर, सुरद्विष् = दैत्य शब्द के रूप विश शब्द के समान होते हैं। केवल 'ष्' का अन्तर है।

पिपठिष् शब्द के रूप—

प्र०—पिपठीः, पिपठिषौ, पिपठिषः। द्वि०—पिपठिषम्, पिपठिषौ, पिपठिषः। तृ०—पिपठिषा, पिपठीर्भ्याम्, पिपठीर्भिः। च०—पिपठिषे, पिपठीर्भ्याम्, पिपठीर्भ्यः। प०—पिपठिषः, पिपठीर्भ्याम्

पिपठीर्भ्यः। ष०—पिपठिषः, पिपठिषोः, पिपठिषाम्। स०—पिपठिषि, पिपठिषाः, पिपठीःषु-ष्षु। सं०—प्रथमावत्।

इसी प्रकार चिकीर्ष् = करने का इच्छुक शब्द के रूप होते हैं। पिपठिष् = पढ़ने का इच्छुक।

विद्वस् (विद्वान्) शब्द के रूप

प्र०—विद्वान्, विद्वांसौ, विद्वांसः। द्वि०—विद्वांसम्, विद्वांसौ, विदुषः। तृ० विदुषा, विद्वद्भ्याम्, विद्वद्भिः। च०—विदुषे, विद्वद्भ्याम्, विद्वद्भ्यः। पं०—विदुषः, विद्वद्भ्याम्, विद्वद्भ्यः। ष०—विदुषः, विदुषोः, विदुषाम्। स०—विदुषि, विदुषोः, विद्वत्सु। सं०—हे विद्वन्, हे विद्वांसौ, हे विद्वांसः।

इसी प्रकार सेदिवस् = ठहरने वाला शब्द के रूप होते हैं।

पुम्स् (मनुष्य) शब्द के रूप

प्र०—पुमान्, पुमांसौ, पुमांसः। द्वि०—पुमांसम्, पुमांसौ, पुंसः। तृ०—पुंसा, पुम्भ्याम्, पुम्भिः। च०—पुंसे, पुम्भ्याम्, पुम्भ्यः। पं०—पुंसः, पुम्भ्याम्, पुम्भ्यः। ष०—पुंस, पुंसोः, पुंसाम्। स०—पुंसि, पुंसोः, पुंसु। सं०—हे पुमान्, हे पुमांसौ, हे पुमांसः।

इसी प्रकार सुपुम्स् = अच्छा मनुष्य शब्द के रूप होते हैं।

अल्पीयस् = थोड़ा, कनीयस् = छोटा भाई, गरीयस् = बहुत बड़ा, ज्यायस् = बहुत जेठा, दवीयस् = अधिक दूर, यवीयस् = जवान, लघीयस् = छोटा, भूयस् = अधिक, वरीयस् = उत्तम, वर्षीयस् = बुड्ढा, साधीयस् = अत्यन्त, स्थेयस् = स्थिर। इन शब्दों के रूप पुम्स् शब्द के समान होते हैं। इनके रूप पयस् शब्द के समान नपुंसक लिङ्ग में तथा अन्त में 'ई' जोड़कर मही शब्द के समान स्त्रीलिङ्ग में भी होते हैं।

उशनस् (शुक्राचार्य) शब्द के रूप

प्र०—उसनाः, उशनसौ, उशनसः। द्वि०—उशनसम्, उशनसौ, उशनसः। तृ०—उशनसा, उशनोभ्याम्, उशनोभिः। च०—उशनसे, उशनोभ्याम्, उशनोभ्यः। पं०—उशनसः, उशनोभ्याम्, उशनोभ्यः। ष०—उशनसः, उशनसोः, उशनसाम्। स०—उशनसि, उशनसोः, उसनस्सु-उशनःसु। सं०—हे उशनन्, हे उशन, हे उशनः, हे उशनसौ, हे उशनसः।

अनेहस् शब्द के रूप

प्र०—अनेहाः, अनेहसौ, अनेहसः। द्वि०—अनेहसम्, अनेहसौ, अनेहसः। तृ०—अनेहसा, अनेहोभ्याम्, अनेहोभिः। च० =अनेहसे, अनेहोभ्याम्, अनेहोभ्यः। पं०—अनेहसः, अनेहोभ्याम्, अनेहोभ्यः। ष०—अनेहसः, अनेहसोः, अनेहसाम्। स०—अनेहसि, अनेहसोः, अनेहःसु। स०—हे अनेहः, हे अनेहसौ, हे अनेहसः।

अनेहस् = समय, अमृतान्धस् = देव, विहायस् = आकाश। चन्द्रमस् = चन्द्रमा, जलौकस् = जोंक, जातवेदस् = अग्नि, दिवौकस् = देव, पुरोधस् = पुरोहित, प्रवयस् = बुड्ढा, वनौकस् = भील, वेधस् = ब्रह्मा, सवयस् = मित्र या बराबर आयु वाला। शब्द के रूप अनेहस् शब्द के समान होते हैं।

संस्कृत में अनुवाद करो

आप जैसों को (भवादृशः) मैं जानता हूँ। वैश्य का (विशः) यह स्वभाव ही होता है। वहाँ छह विद्वान् थे। शत्रु का स्वभाव नहीं बदलता। दैत्यों ने यज्ञ में विघ्न किया। विद्वान् सब जगह पूजे जाते हैं। मनुष्यों का (पुंसाम्) प्रवेश वहाँ निषिद्ध है। यह कार्य भारी (भूयसा) यत्न से साध्य है। छोटे लोग (लघीयसः)

बड़ों का अनुकरण करते हैं। वह बुड्ढे से (वर्षीयांसम्) बोली। अग्नि में सभी जल गया। बालक चन्द्रमा को देखता है। ब्रह्मा के (वेधसः) चार मुख प्रसिद्ध हैं। आकाश में (विहायसि) विमान जाता था। जोंक के (जलौकसः) मुख में दाँत नहीं होते।

हिन्दी में अनुवाद करो—

मादृशा नेदं कार्यं भवेत्। विशाम्पतिस्तस्मै ददौ। षण्णां भोजनं तत्र भविष्यति। द्विषि कदापि विश्वासो न विधेयः। विदुषः परिश्रमं विद्वानेव विजानाति। पुमांसः परस्परं विवदन्ते। इदम् अल्पीयसा यत्नेन नो लभ्यम्। गरीयांसो लघीयसः आदिशन्ति। वर्षीयसः मतिः विनश्यति। धनिनो विदुषो निन्दन्ति। उशनसा विज्ञातं स्त्री स्वभावेनैव जानाति। बालश्चन्द्रमसं पश्यति। पक्षिणो विहायसा गच्छन्ति। दिवौकसां सप्त धातवो न भवन्ति। पुरोधसा क्रतुः समारब्धः।

❀ इति हलन्तपुल्लिङ्गाः ❀

पौरुष-माहात्म्य

आलस्यं हि मनुष्याणां, शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः, कृत्वायं नावसीदति ॥ १ ॥
गच्छन् पिपीलिको याति, योजनानां शतान्यपि।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि, पदमेकं न गच्छति ॥ २ ॥
काकतालीयवत् प्राप्तं, दृष्ट्वापि—निधिमग्रतः।
न स्वयं दैवमादत्ते, पुरुषार्थ—मपेक्ष—ते ॥ ३ ॥
पश्य कर्मवशात् प्राप्तं, भोज्यकालेऽपि भोजनम्।
हस्तोद्यमं विना वक्त्रे, प्रविशेन्न कथञ्चन ॥ ४ ॥
उद्यमेन हि सिध्यन्ति, कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य, प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥ ५ ॥
उद्यमेन विना तात! , नो सिध्यन्ति मनोरथाः।
कातरा इति जल्पन्ति, यद् भाग्यं तद् भविष्यति ॥ ६ ॥
विहाय पौरुषं यो हि, दैव—मेवाव—लम्बते।
प्रासाद—सिंह—वत्तस्य, मूर्ध्नि तिष्ठन्ति वायसाः ॥ ७ ॥
नास्त्युच्चशिखरो मेरु, र्नातिनीचं रसातलम्।
व्यवसाय—द्वितीयानां, नाप्यपारो महोदधिः ॥ ८ ॥
विषमां हि दशां प्राप्य, दैवं गर्हयते नरः।
आत्मनः कर्म—दोषांस्तु, नैव जानात्य—पण्डितः ॥ ९ ॥
उद्धरेदात्मनात्मानं , नात्मान—मवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धु, रात्मैव रिपुरात्मनः ॥१०॥
उद्योगिनः——करालम्बं, करोति कममालया।
अनुद्योगि——करालम्बं, करोति कमला—ग्रजा ॥११॥
काष्ठादग्नि र्जायते मथ्यमानाद्, भूमिस्तोयं खन्यमाना ददाति।
सोत्साहानां नास्त्यसाध्यं नराणां, मार्गारब्धाः सर्वयत्नाः फलन्ति ॥

Scanned by CamScanner

* हलन्त स्त्रीलिंग प्रकरण *

उपानह् (जूता) शब्द के रूप

प्र०—उपानत्-द्, उपानहौ, उपानहः। द्वि०—उपानहम्, उपानहौ, उपानहः। तृ०—उपानहा, उपानद्भ्याम्, उपानद्भिः। च०—उपानहे, उपानद्भ्याम्, उपानद्भ्यः। पं०—उपानहः, उपानद्भ्याम्, उपानद्भ्यः। ष०—उपानहः, उपानहोः, उपानहाम्। स०—उपानहि, उपानहोः, उपानत्सु। सं०—प्रथमावत्।

दिव् (स्वर्ग) शब्द के रूप

प्र०—द्यौः, दिवौ, दिवः। द्वि०—दिवम्, दिवौ, दिवः। तृ०—दिवा, द्युभ्याम्, द्युभिः। च०—दिवे, द्युभ्याम्, द्युभ्यः। पं०—दिवः, द्युभ्याम्, द्युभ्यः। ष०—दिवः, दिवोः, दिवाम्। स०—दिवि, दिवोः, द्युषु।

उष्णिह् (गरम) शब्द के रूप

प्र०—उष्णिक्-ग्, उष्णिहौ, उष्णिहः। उष्णिहम्, उष्णिहौ, उष्णिहः। शेष रूप उपानह् शब्द के समान होते हैं।

गिर् (वाणी) शब्द

प्र०=गीः, गिरौ, गिरः। द्वि०—गिरम्, गिरौ, गिरः। तृ०—गिरा, गीर्भ्याम्, गीर्भिः। च०—गिरे, गीर्भ्याम्, गीर्भ्यः। पं०—गिरः, गीर्भ्याम्, गीर्भ्यः। ष०—गिरः, गिरोः, गिराम्। सं०—गिरि, गिरोः, गीर्षु। इसी प्रकार पुर्=पुरी, द्वार्=दरवाजा, धुर्=बोझा या रथ का धुरा शब्द के रूप होते हैं।

Scanned by CamScanner

रेफान्त चतुर् (चार) शब्द

प्र०—चतस्रः । द्वि०—चतस्रः । तृ०—चतसृभिः । च०—चतसृभ्यः पं०—चतसृभ्यः । ष०—चतसृणाम् । स०—चतसृषु ।

मान्त इदम् (यह) शब्द

प्र०—इयम्, इमे, इमाः । द्वि०—एनाम-इमाम्, एने-इमे, एनाः इमाः । तृ०—एनया-अनया, आभ्याम्, आभिः । च०—अस्यै, आभ्याम्, आभ्यः । पं०—अस्याः, आभ्याम्, आभ्यः । ष०—अस्याः, एनयोः, अनयोः, आसाम् । अस्याम्, एनयोः अनयोः, आसु ।

दान्त त्यद् (वह) शब्द

प्र०—स्या, त्ये, त्याः । द्वि०—त्याम्, त्ये, त्याः । तृ०—त्यया, त्याभ्याम्, त्याभिः । च०—त्यस्यै, त्याभ्याम्, त्याभ्यः । पं०—त्यस्याः त्याभ्याम्, त्याभ्यः । ष०—त्यस्याः, त्ययोः, त्यासाम् । स०—त्यस्याम्, त्ययोः, त्यासु ।

चान्त वाच् (वाणी) शब्द

प्र०—वाक्-ग्, वाचौ, वाचः । द्वि०—वाचम्, वाचौ, वाचः । तृ०—वाचा, वाग्भ्याम्, वाग्भिः । च०—वाचे, वाग्भ्याम्, वाग्भ्यः । पं०—वाचः, वाग्भ्याम्, वाग्भ्यः । ष०—वाचः, वाचोः, वाचाम् । स०—वाचि, वाचोः, वाक्षु ।

पान्त बहुवचन अप् (जल) शब्द

प्र०—आपः । द्वि०—अपः । तृ०—अद्भिः । च०—अद्भ्यः । पं०—अद्भ्यः । ष०—अपाम् । स०—अप्सु ।

शान्त दिश् (दिशा) शब्द

प्र०—दिक्-ग्, दिशौ, दिशः । द्वि०—दिशम्, दिशौ, दिशः । तृ०—दिशा, दिग्भ्याम्, दिग्भिः । च०—दिशे, दिग्भ्याम्, दिग्भ्यः ।

Scanned by CamScanner

पं० — दिशः, दिग्भ्याम्, दिग्भ्यः। ष०—दिशः, दिशोः, दिशाम्। स०—दिशि, दिशोः, दिक्षु। इसी प्रकार निश् = रात्रि। शब्द के रूप होते हैं।

दृश् (दृष्टि, नेत्र) शब्द

प्र०—दृक्-ग्, दृशौ, दृशः। दृशम्, दृशौ, दृशः। तृ०—दृशा, दृग्भ्याम्, दृग्भिः। च०—दृशे, दृग्भ्याम्, दृग्भ्यः। पं०—दृशः, दृग्भ्याम्, दृग्भ्यः। ष०—दृशः, दृशोः, दृशाम्। स०—दृशि, दृशोः, दृक्षु।

त्विष् (कान्ति) शब्द

प्र०—त्विट्-द्, त्विषौ, त्विषः। द्वि०—त्विषम्, त्विषौ, त्विषः। तृ०—त्विषा, त्विड्भ्याम्, त्विड्भिः। च०—त्विषे, त्विड्भ्याम्, त्विड्भ्यः। पं०—त्विषा, त्विड्भ्याम्, त्विड्भ्यः। ष०—त्विषः, त्विषोः, त्विषाम्। स०—त्विषि, त्विषोः, त्विट्त्सु-त्विट्सु।

गोविष् = गोबर, रुष् = कोप, विप्रुष् = जलकण या बूंद। शब्द के रूप त्विष् शब्द के समान होते हैं।

सजुष् (साथ अर्थ में प्रयुक्त प्राप्तिकर्त्ता)

प्र०—सजूः, सजुषौ सजुषः। द्वि०—सजुषम्, सजुषौ, सजुषः। तृ०—सजुषा, सजूर्भ्याम्, सजूर्भिः। च०—सजुषे, सजूर्भ्याम्, सजूर्भ्यः। प०-सजुषः, सजूर्भ्याम्, सजूर्भ्यः। ष०—सजुषः, सजुषोः, सजुषाम्। स०—सजुषि, सजुषोः, सजूःषु-ष्षु।

इसी प्रकार आशिष् = आशीर्वाद, शब्द के रूप होते हैं।

अप्सरस् = अप्सरा, जलौकस् (ब० व०) जोंक, भास् = किरण शब्द के रूप अनेहस् शब्द के समान होते हैं।

स्फुट हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

ऋच् = ऋग्वेद, त्वच् = छाल या चमड़ा, रुच् = कान्ति, शुच् = शोक। शब्द के रूप वाच् शब्द के समान होते हैं।

असज् = स्रन। शब्द के रूप भी वाच् शब्द के समान होते हैं।

Scanned by CamScanner

क्षुत् = छींक, योषित् = स्त्री, विद्युत् = बिजली, सरित् = नदी, समत् = युद्ध, हरित् = दिशा। के रूप ददत् शब्द के समान होते हैं।

आपद् = आपत्ति, दृषद् = पत्थर या चट्टान, परिषद् = सभा, प्रतिपद् = प्रतिपदा, मुद् = हर्ष, मृद् = मिट्टी, विपद् = आपत्ति, शरद् = वर्ष, सम्पद् = सम्पत्ति, सम्विद् = ज्ञान, इन शब्दों के रूप आपत्-द्, आपदौ, आपदः इत्यादि होते हैं। कोई विशेषता नहीं है।

सीमन् = सीमा। शब्द के रूप राजन् शब्द के समान होते हैं।

क्रुध् = क्रोध, क्षुध् = भूख, युध् = संग्राम, समिध् = समिधा। शब्द के रूप क्रुत्–द्, क्रुधौ, क्रुधः इत्यादि होते हैं।

संस्कृत में अनुवाद करो—

आपने यह जूता कितने मूल्य (मूल्येन) में लिया है। देव स्वर्ग में रहते हैं। सिंह ने मनुष्य की वाणी से (गिरा) कहा। मैं चारों दिशाओं में घूम कर आया। उस स्त्री की यह करामात ठीक नहीं। वहाँ वाणियों का प्रयोग नहीं करना चाहिये। जल से (अद्भिः) शरीर शुद्ध होते हैं। उसकी आँखों से आँसू तक नहीं निकलते। क्रोध से अपना भी अनर्थ होता है। स्वर्ग में अप्सराओं का वास होता था। शोक से लाभ नहीं होता। सम्पत्तियाँ आपत्तियों का स्थान हैं। सज्जन आपत्तियों को नहीं देखते।

हिन्दी में अनुवाद करो—

भवतेयमुपानद् तिसृभि र्मुद्राभिः क्रीता किम्। देवा दिवोऽवतरन्ति। तस्यां पुरि मानवा ना विद्यन्ते। हिता वाचमुवाच सः। काशी कस्यां दिशि विराजते। जग्मिनश्चतस्रो गतयो जायन्ते। अपः आनेतुं यान्ति। योषितस्तडिताः पश्यन्ति। सर्वाः ककुभः (दिशः) प्रसन्ना विद्यन्ते। सरितां जलं मिष्टं जायते। अविवेकः परमापदां पदम्। क्षुधा पीडितः किं पापं न करोति। शिष्याः पवित्राः समिधः आहरन्ति। परिव्राट् त्वचमीक्षते। पुण्यकृतः सम्पदं लभन्ते।

Scanned by CamScanner

❋ हलन्त नपुँसक लिङ्ग प्रकरण ❋

स्वनडुह् (सुन्दर बैल वाला कुल) शब्द

प्र०—स्वनडुत् - द्, स्वनडुही, स्वनड्वांहि । द्वि०-स्वनडुत्-द्, स्वनडुही, स्वनड्वांहि ।

यहाँ से आगे सर्वत्र जहाँ केवल प्रथमा, द्वितीया के रूप लिखे गये हैं वहाँ शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान समझना चाहिये ।

वार् (जल) शब्द

प्र०—वाः, वारी, वारि । द्वि०—वाः, वारी, वारि । तृ०—वारा, वार्भ्याम्, वार्भिः । च०—वारे, वार्भ्याम्, वार्भ्यः । पं०—वारः, वार्भ्याम्, वार्भ्यः । ष०—वारः, वारोः, वाराम् । स०—वारि, वारोः, वार्षु ।

ब्रह्मन् (ईश्वर) शब्द

प्र०—ब्रह्म, ब्रह्मणी, ब्रह्माणी । द्वि०—ब्रह्म, ब्रह्मणी, ब्रह्माणि ।

अहन् (दिन) शब्द

प्र०—अहः, अह्नी - अहनी, अहानि । द्वि०—अहः, अह्नी-अहनी, अहानि । तृ०—अह्ना, अहोभ्याम्, अहोभिः । च०—अह्ने, अहोभ्यां, अहोभ्यः । पं०—अह्नः, अहोभ्याम्, अहोभ्यः । ष०—अह्नः, अह्नोः, अह्नाम् । स०—अह्नि - अहनि, अह्नोः, अहस्सु, अहःसु ।

कर्मन् = कार्य या कर्म, चर्मन् = चमड़ा, जन्मन् = जन्म, धामन् = तेज या स्थान, नामन् = नाम, मर्मन् = सोना, भस्मन् = राख, मूर्धन् = मस्तक, रोमन्; लोमन् = रोम, वर्मन् = कवच, वेश्मन् = मकान, व्योमन् = आकाश, शर्मन् = सुख, सद्मन् = मकान, हेमन् = स्वर्ण के रूप ब्रह्मन् शब्द के समान होते हैं ।

Scanned by CamScanner

इन्नन्त दण्डिन् शब्द

प्र०—दण्डि, दण्डिनी, दण्डीनि। द्वि०—दण्डि, दण्डिनी, दण्डीनि। शेष—धनिन शब्द के समान।

सुपथिन् (सुपथगामी कुल)

प्र०—सुपथि, सुपथी, सुपन्थानि। द्वि०—सुपथि, सुपथी, सुपन्थानि। शेष—पथिन् शब्द के समान।

ऊर्ज् (बली कुल) शब्द

प्र०—ऊर्क्-ग्, ऊर्जी, ऊञ्जि। द्वि०—ऊर्क्-ग्, ऊर्जी, ऊञ्जि। तृ०—ऊर्जा, ऊर्ग्भ्याम्, ऊर्ग्भिः। च०—ऊर्जे, ऊर्ग्भ्याम्, ऊर्ग्भ्यः। पं०—ऊर्जः, ऊर्ग्भ्याम्, ऊर्ग्भ्यः। ष०—ऊर्जः, ऊर्जोः, ऊर्जाम्। स०—ऊर्जि, ऊर्जोः, ऊर्क्षु। सं०—प्रथमावत्।

जगत् (संसार) शब्द

प्र०—जगत्-द्, जगती, जगन्ति। द्वि०—जगत्-द्, जगती, जगन्ति। शेष—महत् शब्द के समान।

पृषत् = जलकण, वियत = आकाश, शकृत् = विष्टा। शब्द के रूप जगत्शब्द के समान होते हैं।

ददत् (देता हुआ कुल)

प्र०—ददत्-द्, ददती, ददन्ति-ददति। द्वि०—ददत्-द्, ददती, ददन्ति-ददति। शेषरूप रूप महत् शब्द के समान।

तुदत् (पीड़ादायी कुल)

प्र०—तुदत्-द्, तुदन्ती-तुदती, तुदन्ति। द्वि०—तुदत्-द्, तुदन्ती-तुदती, तुदन्ति। शेष—पुल्लिङ्ग के समान।

भात् (प्रकाश)

प्र०—भात्-द्, भाती-भान्ती, भान्ति। द्वि०—भात्-द्, भाती-भान्ती, भान्ति। शेष—पुल्लिङ्ग के समान।

Scanned by CamScanner

पचत् (पकाता हुआ)

प्र०—पचत्-द्, पचन्ती, पचन्ति। द्वि०—पचत्-द्, पचन्ती, पचन्ति। शेष पुल्लिङ्ग के समान।

दीव्यत् (खेलता हुआ)

प्र०—दीव्यत्-द्, दीव्यन्ती, दीव्यन्ति। द्वि०—दीव्यत्-द्, दीव्यन्ती, दीव्यन्ति। शेष महत् शब्द के समान।

धनुष् शब्द के रूप

प्र०—धनुः, धनुषी, धनूंषि। द्वि०—धनुः धनुषी, धनूंषि। तृ०—धनुषा, धनुर्भ्याम्, धनुर्भिः। च०—धनुषे, धनुर्भ्याम्, धनुर्भ्यः। पं०—धनुषः, धनुर्भ्याम्, धनुर्भ्यः। ष०—धनुषः, धनुषोः, धनुषाम्,। स०—धनुषि, धनुषोः, धनुष्षु, धनुःषु। सं०—प्रथमावत्।

अर्चिष् =प्रकाश, चक्षुष् =नेत्र, जनुष् =जन्म, ज्योतिष् = तेज, दोष् = भुजा, यजुष् = यजुर्वेद, रोचिष् = किरण, वपुष् = शरीर, सजुष् = साथी, सर्पिष् = घी, हविष् = हवन सामग्री। इन शब्दों के रूप भी धनुष् शब्द के समान होते हैं।

पयस् (जल, दूध) शब्द के रूप

प्र०—पयः, पयसी, पयांसि। द्वि०—पयः, पयसी, पयांसि।

अन्धस् = भात, अम्भस् = पानी, अयस् = लोहा, आगस् = अपराध, अंहस् = पाप, उरस् = छाती, ऊधस् = थन, एधस् = ईंधन, एनस् = पाप, ओजस् = तेज, चेतस् = चित्त, छन्दस् = छन्द, तपस् = तप, तमस् = अन्धकार, तरस् = वेग, तेजस् = तेज, नभस् = आकाश।

पयस् = दूध या पानी, मनस्=मन, मेदस् = चर्बी, यशस् = यश, यादस् = मछली, रक्षस् = राक्षस, रजस् = धूल या रज,

रेतस् = वीर्य, रोधस् = किनारा, वक्षस् = छाती, वचस् = वचन, वयस् = उम्र या आयु, वासस् = कपड़ा, विहायस् = आकाश, शिरस् = शिर, श्रवस् = कर्ण, स्रोतस् = इन्द्रिय; कर्ण या धारा, सरस् = सरोवर, श्रेयस् = कल्याण। इनके रूप पयस् शब्द के समान होते हैं।

संस्कृत में अनुवाद करो—

दिन का (अह्नः) कार्य दिन में ही करो। कर्म का फल पाया। अच्छे कार्यों में बहुत विघ्न होते हैं। मेरे मन में सन्देह है। आकाश से तारा गिरा। संसार में सब समान नहीं होते। धोबर धनुष पर बांधकर जाता है। साधु तप तपते हैं। विद्यार्थी घी चाहते हैं। वृद्ध की आंखें जीर्ण होती हैं। यह किस छन्द का पद्य है। यह पेटी चमड़े की है। महाजनों के चित्त में विकार नहीं होता। उपदेश को मैं हृदय में धारण करूँगा। सूर्य अन्धकार को हरेगा।

हिन्दी में अनुवाद करो—

गतान्यहानि नः पुनरागच्छन्ति। जन्मनः प्रभृति गौ र्नास्ति। जगति मृत्युरोधको नास्ति। तद्वाष्पयानं वियता जगाम। मनसि वचसि काये एकरूपा हि सन्तः। एनोभि र्दुगति र्जायते। अंहसो भीत्या न तत्र गच्छामः। चक्षुषा काणः। अल्पीयसा तु पुण्येन महत्पापं न नश्यति। महतां चेतांसि को विज्ञातुमर्हति। अम्भसि तैलबिन्दुः संकुचति। मनोरमे सरसि चक्षूंषि लुलुभिरे। इमाः पूलिकाः सर्पिषो विद्यन्ते। तव यशसा विश्वं व्याप्तम्। भस्मनि सर्पिषा हुतम्।

Scanned by CamScanner

परोपकार-प्रशंसा

धनानि जीवितं चैव, परार्थे प्राज्ञ उत्सृजेत् ।
तन्निमित्तो वरं त्यागो, विनाशे नियते सति ॥ १ ॥

आत्मार्थं जीवलोकेऽस्मिन्, को न जीवति मानवः ।
परं परोप— — —कारार्थं, यो जीवति स जीवति ॥ २ ॥

परोपकारशून्यस्य, धिङ्, मनुष्यस्य जीवितम् ।
धन्यास्ते पशवो येषां, चर्माण्युपकरोति वै ॥ ३ ॥

पशवो ऽपि हि जीवन्ति, केवलं स्वोदरम्भराः ।
तस्यैव जीवितं श्लाघ्यं, यः परार्थे हि जीवति ॥ ४ ॥

रविश्चन्द्रो घना वृक्षाः, नदी गावश्च सज्जनाः ।
एते परोप — — काराय, समुत्पन्नाः स्वयं भुवि ॥ ५ ॥

भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमै-र्नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताःसत्पुरुषाःसमृद्धिभिः, स्वभाव एवैष परोपकारिणां ॥६॥

परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः, परोपकाराय वहन्ति नद्यः ।
परोपकाराय दुहन्ति गावः, परोपकारार्थमिदं शरीरम् ॥ ७ ॥

सुशिक्षित-प्रशंसा

विद्वानेव विजानाति, विद्वज्जन—परिश्रमम् ।
न हि वन्ध्या विजानाति, गुर्वीं प्रसव-वेदनाम् ॥ १ ॥

किं कुलेन विशालेन, विद्याहीनस्य देहिनः ।
अकुलीनोऽपि विद्यावान्, देवैरपि स पूज्यते ॥ २ ॥

स्वगृहे पूज्यते मूर्खः, स्वग्रामे पूज्यते प्रभुः ।
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ ३ ॥

विद्वत्त्वं च नृपत्वं च, नैव तुल्यं कदाचन ।
स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्जते ॥ ४ ॥

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते, पूज्यानां तु विमानता ।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते, दुर्भिक्षं मरणं भयम् ॥ ५ ॥

Scanned by CamScanner

※ कर्त्तव्यो नातिसंचयः ※

आसीत्कल्याणकटकवास्तव्यो भैरवो नाम व्याधः। स चैकदा मृगमन्विष्यमाणो विन्ध्याटवीं गतवान्। ततो व्यापादित मृगमादाय गच्छता तेन घोराकृतिः शूकरो दृष्टः। तेन व्याधेन मृगं भूमौ निधाय शूकरः शरेणाहतः। शूकरेणापि घनघोरगर्जनं कृत्वा स व्याधो मुष्कदेशे हतः संछिन्नद्रुम इव भूमौ निपपात। अथ तयोः पादास्फालनेन सर्पोऽपि मृतः।

अथानन्तरं दीर्घरावो नाम जम्बुकः परिभ्रमन्नाहारार्थी तान्मृतान्मृगव्याधसर्पशूकरानपश्यत्। अचिन्तयच्च—'अहो, अद्य महद् भोजनं मे समुपस्थितम्। तद्भवतु। एषां मांसै र्मासत्रयं मे सुखेन गमिष्यति।

मासमेकं नरो याति, द्वौ मासौ मृग—शूकरौ।
अहिरेकं दिनं याति, अद्य भक्ष्यो धनुर्गुणः॥

ततः "प्रथमबुभुक्षायामिदं निःस्वादु कोदण्डलग्नं स्नायुबन्धनं खादामि" इत्युक्त्वा तथा कृते सति छिन्ने स्नायुबन्धने उत्पतितेन धनुषा हृदि निर्भिन्नः स दीर्घरावः पञ्चत्वं गतः। अतः प्रोक्तम्—

कर्त्तव्यः, संचयो नित्यं, कर्त्तव्यो नातिसंचयः।
पश्य संचयशीलोऽसौ, धनुषा जम्बुको हतः॥

※ रत्न कण ※

सहसा विदधीत न क्रिया, मविवेकः परमा - पदाम्पदम्।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं, गुणलुब्धा स्वयमेव सम्पदः॥
असम्भवं हेममृगस्य जन्म, तथापि रामो लुलुभे मृगाय।
प्रायः समापन्न-विपत्तिकाले, धियोऽपि पुंसाम्मलिना भवन्ति॥

Scanned by CamScanner

स्वभाव की अनिवार्यता

यः स्वभावो हि यस्यास्ति, स नित्यं दुरतिक्रमः।
श्वा यदि क्रियते राजा, तत्किं नाश्नात्युपानहम् ॥ १ ॥
यदि स्याच्छीतलो वह्निः, शीतांशु र्दहनात्मकः।
न स्वभावोऽत्र मर्त्यानां, शक्यते कर्तुमन्यथा ॥ २ ॥
स्वभावो नोपदेशेन, शक्यते कर्तुमन्यथा।
सुतप्तमपि पानीयं, पुन गच्छति शीतताम् ॥ ३ ॥
सन्त्यज्य शूर्प - वद्दोषान्, गुणान्गृह्णाति सज्जनः।
दोषग्राही गुणत्यागी, पल्लोलीव हि दुर्जनः ॥ ४ ॥
उपदेशो हि मूर्खाणां, प्रकोपाय न शान्तये।
पयः – पानं भुजङ्गानां, केवलं विषवर्धकम् ॥ ५ ॥
दीपनिर्वाण — गन्धं च, सुहृद्वाक्यमरुन्धतीम्।
न जिघ्रन्ति न शृण्वन्ति, न पश्यन्ति गतायुषः ॥ ६ ॥
उशना वेद यच्छास्त्रं, यच्च वेद वृहस्पतिः।
स्वभावेनैव तच्छास्त्रम्, स्त्रीबुद्धौ प्रतिष्ठितम् ॥ ७ ॥
त्रिभि र्वर्षैस्त्रिभि र्मासै – स्त्रिभिःपक्षैस्त्रिभिर्दिनैः।
अत्युत्कटैः पाप पुण्यै – रिहैव फलमश्नुते ॥ ८ ॥

❀ एकता—प्रशंसा ❀

अल्पानामपि वस्तूनां, संहतिः कार्यसाधिका।
तृणै र्गुणत्वमापन्नै, र्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः ॥ १ ॥
बहूनामप्य — साराणां, समवायो हि दुर्जयः।
तृणैरावेष्टयते रज्जु — र्येन नागोऽपि बध्यते ॥ २ ॥
एकः स्वादु न भुञ्जीत, नैकः सुप्तेषु जागृयात्।
एको न गच्छेदध्वानं, नैकश्चार्थान्प्रचिन्तयेत् ॥ ३ ॥
यः पृष्ट्वा कुरुते कार्यं, प्रष्टव्यान्स्वहितान्गुरून्।
न तस्य जायते विघ्नः, कस्मिंश्चिदपि कर्मणि ॥ ४ ॥

Scanned by CamScanner

※ उपायेन यच्छक्यं न तच्छक्यं पराक्रमैः ※

अस्ति ब्रह्मारण्ये कर्पूरतिलको नाम हस्ती। तमवलोक्य सर्वे शृगालश्चिन्तयन्ति स्म। यद्ययं केनाप्युपायेन म्रियते तदास्माकमेतद्देहेन मासचतुष्टयस्य भोजनं भविष्यति।

तत्रैकेन वृद्धशृगालेन प्रतिज्ञातम्, मया बुद्धिप्रभावादस्य मरणं साधयितव्यम्। अनन्तरं स वञ्चकः कर्पूरतिलकसमीपं गत्वा साष्टाङ्गपातं प्रणम्योवाच। देव! दृष्टिप्रसादं कुरु। हस्ती ब्रूते कस्त्वम्। कुतः समायातः।

सोऽवदत् - जम्बुकोऽहम्। सर्वैर्वनवासिभिः पशुभिर्मिलित्वाहं भवत्सकाशं प्रस्थापितः। यद् विना राजावस्थातुं न युक्तम् तदत्राटवीराज्येऽभिषेक्तुम् भवान् सर्वस्वामिगुणोपेतो निरूपितः। तद्यथा लग्नवेला न विचलति तथा कृत्वा सत्वरमागच्छतु देवः। इत्युक्त्वोत्थाय चलितः।

ततोऽसौ राज्यलोभाकृष्टः कर्पूरतिलकः शृगालवर्त्मना धावन् महापङ्के निमग्नः पलायितुमक्षमः संजातः। ततस्तेन हस्तिनोक्तम् — सखे शृगाल! किमधुना विधेयम्। पङ्के निपतितोऽहं म्रिये। परावृत्य पश्य।

शृगालेन विहस्योक्तम्—देव! मम पुच्छकावलम्बनं कृत्वोत्तिष्ठ, यन्मद्विधस्य वचसि त्वया प्रत्ययः कृतस्तदनुभूयतामशरणं दुःखम्।

ततो महापङ्के निमग्नो हस्ती शृगालैर्भक्षितः। अतः प्रोक्तम्—

उपायेन हि यच्छक्यं, न तच्छक्यं पराक्रमैः।
शृगालेन हतो हस्ती, गच्छता पङ्कवर्त्मना॥

बुद्धिर्यस्य बलं तस्य, निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्

अस्ति मन्दारनाम्नि पर्वते दुर्दान्तो नाम सिंहः। स च सर्वदा पशूनां वधं कुर्वन्नास्ते। ततः सर्वैः पशुभि र्मिलित्वा स सिंहो विज्ञप्तः। मृगेन्द्र! किमर्थमेकदा बहुपशुघातं करोषि। यदि प्रसादो भवति तदा वयमेव भवदाहारार्थं प्रत्यहमेकैकं पशुं प्रेषयामः। ततः सिंहेनोक्तम्—यद्येतदभिमतं भवतां तर्हि भवतु तत्। ततः प्रभृत्येकैकं पशुमुपकल्पितं भक्षयन्नास्ते।

अथ कदाचिद् वृद्धशशकस्य वारः समायातः। सोऽचिन्तयत्—"पञ्चत्वं चेद् गमिष्यामि, किं सिंहानुनयेन मे" तन्मन्दं मन्दं गतः।

ततः सिंहोऽपि क्षुधापीडितः कोपात्तमुवाच—कुतस्त्वं विलम्ब्य समागतोऽसि। शशकोऽब्रवीत्—देव! नाहमपराधी। आगच्छन्पथि सिंहान्तरेण बलाद् धृतः। तस्याग्रे पुनरागमनाय शपथं कृत्वा स्वामिनं निवेदितुमत्रागतोऽस्मि।

सिंहः सकोपमाह—सत्वरं गत्वा तं दुरात्मानं दर्शय, स दुरात्मा क्व तिष्ठति।

ततः शशकस्तं गृहीत्वा गभीरकूपं दर्शयितुं गतः। तत्रागत्य 'स्वयमेव पश्यतु स्वामी' इत्युक्त्वा तस्मिन्कूपजले तस्य सिंहस्य प्रतिबिम्बं दर्शितवान्। ततोऽसौ क्रोधाध्मातो दर्पात्तस्योपर्यात्मानं निक्षिप्य पञ्चत्वं गतः। अतः प्रोक्तम्—

बुद्धिर्यस्य बलं तस्य, निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्।
पश्य सिंहो मदोन्मत्तः, शशकेन निपातितः॥

दुर्जनेन सह गमनाद्धानिः—

एकदा यात्रा-प्रसङ्गेन सर्वे पक्षिणः समुद्रतीरं गताः। ततः काकेन सह वर्तकश्चलितः। अथ गच्छतो गोपालस्य दधिभाण्डाद्वारम्वारं स

काको दधि खादति । ततो यावदसौ दधिभाण्डं भूमौ निधायोर्ध्वमवलोकते तावत्तेन काकवर्तकौ दृष्टौ । ततस्तेन खेदितः काकः पलायितः । वर्तकः स्वभाव-निरपराधो मन्दगतिस्तेन प्राप्तो व्यापादितः । ततः प्रोक्तम् –

न स्थातव्यं न गन्तव्यं, दुर्जनेन समं क्वचित् ।
काकसङ्गाद्धतो हंसः, तिष्ठन् गच्छंश्च वर्तकः ॥

निष्प्रयोजनकार्याद्धानिः

अस्ति मगधदेशे धर्मारण्यसन्निहितवसुधायां शुभदत्तनाम्ना कायस्थेन विहारः कर्तुमारब्धः । तत्र करपत्रदार्यमाणैकस्तम्भस्य कियद्दूरस्फाटितस्य काष्ठखण्डद्वयमध्ये कीलकः सूत्रधारेण निहितः । तत्र बलवान्वानरयूथः क्रीडन्नागतः ।

एको वानरः कालप्रेरित इव तं कीलकं हस्ताभ्यां धृत्वोपविष्टः । तत्र तस्य लम्बमानं मुष्कद्वयं काष्ठखण्डद्वयाभ्यन्तरे प्रविष्टम् ।

अनन्तरं स च सहजचपलतया महता प्रयत्नेन तं कीलकमाकृष्टवान् । आकृष्टे च कीलके चूर्णिताण्डद्वयः स पञ्चत्वं गतः । ततः प्रोक्तम्—

अव्यापारेषु व्यापारं, यो नरः कर्तुमिच्छति ।
स भूमौ निहतः शेते, कीलोत्पाटीव वानरः ॥

परिश्रमान्न भेतव्यम्

अनलसः सूर्यः सदा प्रकाशं प्रयच्छति । क्षणमपि प्रकाशं न दद्यात्तर्हि विश्वस्य विध्वंसो भवेत् । रविः प्रकाशदाने कदापि विलम्बं न विदधाति । यूयमपि रवितुल्यं सततं कार्यं कुरुत । कार्यकरणपरिश्रमात् कदापि नो बिभीत । ये बालकाः सूर्यसमानं पुरुषार्थं कुर्वन्ति, प्रमादमालस्यं च त्यजन्ति, तेषां यशोराशिः सर्वत्र वर्धते । यत्कार्यं सम्मुखमागच्छेत्तन्मनो नियोज्य विधेयम् । परिश्रमात्पलायनं निन्दामुत्पादयति । परिश्रम एव मानवमुन्नमयति । परिश्रमेणैव सर्वाणि कार्याणि सिध्यन्ति ।

Scanned by CamScanner

विद्या प्रशंसा

साहित्यसंगीत – कलाविहीनः, साक्षात्पशुःपुच्छविषाणहीनः ।
तृणं न खादन्नपि जीवमानो, तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥१॥

न चोरहार्यं न च राजहार्यं, न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि ।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ॥२॥

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं, प्रच्छन्न – गुप्तं धनम् ।
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी, विद्या गुरूणां गुरुः ॥३॥
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने, विद्या परा देवता ।
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं, विद्या – विहीनः पशुः ॥४॥

सद्विद्या यदि का चिन्ता, वराको – दर – पूरणे ।
शुकोऽप्यशन – – माप्नोति, राम रामेति च ब्रुवन् ॥५॥

विद्या ददाति विनयं, विनयाद्याति पात्रताम् ।
पात्रत्वाद्धन – – माप्नोति, धनाद्धर्मं ततः सुखम् ॥६॥

हर्तुं न गोचरं याति, दत्ता भवति विस्तृता ।
कल्पान्ते ऽपि न वा नश्येत्, किमन्यद्विद्यया समम् ॥७॥

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं, विद्यते तव भारति ॥
व्ययतो – – वृद्धिमायाति, क्षयमायाति सञ्चयात् ॥८॥

अनेक – – संशयोच्छेदि, परोक्षार्थस्य दर्शनम् ।
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं, यस्य नास्त्यन्ध एव सः ॥९॥

रूप – यौवन – सम्पन्नाः, विशाल – कुल – सम्भवाः ।
विद्याहीना न शोभन्ते, निर्गन्धा इव किंशुकाः ॥१०॥

यो न भ्रमति देशेषु न च संसेवते बुधान् ।
तस्य संकुचिता बुद्धिः, घृतविन्दु – रिवाम्भसि ॥११॥

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा, शास्त्रं तस्य करोति किम् ॥
लोचनाभ्यां विहीनस्य, दर्पणः किं करिष्यति ॥१२॥

Scanned by CamScanner

विद्वानेवोपदेशष्टव्यो, नाविद्वांस्तु कदाचन

अस्ति नर्मदातीरे विशालः शाल्मलीतरुः। तत्र निर्मितनीडक्रोडे पक्षिणो निवसन्ति सुखेन। अथैकदा वर्षासु नीलपटलरावृते नभस्तले धारासारैर्महती वृष्टिर्बभूव। ततो वानरांश्च तरुतलेऽवस्थिताञ्शीताकुलान्कम्पमानानवलोक्य कृपया पक्षिभिरुक्तम्। भो वानराः। श्रृणुत अस्माभिश्चञ्चुमात्राहृतैस्तृणैर्नीडा निर्मिताः, पुनर्हस्तपादादिसंयुक्ता यूयं किमिति सीदथ।

तच्छ्रुत्वा वानरैर्जातामर्षैरालोचितम्-अहो निर्वातनीडगर्भावस्थिताः सुखिनः पक्षिणोऽस्मान्निन्दन्ति। भवतु तावद्वृष्टेरुपशमः। अनन्तरं शान्ते पानीयवर्षे तैर्वानरैर्वृक्षमारुह्य सर्वे नीडा भग्नास्तेषामण्डानि चाधः पातितानि। अतः उक्तम्—

विद्वानेवोपदेशष्टव्यो, नाविद्वांस्तु कदाचन।
वानरानुपदिश्याथ, स्थानभ्रंशं ययुः खगाः॥

दुर्जनेन सह स्थिते हानिः

अस्त्युज्जयिनीवर्त्मप्रान्तरे प्लक्षतरुः। तत्र हंसकाकौ निवसतः। कदाचिद् ग्रीष्मसमये परिश्रान्तः कश्चित्पथिकस्तत्र तरुतले धनुःकाण्डं सन्निधाय सुप्तः। तत्र क्षणान्तरे तन्मुखाद् वृक्षच्छायापगता। ततः सूर्यतेजसा तन्मुखं व्याप्तमालोक्य तद्वृक्षस्थितेन हंसेन कृपया पक्षौ प्रसार्य पुनस्तन्मुखे छाया कृता। ततो निर्भरनिद्रासुखिना तेन मुखव्यादानं कृतम्।

अथ परसुखासहिष्णुः स काकस्तस्य मुखे स्वभावदौर्जन्येन पुरीषोत्सर्गं कृत्वा पलायितः। ततो यावदसौ पान्थ उत्थायोर्ध्वं निरीक्षते तावत्तेनावलोकितो हंसः काण्डेन हतो व्यापादितश्च। अतः दुर्जनेन सह वासः सर्वथा त्याज्यः।

कायः सन्निहितापायः, सम्पदः पदमापदाम् ।
समागमाः सापगमाः, सर्वं वै वस्तु भङ्गुरम् ॥ १ ॥
प्रतिक्षणमयं कायः, क्षीयमाणो न लक्ष्यते ।
आमकुम्भ इवाम्भस्थो, विशीर्णः सन् विभाव्यते ॥ २ ॥
अनित्यं यौवनं रूपं, जीवितं द्रव्यसञ्चयः ।
ऐश्वर्यं प्रिय — संवासो, मुह्येत्तत्र न पण्डितः ॥ ३ ॥
जलान्त — श्चन्द्र — चपलं, जीवितं खलु देहिनाम् ।
तथाविधमिति ज्ञात्वा, शश्वत्कल्याण—माचरेत् ॥ ४ ॥
यथा हि पथिकः कश्चि, च्छायामाश्रित्य तिष्ठति ।
विश्रम्य च पुन गच्छेत् , तथा वस्तु — समागमः ॥ ५ ॥
आपात — रमणीयानां, संयोगानां प्रियैः सह ।
अपथ्यानामि — वान्नानां, परिणामो ऽतिदारुणः ॥ ६ ॥
संयुक्तानां वियोगश्च, भविता हि नियोगतः ।
किमन्यै–रङ्गतो - ऽप्यङ्गी, निःसङ्गो विनिवर्तते ॥ ७ ॥
आधि–व्याधि– परीतापा- दद्य श्वो वा विनाशिने ।
को हि नाम शरीराय, धर्मापेतं समाचरेत् ॥ ८ ॥
स्रष्टा मूत्रपुरीषार्थ, माहाराय च केवलम् ।
धर्महीना परार्थाय, पुरुषाः पशवो यथा ॥ ९ ॥
यस्य धर्म — विहीनानि, दिनान्यायान्ति यान्ति च ।
स लोहकार — भस्त्रेव, श्वसन्नपि न जीवति ॥१०॥
श्रूयतां धर्म — सर्वस्वं, श्रुत्वा चैवावधार्यताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि, परेषां नो समाचरेत् ॥११॥
परोपदेशे पाण्डित्यं, सर्वेषां सुकरं नृणाम् ।
धर्मे स्वीय — मनुष्ठानं, कस्यचित्तु महात्मनः ॥१२॥

दुर्जनः परिहर्तव्यो, विद्ययालङ्कृतो ऽपि सन् ।
मणिना भूषितः सर्पः, किमसौ न भयङ्करः ॥ १ ॥

अहो दुर्जनसंसर्गाद्, मानहानिः पदे पदे ।
पावको लोहसङ्गेन, मुद्गरैरभि — हन्यते ॥ २ ॥

अति-परिचयाद — वज्ञा, संततगमनादनादरो भवति ।
मलये भिल्लपुरन्ध्री, चंदनतरुकाष्ठमिन्धनकुरुते ॥३॥

मन्त्रे तीर्थे द्विजे देवे, दैवज्ञे भेषजे गुरौ ।
यादृशी भावना यस्य, सिद्धि भवति तादृशी ॥ ४ ॥

आत्मनो मुखदोषेण, बध्यन्ते शुकसारिकाः ।
बकास्तत्र न बध्यन्ते, मौनं सर्वार्थसाधनम् ॥ ५ ॥

न ह्यकालकृता वाञ्छा, सम्पुष्णाति समीहितम् ।
किम्पुष्पावचयः शक्यः, फलकाले समागते ॥ ६ ॥

अन्यदीय—मिवात्मीय—, मपि दोषं प्रपश्यता ।
कः समः खलु मुक्तो ऽयं, युक्तः कायेन चेदपि ॥ ७ ॥

जातमात्रं न यः शत्रुं, व्याधिं च प्रशमं नयेत् ।
अतिपुष्टाङ्गयुक्तो — ऽपि, सः शनैस्तेन हन्यते ॥ ८ ॥

अनारम्भो हि कार्याणां, प्रथमं बुद्धिलक्षणम् ।
प्रारब्धस्यान्त — गमनं, द्वितीयं बुद्धिलक्षणम् ॥ ९ ॥

निर्विषेणापि सर्पेण, कर्तव्या महती फटा ।
विषं भवतु मा वास्तु, फटाटोपो भयङ्करः ॥१०॥

अकृत्य नैव कर्तव्यं, प्राणत्यागे ऽपि संस्थिते ।
न च कृत्यं परित्याज्य— मेष धर्मः सनातनः ॥११॥

स्वच्छन्द - वन - जातेन, शाकेनापि प्रपूर्यते ।
अस्य दग्धोदरस्यार्थे, कः कुर्यात्पातकं महत् ॥१२॥

एकाको गृहसन्त्यक्त, पाणिपात्रो दिगम्बरः।
सो ऽपि सम्बाध्यते लोके, तृष्णया पश्य कौतुकम्।। १ ।।
इच्छन्ति शती सहस्रं सहस्री लक्षमीहते।
लक्षाधिपस्तथा राज्यं, राज्यस्थः स्वर्गमीहते।। २ ।।
जीर्यन्ते जीर्यतः केशाः, दान्ता जीर्यन्ति जीर्यतः।
जीर्यते चक्षुषा श्रोत्रे, तृष्णैका तरुणायते।। ३ ।।
धर्मार्थं यस्य वित्तेहा, वरं तस्य निरीहता।
प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य, दूरादस्पर्शनं वरम्।। ४ ।।
सन्तोषामृत — तृप्तानां, यत्सुख शान्तचेतसाम्।
कुतस्तद्धन — लुब्धाना - मितश्चेतश्च धावताम्।। ५ ।।

सर्पाः पिबन्ति पवनं, न च दुर्बलास्ते,
शुष्कैस्तृणै वंनगजा, बलिनो भवन्ति।
वन्यः फलै र्मुनिवरा, गमयन्ति कालं,
सन्तोष एव पुरुषस्य, परं निधानम्।। ६ ।।

दया—प्रशंसा

प्राणा यथात्मनो ऽभीष्टा, भूतानामपि वै तथा।
आत्मौपम्येन जीवेषु, दयां कुर्वन्ति साधवः।। १ ।।
न हिंस्यात् सर्वभूतानी— त्यार्षं धर्मं प्रमाणयन्।
सागसो ऽपि सदा रक्षे— च्छक्त्या किन्नु निरागसः।। २ ।।
हिंसकान्यपि भूतानि, यो हिंसति स निर्घृणः।
स याति नरकं घोरं, किं पुन र्यः शुभानि च।। ३ ।।
अहिंसापूर्वको धर्मो, यस्मात् सद्भिरुदाहृतः।
यूकमत्कुण — दंशादीं — स्तस्मात्तानपि रक्षयेत्।। ४ ।।
वृक्षांश्छित्त्वा पशून्हत्वा, कृत्वा रुधिरकर्दमम्।
यद्येवं गच्छति स्वर्गं, नरकं को हि गच्छति।। ५ ।।

वज्रादपि कठोराणि, मृदूनि कुसुमादपि ।
लोकोत्तराणां चेतांसि, को हि विज्ञातुमर्हति ॥ १ ॥

नारिकेल — समाकारा, वर्तन्ते हि सुहृज्जनाः ।
अन्ये बदरिकाकारा, बहिरेव मनोहराः ॥ २ ॥

यथा चित्तं तथा वाचो, यथा वाचस्तथा क्रियाः ।
चित्ते वाचि क्रियायां च, साधूना—मेक —रूपता ॥ ३ ॥

निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु, दयां कुर्वन्ति साधवः ।
न हि संहरते ज्योत्स्नां, चन्द्रश्चाण्डाल—वेश्मनः ॥ ४ ॥

सम्पत्तौ च विपत्तौ च, महता — मेक — रूपता ।
उदये सविता रक्तो, रक्तश्चास्तमये तथा ॥ ५ ॥

अपेक्षन्ते न च स्नेहं, नो पात्रं नो दशान्तरम् ।
सदा लोकहिते युक्ताः, रत्न — दीपा इवोत्तमाः ॥ ६ ॥

पर — दुखं समाकर्ण्य, स्वभाव — सरलो जनाः ।
उपकारासमर्थत्वात् , प्राप्नोति हृदये व्यथाम् ॥ ७ ॥

साधोः प्रकोपितस्यापि, मनो नायाति विक्रियाम् ।
न हि तापयितुं शक्यं, सागराम्भ—स्तृणोल्कया ॥ ८ ॥

उपकारिषु यः साधुः, साधुत्वे तस्य को गुणः ।
अपकारिषु यः साधुः, सः साधुः सद्भिरुच्यते ॥ ९ ॥

यस्य न विपदि विषादः, सम्पदि हर्षो रणे च धीरत्वम् ।
त भुवनत्रयतिलकं, जनयति जननीसुतं विरलम् ॥१०॥

नष्टं मृतमतिक्रान्तं, नानुशोचन्ति पण्डिताः ।
पण्डितानां च मूर्खाणा— मियमेव विशेषता ॥११॥

अयं निजः परो वेति, गणना लघुचेतसाम् ।
उदार — चरिता—नान्तु, वसुधैव कुटुम्बकम् ॥१२॥

Scanned by CamScanner

* मुहावरेदार प्रयोग *

अग्निसात्कुरु—आग में फेंक दो। अजीर्णे भोजनं विषम्।

अतिदानाद् बलि र्बद्धः। अतिपरिचयादवज्ञा।

अतिभूमिं गतोऽस्या अनुरागः = इसके प्रेम की सीमा नहीं रही।

अति सर्वत्र वर्जयेत्। अनुतिष्ठ (कर) आत्मनो नियोगम् (कर्त्तव्य)

अपि कुशल भवतः = आप सकुशल तो हैं? अपुत्रस्य गृह शून्यम्।

अलमतिविस्तरेण। आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया (शिरोधार्य)

एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जति (छिप जाता है)

कर्त्तव्य हि सतां वचः। कालस्य कुटिला गतिः।

का पूस्ते—तुम्हारा गांव कौन है? किन्नामासि—तुम्हारा नाम क्या है?

किमिष्टमन्नं खरसूकराणाम्— गधा या सुअर को अन्न नहीं भाता।

को वृत्तान्तस्तत्रभवत्याः— श्रीमती जी का कैसा हाल है?

त्वद्वचः मम हृदये शल्यं जातम्। न त्वा तृणाय मन्ये।

तस्य यशः इयत्तया परिच्छेतुं नालम्। नायं परिहाससमयः।

न चेदन्यकार्यातिपातः —यदि कोई कार्य नहीं आ पड़ेगा तो?

न ते वचाऽभिनन्दामि —मैं तेरे वचन का समर्थन नहीं करता।

नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण —सुख और दुःख पहिये के समान घूमते रहते हैं। न हि सर्वविदः सर्वे।

मनो मे संशयमेव गाहते। मनुष्याः स्खलनशालाः।

परिहासविजल्पितं सखे! भूस्वर्गायमानमेतत्स्थानम्।

वर्णनविषयातिक्रान्तं तत्स्थानम्—उस स्थान का वर्णन नहीं हो सकता।

वसुधां तस्य हस्तगामिनाम करोत्- उसने भूमि उसे दे दो।

वरं मृत्यु नं पुनरपमानः। शृणु मे सावशेषं वचः।

स सत्कारा मम मानसानाम् (विचारों के) अप्यभूमिः (बाहर था)

स हि महति जीवितसंशयेऽवर्तत। स्वभावो हि दुरतिक्रमः।

Scanned by CamScanner

१—अतिपरिचयादवज्ञा, सन्ततगमनादनादरो भवति।
२—अपुष्फला हि विद्या स्यादवज्ञैकफला क्वचित्।
३—अवश्यं ह्यनुभोक्तव्यं, कृतं कर्म शुभाशुभम्।
४ आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।
५—इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः। ६—अर्धो-घटो घोषमुपैति नूनम्।
७—उदारचरितानां तु, वसुधैव कुटुम्बकम्।
८—एका क्रिया द्वयर्थकरी प्रसिद्धा।
९ किं पुष्पावचयः शक्यः, फलकाले समागते।
१०—गतः कालो न चायाति। ११—वृद्धैः फलं ह्यात्महितप्रवृत्तिः।
१२—चक्रवत्परिवर्तन्ते, सुखानि च दुःखानि च।
१३—छिद्रेष्वनर्था: बहुलीभवन्ति, दूरतः ढक्का: रम्याः।
१४—न सुवर्णे ध्वनिस्तादृक्, यादृक्कांस्ये प्रजायते।
१५—नहि सुखं दुःखैर्विना लभ्यते। १६—यस्य यष्टिका तस्य महिषी।
१७ निजसदननिविष्टः, श्वा न सिंहायते किम्।
१८—निरस्तपादपे देशे, एरण्डोऽपि द्रुमायते।
१९—पाणौ कृतेन दीपेन, किं कूपे पततां फलम्।
२०—प्रक्षालनाद्धि पङ्कस्य, दूरादस्पर्शनं वरम्।
२१—प्रथमग्रासे मक्षिकापातः। २२—दग्धाः अम्लाः कृतास्तेन।
२३—यादृशी भावना यस्य, सिद्धिर्भवति तादृशी।
२४—ये गर्जन्ति ते न वर्षन्ति। २५—अति सर्वत्र वर्जयेत्।
२६—रोचते न हि शौण्डाय परपिण्डादिदोनवा।
२७—सन्दीप्ते भवने तु कूपखननं वृथा। २८-शठे शाठ्यं समाचरेत्।
२९—सति हेतौ विकारस्य, तदभावो हि धीरता।
३०—जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
३१—नवाङ्गनानां नव एव पन्थाः। [९०

अशुद्धि संशोधन

अशुद्ध वाक्य—		शुद्ध वाक्य—
भवान्मम मित्रः असि	..	भवान्मम मित्रमस्ति ।
ते तव अनुजाः सन्ति	....	सः तव अनुजः अस्ति ।
गुरुं नमोऽस्तु	....	गुरवे नमोऽस्तु ।
मातुः सह गच्छति	....	मात्रा सह गच्छति ।
पुत्र भोजनं देहि	....	पुत्राय भोजनं देहि ।
गुरुः छात्रेण कुप्यति	....	गुरुः छात्राय कुप्यति ।
मित्रस्य विना न याति	...	मित्र विना न याति ।
इमं पुस्तकं पश्य	...	इदं पुस्तक पश्य ।
कर्मस्य फलं विद्यते	....	कर्मण फल विद्यते ।
सर्वाः नरः यान्ति	....	सर्वे नराः यान्ति ।
सः इद स्त्रीमपश्यत्	....	सः इमां स्त्रीमपश्यत् ।
चत्वारः बालिकाः सुन्दराः	....	चतस्रः बालिकाः सुन्दर्यः ।
पशुजन्मे सुखं नास्ति	....	पशुजन्मनि सुखं नास्ति ।
मे लक्ष्मो नास्ति	...	मम लक्ष्मोः नास्ति ।
भूपत्याः आज्ञा विद्यते	....	भूपतेः आज्ञा विद्यते ।
मम मने सन्देहः वर्तते	....	मम मनसि सन्देहः वर्तते ।
भवानस्य किं नाम विद्यति	....	भवतः किं नाम विद्यते ।
प्रतिदिनस्य प्रातरि याति	....	प्रतिदिनं प्रातः याति ।
अहं दिवे गच्छति	....	अहं दिवा गच्छामि ।
यूयं गमिष्यन्ति	...	यूय गमिष्यथ ।

इसी प्रकार अन्य वाक्य अशुद्ध कर शुद्ध कराना चाहिये और अशुद्धि का कारण भी समझना चाहिये ।

Scanned by CamScanner

अनुवादार्थ हिन्दी अवतरण

सेवा धर्म

एक बार एक परोपकारी बन्धु के पास रात्रि में एक देव आया और नोट-बुक दिखाकर बोला कि मैं उन महानुभावों के नाम लिख रहा हूँ जो शुद्ध हृदय से ईश्वर को सेवा करते हैं। कहिये इसमें आपका नाम लिखूं या नहीं ?" परोपकारी बन्धु ने नम्रतापूर्वक कहा— "क्षमा कीजिये महाशय, मेरा नाम इस डायरी में नहीं लिखें। मैं तो ईश्वर के सेवकों की सेवा करता हूं, यदि मनुष्य-सेवकों की कोई डायरी आपके पास हो, तब सहर्ष उसमें मेरा नाम लिख सकते हैं।" सुबह देखा तो सर्व प्रथम स्वर्णाक्षरों में उसी का नाम डायरी में अङ्कित था।

तर्क—विहीनता

एक बार किसीकी ससुराल के नाई ने आकर सूचना दी कि— "तुम्हारी स्त्री विधवा हो गई है" सुना तो दामाद ने छाती पीट लिया। रोने का शोर सुनकर पड़ोसी आकर रोने का कारण पूछने लगे। कारण सुनकर हंसते हुये बोले, "तुम बड़े अजीब आदमी हो जब तुम जीवित हो तो तुम्हारी स्त्री विधवा कैसे हो सकती है।" दामाद ने कहा कि यह तो मैं भी जानता हूँ कि पति के स्वर्ग गये बिना स्त्री विधवा नहीं होती, पर, क्या करूं ? ससुराल का नाई होने के कारण यह भी तो विश्वासपात्र है, इसकी बात पर भी विश्वास करना आवश्यक है।

ठग का चक्कर

एक ठग ने किसी हलवाई को ५०० लड्डू बनवाने की आज्ञा दी और दूसरे दुकानदार से २००) रु० का सौदा खरीदा। सौदा कर चुकने पर वह बोला—"मेरे साथ किसी आदमी को भेजो, ताकि अपने दलाल से रुपया दिला दूं।" दुकानदार ने सहज स्वभाव

Scanned by CamScanner

अपना आदमी उसके साथ कर दिया। ठग उस आदमी को हलवाई की दुकान पर ले जाकर बोला—"२५० गिन कर इनको दे दीजिये और ५० मैं स्वय ले जाऊँगा।" हलवाई ने कहा, "बहुत अच्छा" कहने पर ठग तो चलता बना। जब हलवाई २५० लड्डू थाल में लगाकर दुकानदार के आदमी को देने लगा तो वह आदमी भी चक्कर खाया। भेद खुलने पर विदित हुआ कि ठग ने दोनों ही दुकानदारों को बेवकूफ बनाया।

घर का भेदी

कुल्हाड़ियों से भरी गाड़ी को आते देखकर जंगल के वृक्ष रोने लगे। एक बूढ़ वृक्ष ने रोने का कारण पूछा तो वृक्षों ने गाड़ी की ओर संकेत कर कहा कि—इसमें भरी हुई कुल्हाड़ियाँ हमें काट कर नष्ट कर देंगी। बूढ़ा वृक्ष मुसकराते हुए बोला, डरो नहीं, इनके साथ बेंट के रूप में जब तक हमारा भाई न लगा होगा, ये हमें तिलमात्र भी कष्ट नहीं पहुँचा सकतीं। यदि रावण का भाई विभीषण राम के साथ, प्रताप का भाई शक्तिसिंह अकबर के साथ और पृथ्वीराज का भाई जयचन्द शहाबुद्दीन के साथ न होता तो उन्हें पराजित करने का सामर्थ्य किस में था।

गर्व की विफलता

भरत चक्रवर्ती षट्खण्ड का विजय करके वृषभाचल पर्वत पर अपना नाम अङ्कित करने जब गये तब उन्हें अभिमान हुआ कि मैं ही एक ऐसा प्रथम चक्रवर्ती हूँ जिसका नाम इस पर्वत पर सब से शिरोमणि होगा। किन्तु पर्वत पर पहुँचते ही उनका सारा गर्व खर्व हो गया, जब उन्होंने देखा कि यहाँ तो नाम लिखने तक को स्थान नहीं, न जाने कितने और चक्रवर्ती पूर्वकाल में यहाँ नाम लिख गये हैं। तब लाचार होकर उन्हें एक नाम मिटाकर अपना नाम अङ्कित करना पड़ा।

आदर्श दानी देश

अन्य प्रान्त की एक प्राचीन बात है। एक देहाती स्कूल में शिक्षक ने एक छात्र से फीस माँगी। बालक ने शिक्षक के समक्ष अपनी गरीबी का चित्रण किया कि नौ वर्ष की उम्र से मेरे पिता का पता नहीं, अतः मैं स्कूल की फीस नहीं दे सकता। शिक्षक ने कहा किसी समाचार पत्र में अपनी हालत प्रकाशित कर दो। शायद कोई पाठक दया कर तुम्हें सहायता दे दे। छात्र ने एक साप्ताहिक पत्र में अपनी स्थिति प्रकाशित की। समाचार छपने पर अनेक दानियों के पत्र बालक के पास आये। एक सप्ताह में तो पचास हजार पत्र आये थे। बालक का अभीष्ट सिद्ध हुआ। ऐसा देश संसार में आज भी कहीं होगा क्या ?

अनिष्ट की चेतावनी

एक महाशय को मुकद्दमे वाजी की लत थी। एक दिन उन पर पाँच हजार जुर्माना हुआ, जिससे उनके घर में चूल्हा भी नहीं जला। यह समाचार उन्होंने अपनी पत्नी से कहा। आधी रात के समय उनकी पत्नी को स्वप्न दिखाई दिया कि कुछ सैनिकों ने हमारे पति को घेर लिया है, जुर्माना का रुपया माँगते हैं, अन्यथा जेल की धमकी देते हैं। स्वप्न देखकर वह चिल्लाकर उठ बैठी और उसने देखा कि पति का शरीर ठण्डा पड़ा है। न जाने उनके प्राण पखेरू कब उड़ गये।

व्रत का फल

सुरेश एक गरीब लड़का था उसने व्रत लिया कि सूर्यदेव के दर्शन बिना भोजन नहीं करूँगा। एक दिन पानी बरसता था, बारह बज गये किन्तु सुरेश को सूर्यदेव का दर्शन नहीं हुआ। सुरेश

जंगल में पहुँचा। अचानक पानी बरसना बन्द हुआ तथा सुरेश को सूर्यदेव का दर्शन भी हुआ। वह बहुत खुश हुआ और एकदम चिल्ला उठा कि देख लिये देख लिये। निकट में कुछ चोर चोरी का माल बांट रहे थे। वे सुरेश की चिल्लाहट सुनकर डर गये कि कहीं यह हम लोगों के बारे में किसी से कुछ कह न दे। चोरों ने सुरेश को बुलाकर कहा कि तुम हमारा हाल किसी से नहीं कहना और यह एक हिस्सा तुम भी ले लो" सुरेश वह हिस्सा लेकर अपने घर गया। व्रत के प्रभाव से उसे यह फल मिला। हमें भी व्रत अटल लेना चाहिये।

परिग्रह से अशान्ति

एक साधु था। उसके पास गीता की पुस्तक थी। चूहों से पुस्तक की रक्षा के लिये उसने एक बिल्ली पाली। बिल्ली के हेतु दूध के लिए उसने एक गाय पाली। गाय की सेवा के लिये एक नौकरानी रखना पड़ी। नौकरानी की आजीविका के हेतु एक खेत रखना पड़ा। एक दिन साधु ने विचारा कि छोटी सी गीता की पोथा के कारण इतने परिग्रह का संचय करना पड़ा जो कहीं भागवत लेता तो न जाने क्या दशा होती।

गीता की पोथी लई जिसका इतना ठाट।
जो कहुं लेता भागवत, होता बारा – बाट॥

का लि दा स

कवि कालिदास राजा भोज के प्रमुख और प्रिय विद्वान् थे। अतः अन्य विद्वान् उनसे ईर्षा करते थे। कालिदास किसी विचार में मग्न थे, राजा ने पूछ दिया कि पूर्णिमा कब है? कालिदास ने सहसा कह दिया कि कल है। कालिदास को नीचा दिखाने के लिये अन्य

पण्डितों ने हठ और विसम्वाद किया कि कल चतुर्दशी है। तो भी कालिदास ने कहा कि नहीं कल पूर्णिमा ही है। राजा ने कहा कि अच्छा, बताना। कालिदास को कालिका सिद्ध थी। उसके प्रभाव से उन्होंने चतुर्दशी को पूर्ण चन्द्रमा दिखाया। राजा और सब विद्वान् दंग रह गये।

महावीर

एक समय भगवान महावीर खेलते हुए एक वृक्ष पर चढ़ गये। तब एक देव ने उनके बल की परीक्षा के लिये विशाल नाग का रूप धारण कर भयङ्कर फण फैलाकर वह वृक्ष घेर लिया। भगवान महावीर निर्भय होकर साँप के फण पर पैर रखकर नीचे उतर आये तब देव ने अपना असली भेष प्रगट कर प्रसन्न होकर भगवान का "महावीर" नाम रखा।

ब्राह्मी वा सुन्दरी

कलिकाल के दोष से भगवान ऋषभदेव के दो पुत्रियाँ पैदा हुई। उनका नाम था ब्राह्मी वा सुन्दरी। पुत्रियाँ तो भगवान की ही थीं, वे भी बुद्धिमती निकलीं। दुनियाँ को आदर्श दिखाया कि संभोग से अपना हित नहीं। आत्महित के लिये वह एक घृणित एवं बाधक कार्य है। उन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य ले लिया। विवाह नहीं कराया और आर्यिका का व्रत ले आत्मकल्याण किया। क्या स्त्री पर्याय केवल विषयवासना की पूर्ति के लिये ही है?

॥ समाप्त ॥

मुद्रक—शुभचिन्तक प्रेस, उपरैनगंज, जबलपुर (म० प्र०)

Scanned by CamScanner

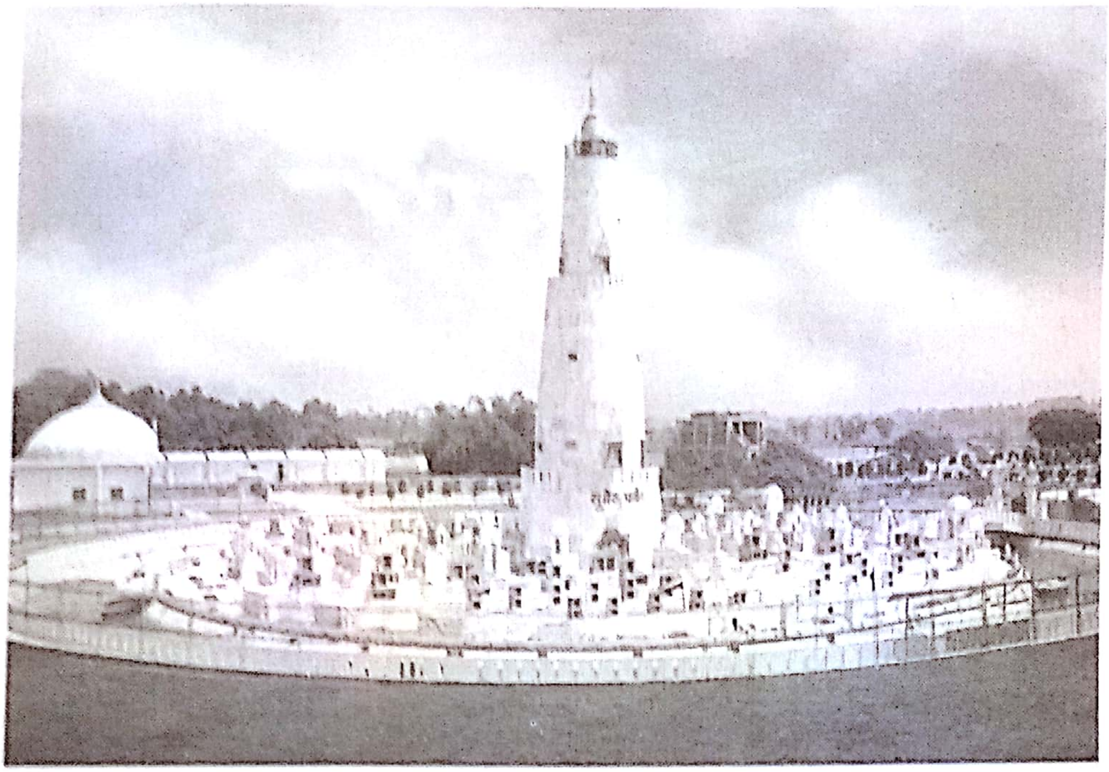

भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में निर्मित
विश्व की अद्वितीय रचना जम्बूद्वीप

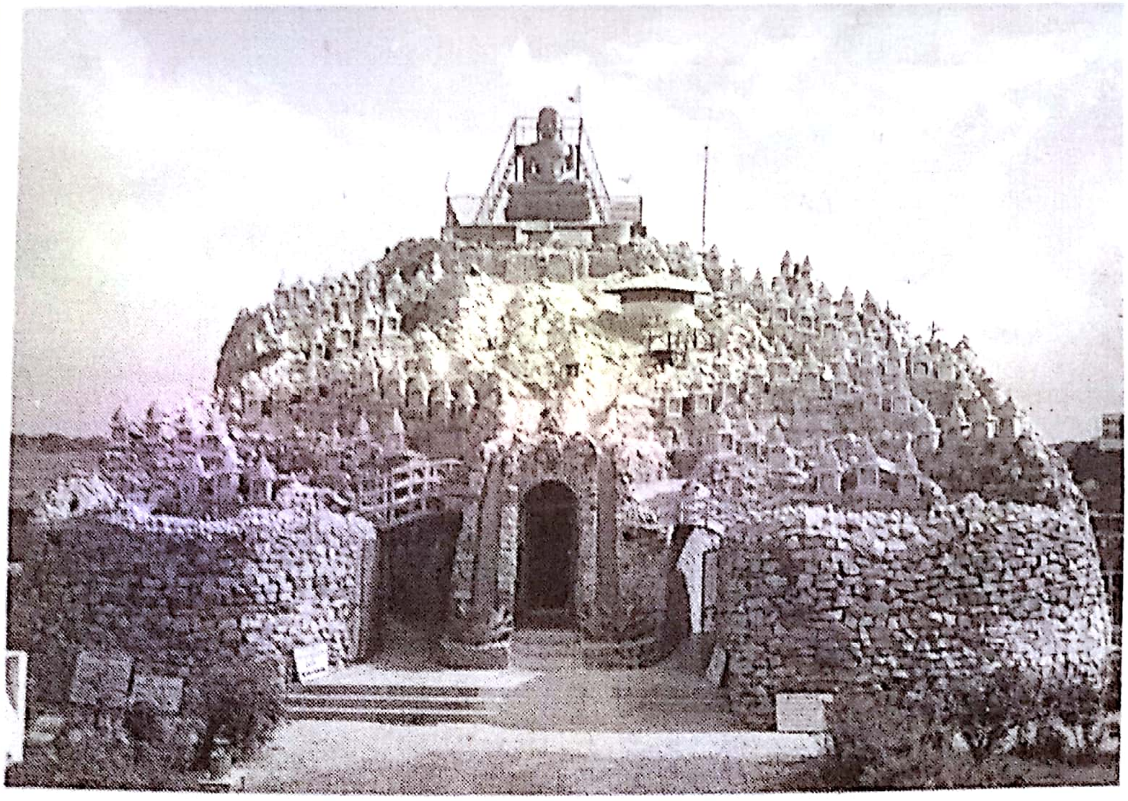

भगवान ऋषभदेव दीक्षास्थली प्रयाग-इलाहाबाद में निर्मित भव्य कैलाशपर्वत

978-93-84003-02-9

Scanned by CamScanner